संरक्षक

श्री श्रीश चन्द्र दीक्षित

मुख्य परामर्शदाता

पूर्व सांसद् व पूर्व पुलिस महानिदेशक

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल

राष्ट्रीय प्रधान

पूर्व सांसद (राज्यसभा), पूर्व पुलिस महानिदेशक

मे.ज.(से.नि.) विश्वास स. जोगलेकर

राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधान

संपादक

प्रो० सतीश चन्द्र

संपादक मंडल

डॉ. महेश चन्द्र

देवेन्द्र मित्तल, डॉ. उर्मिल गंभीर

प्रो० श्रीधर पन्त, डॉ. रामशरण गौड़

प्रकाशक व मुद्रक

देवेन्द्र मित्तल *(उपप्रधान)*

प्रकाशन स्थान

संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110022

SUBSCRIPTION RATE

Inland	:	Life Rs. 1000/-
		Annual 120/-
Overseas	:	Life US$ 100
		Annual US$ 10
Per copy	:	£1 $1.50, IRs 20

ADVERTISEMENT TARIFF

Outer Cover	:	**Rs. 15000/-**
Inner Cover	:	**Rs. 12,000/-**
Full Page	:	**Rs. 10,000/-**
Half Page	:	**Rs. 5,000/-**

Payable by MO/Bank Draft/Crossed Cheque in the name of
Sanskritik Gaurav Sansthan
Sankatmochan Aashram, Sector-6,
Ramkrishna Puram, New Delhi-110022

मुद्रण स्थान

एक्सेलप्रिन्ट, सी-36, फ्लैटिड फैक्टरीज़ कॉम्पलैक्स, झण्डेवालान्, नई दिल्ली-110 055

गौरव घोष
GAURAV GHOSH

द्विमासिक
BI-MONTHLY

वर्ष 13 अंक 1 **विषय सूची** **चैत्र-वैशाख 2068 वि. अप्रैल 2011**

संपादकीय - भ्रष्टाचार बनाम तीस्ता जावेद सीतलवाड़		- आवरण -2
हमारी उदात्त संस्कृति	***-आचार्य सत्यनारायण गोयन्का***	2
श्री सत्यसाईं बाबा ब्रह्मलीन		3
सभ्यता-संस्कृति के प्रति दुराग्रह	***-एस.शंकर***	4
शून्य प्रतिष्ठा वाला शासन	***-राजीव सचान***	5
केन्द्रीय सरकार की साख पर सवाल	***-डॉ. ज्ञान प्रकाश पिलानिया***	6
माओवादी खतरे के पीछे लश्कर का दिमाग	***-रविभूषण सिन्हा***	7
यही फर्क है हम में और उनमें		8
डर के डेरे में	***-डॉ. जयश्री जैन***	9
मोदी की राजनीतिक घेरेबंदी	***-अरविंद जयतिलक***	10
सां.गौ.सं. द्वारा पटना में आयोजित संगोष्ठी - एक रपट	***-प्रो. देवेन्द्र प्रसाद सिंह***	11
कलानौर के यवन नवाब का काला कानून - कौला पूजन	***- पं. बी.एन.मुद्गिल***	13
पाठकों के पत्र		16
कविता - नव वर्ष हर्ष वर्ष		16
Multiculturalism is doomed to fail; societies....	***-David Cameron (British P.M.)***	17
Secular India needs uniform civil code	***-Prafull Goradia***	20
God is back, but won't enter politics	***-Utpal Kumar.***	21
A history of crimes against India (A review)	***-M.V.Kamath***	23
Diary of Events, Select Articles, Book Reviews, And Post Cards		24-37

लेखों आदि में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, सम्पादक मण्डल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है

OWNER : SANSKRITIK GAURAV SANSTHAN

Phone : 26195368, 26181315 E-mail <sgsdelhi05@gmail.com>

संस्थान की वेबसाइट देखें :- <www.hindusthangaurav.com>

भ्रष्टाचार - बनाम तीस्ता जावेद सीतलवाड़

संस्कृत-हिन्दी के शब्द कोश के अनुसार 'भ्रष्ट' के अनेक अर्थ हैं जैसे-

पतित, नीचे पड़ा हुआ, (2) गिरा हुआ, (3) भटका हुआ, विचलित, (4) वियुक्त, वंचित, निष्कासित, (5) मुर्झाया हुआ, क्षीण, बर्बाद, (6) ओझल, खोया हुआ, (7) दुष्चरित्र, दूषितचरित्र

उपर्युक्त 15 अर्थों से भ्रष्टाचार=भ्रष्ट+आचार अनेक रूपों और प्रकारों में होता है।

इन दिनों यह 'भ्रष्टाचार' मुख्यत: धन-दौलत की घपलेबाज़ी, लूट, गबन, हवाला और विदेशी बैंकों में धन जमा करने के अर्थों में प्रयुक्त हो रहा है।

किन्तु पाठकगण! इस अति गहरे शब्द का अति घिनौना रूप पिछले कई वर्षों से समाज के सामने आया है, किन्तु देश-विरोधी ताकतों ने उस रूप पर पर्दा डाल दिया है जिससे महापापी, महापतित और दुष्चरित्र वाले व्यक्तियों पर आँच न आ सके।

इस प्रसंग में सुनिए - एक छद्म महामानवतावादी, महान्यायवादी और महाशान्ति देवी के कारनामों का सच्चा विवरण

उसका नाम है -तीस्ता जावेद सीतलवाड़

इसने मुंबई में सिटिज़न फॉर पीस एण्ड जस्टिस (Citizen For Peace And Justice) नाम से एक ऊँचे नाम की गैर-सरकारी संस्था बना रखी है। पर उसका पक्वान्न फीका न होकर (ऊँची दुकान, फीका पक्वान) कड़ुवा, कसैला और तीखा है -

स्मरण करा दें कि गोधरा (गुजरात) रेल स्टेशन से थोड़ा आगे श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या से साबरमती एक्सप्रेस से लौट रहे 59 कारसेवकों (महिलाओं और बच्चे) को मुसलमानों ने डिब्बे में पेट्रोल डाल कर दिनांक 27 फरवरी 2002 के दिन जीवित जला दिया था। परंतु उन्हें संतोष नहीं हुआ और पूरे गुजरात प्रदेश में निर्दोष हिन्दुओं के उत्पीड़न का ज्वार उठाने का जोरदार यत्न शुरू हुआ, जैसे सन् 1921-24 के दौरान अंग्रेज़ी शासन द्वारा तुर्की में खलीफा को हटाए जाने के बहाने से चलाए गए हिन्दुस्थान में अंग्रेज़ी शासन विरोधी आन्दोलन के विफल हो जाने के बाद देश के नगरों में विशेषत: केरल में मुसलमानों ने हिन्दुओं को मारा-काटा। कांग्रेस की विफलता के कारण हिन्दुस्थान के 5 टुकड़े हो जाने पर इस स्वाधीन भारत नाम के क्षेत्र में पिछले अनेक वर्षों के दौरान कश्मीर, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, असम में मुसलमान ऐसे कुकृत्यों के लिए और कांग्रेसी तथा सपा की भ्रष्ट सरकारें उनके संरक्षण के लिए कुख्यात हैं।

फरवरी 2002 के पश्चात् जो उत्पात गुजरात में मचा उसमें अनेक निर्दोष पुलिस अधिकारी और हिन्दू केन्द्र सरकार के विशेष अन्वेषण दल (एस.आइ.टी.) ने नाप दिए। उन्हें फँसाने और दण्डित कराने में इस तीस्ता जावेद सीतलवाड़ नामक महिला (हिन्दू नाम से) और इसकी कुख्यात संस्था झूठे हलफनामे (शपथपत्र) विभिन्न न्यायालयों में मुसलमान महिलाओं और पुरुषों द्वारा दायर कराती रही।

देश के उत्तर-पूर्वांचल में तीस्ता नामक एक बड़ी नदी है जो जीवनदायिनी है, किन्तु यह विचाराधीन तीस्ता एक डाकिनी है। **21.4.2011 के 'द पायनियर' दैनिक (दिल्ली) में छपी रपट के अनुसार -**

वडोदरा में घटित बेस्ट बेकरी काण्ड में आग से जले 14 लोगों के जलने की घटना की साक्षी के नाते **शेख यास्मीन बानो** ने 9 संदिग्धों की पहचान की थी, किन्तु अब उसने खुलासा किया है कि तीस्ता जावेद के तत्कालीन सहायक रईस खां के उकसाने पर मैंने मुंबई जाकर सुनवाई कर रहे न्यायालय में झूठी गवाही दी थी और मुंबई में उसे (यास्मीन बानो को) शाही सुविधाएं देते हुए साक्ष्य के पश्चात् अहमदाबाद भगा दिया। तीस्ता जावेद की कृपा से अब वह भूखों मर रही है। यास्मीन बानो ने बताया कि इस झूठी साक्षी की बात उसने अनेक उच्च-स्तरीय हल्कों जैसे भारत के मुख्य न्यायमूर्ति आदि को लिखकर दी किन्तु तीस्ता जावेद सीतलवाड़ मज़े में है क्योंकि उसका कुछ नहीं बिगड़ा। तीस्ता के भ्रष्टाचार में सीधे जुड़े उसके निकटतम सहयोगी **रईस खां** ने बताया है, देखिए- द पायनियर, दिल्ली, दिनांक 7.9.2010

क. तीस्ता सीतलवाड़ ने सब शपथ पत्र अपने मुंबई स्थित कार्यालय में तैयार कराकर रईस खां के माध्यम से गुजरात में हुए दंगों से पीड़ितों के हस्ताक्षर कराए थे और वह (रईस खां) नोटरी से उन्हें (शपथ पत्रों को) अभिप्रमाणित कराता था, किन्तु वे शपथ पत्र कभी किसी शिकायतकर्ता/साक्षी को नहीं दिए गए (तीस्ता सीतलवाड़ का कठोर नियंत्रण)। उन झूठे साक्षियों को प्रत्येक को एक लाख रुपये दिए गए जो भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की राहत निधि से दिए गए (देश विरोधी कार्य करने की छूट के कारण ही ये कम्युनिस्ट पार्टियां अपना नाम भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी नहीं लिखती अपितु भारत की कम्युनिस्ट पार्टी लिखती हैं। तीस्ता जी की अठखेलियां अभी शेष हैं।

दिनांक 7.12.2010 के 'द पायनियर' दिल्ली के अनुसार -

महेसाणा जिले के सरदारपुरा में 29 लोग मारे बताए गए हैं। तीस्ता जावेद सीतलवाड़ ने इस मामले में भी (रईस खां के अनुसार) सब साक्षियों के शपथ पत्र मुंबई में अपने कार्यालय में जाली बनाए थे, जैसा कि उसने (तीस्ता ने) नरोडा गाम, अहमदाबाद मामले में किया था।

सत्र न्यायाधीश (सेशन्स जज) अहमदाबाद न्यायालय ने झूठ शपथ पत्र बनाने के लिए आरोप में तीस्ता के तथा रईस खां आदि के विरुद्ध प्रथम सूचना रपट (एफ.आई.आर.) दर्ज करने के आदेश दिए हैं। उल्लेखनीय है कि कुछ साक्षियों ने उनके द्वारा (उनकी तरफ से) दायर शपथ पत्रों की इबारत की जानकारी से इन्कार किया है।

वाह तीस्ता - आपकी बहादुरी बेमिसाल है। आपने (**'हिन्दू वायस' मासिक, जनवरी 2011 पृष्ठ-27, मुंबई**) जिनेवा में स्थित मानव अधिकार आयोग को (अंतर्राष्ट्रीय एजेन्सी) को 5 अक्टूबर और 7 अक्टूबर 2010 को दो पत्र लिखकर गोधरा दंगों के चालू मामलों के

शेष भाग पृष्ठ 3 पर

गौरव घोष

संगठन में ही शक्ति है।

Gaurav Ghosh

हमारी उदात्त संस्कृति

–आचार्य सत्यनारायण गोयन्का

सभ्यता–संस्कृति के प्रति दुराग्रह

–एस.शंकर

शून्य प्रतिष्ठा वाला शासन

–राजीव सचान

केन्द्रीय सरकार की साख पर सवाल

–डॉ. ज्ञान प्रकाश पिलानिया

डर के डेरे में

–डॉ. जयश्री जैन

मोदी की राजनीतिक घेरेबंदी

–अरविंद जयतिलक

सांस्कृतिक गौरव संस्थान द्वारा पटना में आयोजित संगोष्ठी – एक रपट

– प्रो. देवेन्द्र प्रसाद सिंह

कलानौर के यवन नवाब का काला कानून – कौला पूजन

– पं. बी.एन.मुद्‌गिल

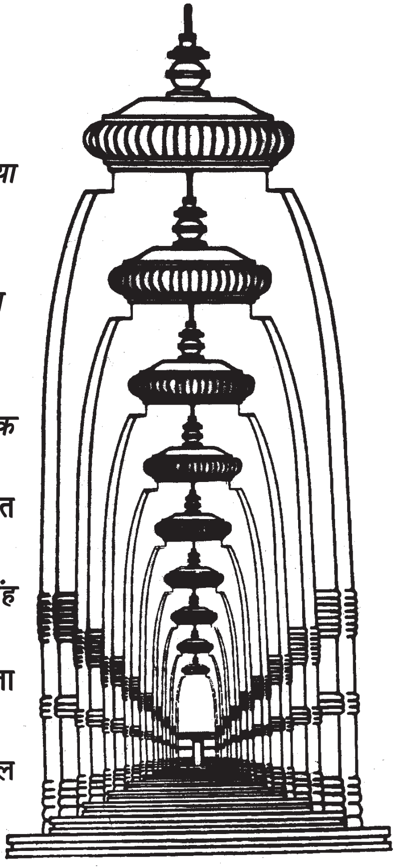

Multiculturalism is doomed to fail; societies need a national identity

-David Cameron (British P.M.)

Secular India needs uniform civil code

-Prafull Goradia

God is back, but won’t enter politics

-Utpal Kumar

A history of crimes against India (A review)

-M V Kamath

Diary of Events, Select Articles Book Reviews and Post cards

“धर्मेण हीना: पशुभि: समाना:”

चैत्र–वैशाख 2068 वि. युगाब्द 5113 अप्रैल 2011	द्विमासिक **सांस्कृतिक गौरव संस्थान पत्रिका**	**वर्ष 13** **अंक 1**

हमारी उदात्त संस्कृति

डॉ. सत्यनारायण गोयन्का, विपश्यनाचार्य

किसी ने मुझे विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्री अशोक सिंहल जी द्वारा लिखित पुस्तक 'श्रीमद्भगवतगीता ही आदि मनुस्मृति' की एक प्रति भेजी। पढ़ कर मन आल्हादित हो उठा। आजकल की प्रचलित मनुस्मृति को उनके द्वारा अस्वीकृत किया गया, यही अपने आपमें बहुत महत्वपूर्ण थी।

सचमुच 'मनुस्मृति' ही एक पुस्तक है, जिसके कारण भारत के दो बड़े समुदायों में इतना बड़ी कटुतापूर्ण विग्रह उठ खड़ा हुआ, जिससे देश की बहुत बड़ी हानि हुई। इसके कारण ही भारतरत्न बाबासाहेब अम्बेडकर को इस पुस्तक को सार्वजनिक रूप से जलाने का निर्णय लेना पड़ा।

श्री सिंहल जी द्वारा वर्तमान मनुस्मृति को नकारा जाना ही मेरे लिए उल्लास का कारण बना। उनकी उपरोक्त पुस्तक पढ़कर मेरे निकट संपर्क में आने वाले 'विश्व हिन्दू परिषद' के सहसचिव (अब उपाध्यक्ष) विपश्यी बालकृष्ण नायक को मैंने जो पत्र लिखा, उसका मुख्य अंश इस प्रकार है-

लोक-प्रचलित 'मनुस्मृति' ने हमारे समाज में ऊँच-नीच का जो अमानुषिक, अनैतिक और अधार्मिक विभाजन का गर्हित विधान प्रस्तुत किया, उसे मन-ही-मन गलत समझते हुए भी अपने यहाँ का कोई नेता खुल कर इसका विरोध नहीं कर सका। कम से कम ऐसा मेरे देखने में तो नहीं आया, बल्कि अपने यहाँ के एक शीर्षस्थ नेता ने तो इसे लोगों की भावना का प्रतीक बताया और इस प्रकार इसे न्यायपूर्ण और मान्य सिद्ध करना चाहा, जो कि मुझे अत्यंत अनुचित ही नहीं, दु:खद प्रतीत हुआ। **श्री अशोक सिंहल जी ने इस दिशा में सही कदम उठाया है और मौजूदा मनुस्मृति को गलत साबित कर, समाज-कल्याण का अत्यंत प्रशंसनीय काम किया है।**

किसी विशिष्ट जाति की माता की कोख से जन्म लेने मात्र से किसी व्यक्ति को उच्च और महान मान कर पूजें, भले वह तमोगुणी हो और निकृष्टकर्मी हो और किसी अन्य जाति की मां की कोख से जन्म लेने मात्र से किसी व्यक्ति को नीच और अस्पृश्य मानें, भले वह सतोगुणी हो और उत्कृष्टकर्मी हो। यह विचारधारा हमारी गौरवमयी उदात्त मानवी संस्कृति की धवल विमल चादर पर ऐसी कलंक-कालिमा है, जो किसी भी राष्ट्रप्रेमी का सिर लज्जा से नीचा करती है। इस कलंक-कालिमा को दूर किए बिना हम अपना सिर ऊँचा नहीं उठा सकते।

यह कितनी अमानुषिक विचारधारा है कि किसी पालतू कुत्ते, बिल्ली, गाय, बैल और घोड़े आदि पशु को अथवा तोते, मैना आदि पक्षी को छू कर, सहला कर, पुचकार कर, थपथपा कर हम अपवित्र नहीं हो जाते, परन्तु नहा-धो कर स्वच्छ हुए और सदाचार का जीवन जीते हुए किसी मानवपुत्र को छूने से ही नहीं, उसकी छाया पड़ने से भी हम अपवित्र हो जाते हैं। इन पशु-पक्षियों के प्रवेश से हमारे मंदिर, देवालय अपवित्र नहीं हो जाते परन्तु एक स्वच्छ मानव पुत्र के प्रवेश से अपवित्र हो जाते हैं। यह कैसी विडंबनाभरी विकृत मानसिकता है। इसके रहते हम कैसे गर्व कर सकते हैं अपनी गौरवमयी उदात्त संस्कृति पर।

इसी प्रकार राष्ट्रहित के लिए उचित यही है कि आधुनिक काल में प्रचलित मनुस्मृति के प्रकाशन और वितरण पर रोक लगा दी जाए और अपने धर्म-ग्रंथों में जहाँ-जहाँ जात-पात को, ऊँच-नीच को, छूत-अछूत को बढ़ावा देने का वर्णन है अथवा जो भी अन्य अशोभनीय धर्मविरोधी वर्णन हैं, उन्हें क्षेपक कह कर निकाल दिया जाए। निकाल न सके तो आम जनता तक यह संदेश तो पहुँचे कि हमारे धर्म-ग्रंथों में यह जो अनुचित बातें आई हैं, वे सब क्षेपक हैं। हमें मान्य नहीं है। **श्री सिंहल जी ने बिल्कुल ठीक लिखा है कि पुष्यमित्र शुंग के शासन काल में तथा तत्पश्चात, धर्म के नाम पर ऐसे साहित्य की रचना हुई जो हमारी गौरवमयी संस्कृति के लिए शोभनीय नहीं है।** श्री सिंहल जी की पुस्तक पढ़ कर मेरे में आह्लाद उमड़ा उसका कारण यही था कि हमारे देश के एक प्रतिष्ठित नेता द्वारा किसी गलत मान्यता को सुधारने की सही प्रकार की पहल तो हुई। मैं यह भी खूब समझता हूँ कि कुछ कट्टरपंथी लोग उनका विरोध भी करेंगे। **ऐसे विरोध का सामना श्री सिंहल जी जैसा सबल नेता ही कर सकता है।** समाज व राष्ट्र को जोड़े रखने के लिए इस प्रकार के अन्य कई लोकहितकारी कदम उठाने आवश्यक हैं। **इस दिशा में यह जो महत्वूपर्ण कदम उठा है वह अत्यंत सराहनीय है।** इस कल्याणकारी पहल को बढ़ावा मिले, इस निमित्त मेरी प्रबल मंगल कामना है, शुभाशीष है।

'नई दुनिया' इन्दौर, दिनांक 27 मार्च 2011 से साभार

अर्थमिद् वा उ अर्थिन आ जाया युवते पतिम्

तुञ्जाते वृण्यं पय: परिदाय रसं दुहे वितं त्तं अस्य रोदसी।

हर व्यक्ति को वह वस्तु अवश्य मिलती है जिसे वह वास्तव में पाना चाहता है और जिसके लिए वह पूर्ण निष्ठा तथा धैर्य से पाने को जुटा रहता है।

ऋग्वेद 1-105-2

(श्री सुरेन्द्र पटेल; राज्यसभा सांसद् की पुस्तक 'वेदाज़' तापस फाउंडेशन, श्रीलेखा भवन, पालड़ी ग्राम अहमदाबाद, से साभार)

श्री सत्य साईं बाबा ब्रह्मलीन

श्री सत्य साईं बाबा का जन्म 23 नवम्बर 1926 सोमवार को ब्रह्ममुहूर्त में हुआ था। वे आन्ध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले के अति दूरस्थ और अल्पविकसित गाँव पुट्टापर्थी में जन्मे थे। वे पिता पेदू वेंकप्पाराजू एवं मां ईश्वराम्मा की आठवीं संतान थे। कहते हैं कि जिस क्षण नवजात शिशु के रूप में श्री सत्य ने जन्म लिया, उस समय घर के सभी वाद्ययंत्र स्वत: बजने लगे और एक रहस्यमय नाग (सर्प) बिस्तर के नीचे से फन निकालकर छाया करता पाया गया था।

उनकी माता द्वारा सत्यनारायण भगवान की पूजा का प्रसाद ग्रहण करने के बाद शिशु का जन्म हुआ था, अत: नवजात का नाम सत्यनारायण रखा गया। सत्यनारायण (सत्य) की प्रारंभिक शिक्षा पुट्टापर्थी के प्राइमरी स्कूल में हुई थी। आठ वर्ष की अल्प आयु से ही सत्य ने सुंदर भजनों की रचना शुरू की।

वे बचपन से ही प्रतिभासंपन्न थे। चित्रावती के किनारे ऊँचे टीले पर स्थित इमली के पेड़ से साथियों की मांग पर विभिन्न प्रकार के फल व मिठाइयां सृजित करते थे। यह इमली का वृक्ष आज भी है।

23 मई 1940 को 14 वर्ष की आयु में सत्या (बाबा) ने अपने अवतार होने का उद्घोष किया। उन्होंने कहा **मैं शिव शक्ति स्वरूप, शिर्डी साईं का अवतार हूँ।** इसके प्रमाणस्वरूप उन्होंने मुट्ठीभर चमेली के फूलों को हवा में उछाल दिया, जिनसे धरती पर गिरते ही तेलुगु अक्षरों में 'साईं बाबा' लिख गया।

20 अक्टूबर 1940 को उन्होंने अपना घर छोड़ दिया और घोषणा की कि भक्तों की पुकार उन्हें बुला रही है और उनका मुख्य कार्य उनकी प्रतीक्षा कर रहा है।

सत्य साईं ने पुट्टापर्थी में प्रशांति निलयम् आश्रम (प्रशांत निलयम का अर्थ है शांति प्रदान करने वाला स्थान) की स्थापना की, उसमें प्रतिदिन सत्य साईं बाबा के भक्त दूर-दूर से उनका आशीर्वाद लेने आते हैं। उसकी स्थापना और उद्घाटन बाबा के 25वें जन्मदिन पर 1950 में उन्हीं के द्वारा किया गया। वर्तमान में यह आश्रम अध्यात्मिक ज्ञान-जागृति केन्द्र के रूप में विकसित है।

यहाँ देश ही नहीं विश्वभर के 166 देशों से लाखों की संख्या में विभिन्न धर्मों और मतों को मानने वाले सत्य साईं बाबा के दर्शन करने आते थे। उनके प्रति आस्था का प्रवाह इतना अधिक था कि देश-विदेश में बसे कई साईं भक्तों के घरों में देवी-देवताओं की मूर्तियों तथा चित्रों से विभूति, कुमकुम, शहद, रोली, शिवलिंग आदि प्रकट होते देखे गए हैं।

साईं बाबा ने बहुत-सी शिक्षण संस्थाएं, चिकित्सालय तथा अन्य मानव सेवा के काम खड़े किए। प्रशांत निलयम् में विश्वस्तरीय चिकित्सालय तथा अनुसंधान केन्द्र हैं।

साईं बाबा का कहना था कि व्यक्ति चाहे किसी भी मत को माने पर निष्ठा के साथ अपने धर्म का पालन करे, दूसरे धर्म का सम्मान करे। अलग-अलग नाम होने पर भी परमात्मा एक है। अपने जीवन में अच्छे व्यवहार और नैतिकता को कठोरता से पालन करना चाहिए। सच्चा भक्त वही है जो भगवान की प्रसन्नता में अपनी प्रसन्नता मानता है।

ऐसे महामानव को हमारी श्रद्धांजलि।

गौरव घोष परिवार

विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष श्री अशोक जी सिंहल का शोक सन्देश

भगवान श्री सत्य साईं बाबा का ब्रह्मलीन होना अत्यंत दु:खदायी घटना है। भगवान की रिक्तता की कभी कल्पना भी नहीं की थी। यह अकल्पनीय आघात है।

मैंने इनके विराट रूप का दर्शन किया है। उनसे अत्यंत निकट सम्बन्ध होने के कारण उनके भगवद्-अवतार और धर्म-संस्थापना कार्य को लगातार अनुभव करता आया हूँ। मेरा विश्वास है कि भगवान अब यह कार्य अदृश्य रूप से करते रहेंगे।

'हिन्दू चेतना' (पाक्षिक) 1 से 15 मई 2011, झण्डेवाला देवी मंदिर, नई दिल्ली से साभार

संपादकीय - 'भ्रष्टाचार बनाम तीस्ता सीतलवाड़' कवर पृष्ठ 2 का शेष भाग

सम्बन्ध में अपनी शिकायतें भेजीं। इस प्रकार देश की न्यायपालिका की विदेशों में बदनामी करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। उच्चतम न्यायालय की पीठ ने इस हिन्दुस्थान विरोधी महिला को फटकार लगाई (3 दिसम्बर 2010 की हिन्दू वायस में प्रकाशित रपट)।

आप धन्य हैं तीस्ता जी। आपने अपने देशभक्त पिता को भी धन्य कर दिया और उनकी देशभक्ति का जनाज़ा निकाल दिया। आपने हिन्दू समाज को कलंकित कर दिया। वैसे आपने नाम भी बदला जो अब है - **'तीस्ता जावेद सीतलवाड़'** क्योंकि मुसलमान से निकाह करके आप उनके लिए काम कर रही हैं। यद्यपि आप जिनकी थी, उनकी न हो सकी तो मुसलमानों की क्या होंगी?

सुझाव है कि आप मक्कारी, धूर्तता, जालसाज़ी, कृतघ्नता, घपलेबाज़ी, षड्यंत्र आदि के प्रशिक्षण के लिए अकादमी खोल लें तो बहुत सफल रहेंगी। सिटिज़न्स फॉर जस्टिस एण्ड पीस का नाम बदलकर सिटिज़न्स फॉर जिग्गरी (Jiggery) एण्ड प्लॉय (Ploy) रखा जा सकता है।

संपादक मण्डल

सभ्यता-संस्कृति के प्रति दुराग्रह

*-एस.शंकर**

पिछले दिनों एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय में किसी विषय का पाठ्यक्रम तैयार करने पर मीटिंग हो रही थी। उसमें एक बिन्दु था-भारत में मानवतावादी परंपरा। एक प्रोफेसर ने प्रस्तावित किया कि इसके अंतर्गत लिखा जाए, 'बौद्ध, जैन, इस्लामी तथा सूफी विचार'। दूसरे प्रोफसर ने चिंता जताई, 'तब तो हिन्दू भी लिखना पड़ेगा?' वह हिन्दू जोड़ना नहीं चाहते थे। तब प्रस्तावक ने उत्तर दिया, 'हिन्दू धर्म या विचार जैसी कोई चीज़ नहीं थी।' दूसरे प्रोफेसर ने फिर आशंका व्यक्त की, 'मगर बौद्ध धर्म से पहले भारत में रहे चिंतन-विचार का भी उल्लेख करना होगा?' पहले प्रोफेसर ने बेफिक्री से कहा, 'अच्छा तो लिख दो, अर्ली इंडिया।' इस प्रकार, भारत में मानवतावादी परंपरा का क्रम इस प्रकार लिखा गया, **'अर्ली इंडिया, बुद्धिस्ट, जैन, इस्लामिक एंड सूफी।' अर्थात, जो स्थान हिन्दू या सनातन धर्म को देना था वहाँ काल-संबंधी नाम दिया गया,** जबकि दूसरे धर्मो वाले स्थान में धर्म-संबंधी नाम ही दिए गए। वहाँ मेडिवल, लेटर-मेडिवल या प्री-मॉर्डन आदि लिखकर 'अर्ली इंडिया' वाला काल-क्रम नहीं रखा गया। अंतत: वही पाठ्यक्रम बन गया। पाठ्यक्रम समिति में देश भर से शामिल एक दर्जन प्रोफेसरों को इसमें कुछ भी अटपटा या दुराग्रही न लगा। भारत में हिन्दू-विरोधी बौद्धिकता के दबदबे का यह नमूना आज का है।

आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि आज भारत के उच्च शिक्षार्थी भी अपने ही देश के दर्शन, इतिहास और संस्कृति से निपट अनजान हैं। यह इतने लंबे समय से चल रहा है कि बड़ी कुर्सियों पर विराजमान अधिकारी, बुद्धिजीवी और प्रोफेसर भी नितांत विखंडित दृष्टि रखते हैं। प्राय: विद्यार्थियों को इतिहास पढ़ाने के बजाय उनसे इतिहास छिपाया जाता है, ताकि भोले छात्रों को एक विशेष मतवाद में दीक्षित किया जा सके। उदाहरण के लिए एक इतिहास पुस्तक में बिना कोई जानकारी दिए वेदों के प्रति दुर्भावना भरी गई है। **पुस्तक में जगह-जगह लिखा है, 'वेद कर्मकांडीय पुस्तक है', तो कहीं यह भी कि 'वेदों के प्रभुत्व को चुनौती दी गई।' मानो, वेद कोई दुष्ट सरदार थे। इसी पुस्तक के एक अध्याय का शीर्षक है, 'महाभारत का आलोचनात्मक अध्ययन' जिसमें चुन-चुन कर ऐसी कथाएं विचित्र भाव से दी गई हैं जिससे महाभारत का कुछ ज्ञान नहीं होता। केवल उसके प्रमुख पात्रों, तत्कालीन समाज और विचारों के प्रति वितृष्णा बनती है।**

भारतीय सभ्यता-संस्कृति के प्रति ऐसे इतिहासकारों का दुराग्रह तब स्पष्ट होता है जब वे अरब-इस्लाम का इतिहास लिखते हैं। **उदाहरण के लिए विश्व इतिहास की एक पाठ्य-पुस्तक में एक-तिहाई सामग्री बाकायदा इस्लाम और उसके विस्तार पर दी गई है। श्रद्धा-प्रशंसा से ओत-प्रोत उस भारी भरकम सामग्री में आरंभ में ही साफ लिखा है कि हमारी समझ पैगंबर की जीवनी, कुरान और हदीस पर आधारित है।** अर्थात, जिस रूप में इस्लामी किताबें अपने को पेश करती हैं, प्रोफसरों ने उसे आदर एवं अतिरिक्त अनुशंसा भाव से विद्यार्थियों तक पहुँचा दिया जाता है। कहीं उस 'आलोचनात्मक अध्ययन' का नामो-निशान नहीं, जो महाभारत के लिए लिख कर घोषित किया था। 'वेदों के प्रभुत्व' की तरह कहीं कुरान के प्रभुत्व पर आक्रोश प्रेरित करने का जतन भी नहीं। उलटे प्रोफेसरों ने दर्जनों तस्वीरों, रेखाचित्रों, मानचित्रों के माध्यम से इस्लाम की खूबियों, महानता और शान का इतना लंबा बखान किया है कि लगता है कि **यह विश्व इतिहास की पाठ्य-पुस्तक नहीं, बल्कि किसी को इस्लाम में मतांतरित करने के लिए लिखा गया तबलीगी साहित्य हो। इतिहासकारों की यह पूरी श्रद्धा-भंगिमा बाबर के बारे में इस उक्ति से झलक सकती है कि उसने भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी।** मानो किसी बगीचे या पुस्तकालय की नींव रखने का कार्य किया हो। पुस्तक में इस्लामी साम्राज्य विस्तार के लिए विभिन्न देशों पर चढ़ाई, सदियों तक हुए नरसंहार, जिहाद, जबरन मतांतरण आदि मोटी बातों तक का उल्लेख नहीं है।

ये प्रोफेसर कोई चुने हुए अपवाद नहीं है। भारत में समाज विज्ञान और मानविकी विषयों में इसी बौद्धिकता का एकाधिकार है। इसीलिए जो प्रोफेसर हिन्दू ग्रंथों, शास्त्रों, नीतिकारों, राज्य-व्यवस्था आदि पर शत्रुता भाव से लिखते हैं, वही इस्लामी किताबों, विचारों, पैगम्बर, उनके युद्धो, प्रसंगों, राज्य व्यवस्था, रिवाज़ों और साम्राज्य विस्तार आदि पर लिखते हुए एकदम उलट कर श्रद्धा और स्वीकृति की मूर्ति में बदल जाते हैं। नि:संदेह यह कोई विद्वत लेखन नहीं कि दो प्रकार के ग्रंथों, विश्वासों, राज्य-व्यवस्थाओं के बारे में दो विपरीत मानदंड अपनाए जाएं।

समाज विज्ञान शिक्षा को मतवादी प्रचार बना देने में राजनीति की बड़ी भूमिका है। इसलिए बुद्धिजीवी खुले विचार-विमर्श और मुक्त चिंतन के कट्टर विरोधी रहे हैं। वे देशभक्तिपूर्ण या हिन्दू भाव से लिखे अच्छे लेखन को भी निंदित करते हैं। उनमें स्वदेशी भाव की पुस्तकों, लेखों के प्रति तीखी नाराज़गी रहती है। वे मौलिक शोध या लेखन से अधिक 'तुम्हारी पॉलिटिक्स क्या है, पार्टनर' वाली घातक मानसिकता में जीते हैं। कोई लेखन, विश्लेषण उन्हें नहीं रुचता, यदि वह उनके लिए राजनीति संगत न हो।

इस चिंताजनक स्थिति को पहचानना और परखना ज़रूरी है। हमारे देश में प्रचलित समाज विज्ञान पुस्तकों की मूल्यवत्ता तुरंत समझ में आ जाएगी, यदि दूसरे उन्नत देशों, समाजों की इतिहास, राजनीति संबंधी पाठ्य-पुस्तकों से इसकी तुलना करें। तब साफ झलकेगा कि **हमारे देश का समाज विज्ञान मुख्यत: अपने ही देश के धर्म, सभ्यता, संस्कृति के प्रति वितृष्णा भरने का काम करता है। हर हाल में, समाज विज्ञान और मानविकी विषयों की शिक्षा को सचमुच हितकारी बनाने के लिए हिन्दू विरोधी मतवाद की गिरफ्त से मुक्त करना आवश्यक है।**

***(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार हैं)**

'दैनिक जागरण', दिल्ली, दिनांक 21 फरवरी 2011 से साभार

शून्य प्रतिष्ठा वाला शासन

*-राजीव सचान**

पीजे थॉमस को केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त नियुक्त करने के मामले में प्रधानमंत्री द्वारा अपनी जिम्मेदारी स्वीकार कर लेने के बाद सत्तापक्ष के साथ-साथ विपक्ष का रवैया 'अंत भला तो सब भला' वाला है। यह तब है कि जब प्रधानमंत्री ने न तो क्षमा मांगी और न ही उन परिस्थितियों को उजागर किया जिनके तहत विपक्ष की आपत्ति के बावजूद थॉमस को सीवीसी बनाया गया। इस मामले में प्रधानमंत्री ने जिस गोलमोल तरीके से कथित तौर पर अपनी गलती मानी वह न तो उनके बड़प्पन का परिचायक कही जा सकती और न ही उनके प्रायश्चित्त का। सच्चाई यह है कि उनके सामने अपनी जिम्मेदारी कबूल करने के अलावा और कोई उपाय नहीं था, क्योंकि वह न तो उच्चतम न्यायालय के निर्णय को चुनौती देने की स्थिति में थे और न ही अपनी गलती किसी और पर मढ़ने की स्थिति में। थॉमस की नियुक्ति के मामले में उच्चतम न्यायालय का क्या निर्णय होगा, यह दीवार पर लिखी इबारत की तरह साफ था। बावजूद इसके प्रधानमंत्री और उनकी पूरी सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी रही। यदि तभी गलती मान ली जाती जब सरकार को उच्चतम न्यायालय को जवाब देते नहीं बन रहा था तो उसकी प्रतिष्ठा इस तरह ध्वस्त नहीं होती। **कुछ समय पहले प्रधानमंत्री ने स्वयं यह माना था कि घपलों-घोटालों के कारण केन्द्र सरकार जनता की नज़रों से उतर रही है, लेकिन अब तो वह स्वयं भी जनता की नज़रों से उतर चुके हैं।** वह प्रधानमंत्री पद पर आसीन रह सकते हैं, लेकिन उनकी प्रतिष्ठा बहाल होने के कहीं कोई आसार नहीं है।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को पिछले सात वर्षों का कार्यकाल और उनकी कार्यशैली इसकी गवाह देती है कि वह न तो भ्रष्ट तत्वों के खिलाफ कार्रवाई करने में सक्षम हैं और न ही उस व्यवस्था को सुधारने का इरादा रखते हैं जो भ्रष्ट तत्वों को संरक्षण दे रही है। जब बोफोर्स दलाल ओट्टावियो क्वात्रोची के लंदन स्थित खातों से पाबंदी हटाई गई थी तो पूरी सरकार ने ऐसा जाहिर किया था कि उसे तो पता ही नहीं कि यह काम किसने किया? जब संसद में हंगामा मचा तो प्रधानमंत्री ने आश्वासन दिया कि वह सच्चाई का पता लगाएंगे और दोषियों को दंडित करेंगे। ऐसा आज तक नहीं हुआ और उल्टे खुद प्रधानमंत्री ने कहा कि बिना सबूत इस तरह किसी (अर्थात् क्वात्रोची) को परेशान करने से देश की बदनामी होती है। हालांकि अब कांग्रेस और केन्द्र सरकार सगर्व यह कह सकती है कि देखिए अब तो अदालत ने भी एक खूबसूरत मोड़ का हवाला देकर क्वात्रोची के खिलाफ मामला बंद करने को कह दिया है, लेकिन सच्चाई यह है कि यह बेहद बदसूरत और शर्मिंदा करने वाला मोड़ है। **भारतीय शासन प्रणाली को इससे शर्मसार होना चाहिए कि दलाली लेने-देने के पुख्ता सबूत होने के बावजूद दलालों के खिलाफ कार्रवाई नहीं हो सकी।**

मनमोहन सिंह ने सच्चाई की तह तक पहुँचने का आश्वासन तब दिया था जब उनकी सरकार के विश्वास मत प्रस्ताव के समय संसद में नोटों के बंडल दिखाए गए थे। इस मामले की सच्चाई अभी भी दफन है और उसके सामने आने के बारे में सोचा भी नहीं जाना चाहिए।

इसके बाद मनमोहन सिंह का दूसरा कार्यकाल आया और घोटालों की झड़ी लग गई। हालांकि वह खुद यह जान और देख रहे थे कि राष्ट्रमंडल खेलों की तैयारियों के नाम पर किस्म-किस्म के घोटाले हो रहे हैं, लेकिन किन्हीं अज्ञात कारणों से वह मौन बने रहे हैं। अब उनके तहत काम करने वाली सीबीआई जांच के नाम पर नौटंकी कर रही है। परिणाम यह है कि सुरेश कलमाड़ी सीना ठोककर कह रहे हैं कि मैंने कुछ गलत नहीं किया। राष्ट्रमंडल खेल खत्म होने के बाद कम से कम 70 ऐसी खबरें आ चुकी हैं कि जो कलमाड़ी के काले कारनामों की कहानी कहती हैं, लेकिन कोई नहीं जानता कि उनकी गिरफ्तारी कब होगी? कलमाड़ी के साथ सीबीआई का व्यवहार यह बताता है कि **इस देश में दो कानून हैं-एक कलमाड़ी जैसे लोगों के लिए और दूसरे आम आदमी के लिए।** अब इसमें संदेह नहीं कि यदि प्रधानमंत्री का वश चलता तो 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले की जांच तो दूर रही, उनकी सरकार यह भी नहीं मानती कि कोई घोटाला हुआ है। **आखिर यह तथ्य है कि खुद प्रधानमंत्री ने ए राजा को क्लीनचिट दी थी।** यह भी स्पष्ट है कि यदि केन्द्र सरकार का वश चलता तो वह काले धन के मामले को महज टैक्स चोरी का मामला बताकर देश को गुमराह करती रहती। यह लगभग तय माना चाहिए कि केन्द्र सरकार बालकृष्णन के मामले में तब तक मौन साधे रहेगी जब तक उसे चुप्पी तोड़ने के लिए विवश नहीं किया जाएगा।

यह देखना कितना दयनीय है कि कथित तौर पर नेक इरादों वाले प्रधानमंत्री ने उच्च पदों पर कैसे-कैसे लोगों को नियुक्त किया? बीएस लाली, पीजे थॉमस और केजी बालकृष्णन तो सिर्फ वे नाम हैं जो किन्हीं कारणों से सतह पर आ गए। इस पर भी गौर करें कि किस तरह नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक को धमकाने और लांछित करने की कोशिश की गई और किस प्रकार यह कहकर उच्चतम न्यायालय को भी दबाव में लाने की कोशिश की गई कि उसे नीतिगत मामलों में दखल नहीं देना चाहिए। जिस सीबीआई के कारण प्रधानमंत्री पर न जाने कितनी बार संसद में और संसद के बाहर लांछन लगे उसे वास्तव में स्वायत्त बनाने के बारे में कहीं कोई हलचल नहीं हो रही है। भले ही प्रधानमंत्री समय-समय पर शासन तंत्र को सक्षम और पारदर्शी बनाने की आवश्यकता पर बल देते रहते हों, लेकिन तथ्य यह है कि खुद उनकी सरकार बड़े जतन से दूसरे प्रशासनिक सुधार आयोग की रपट दबाए हुए है। आखिर जब शासन का मुखिया ही प्रशासनिक सुधार आयोग की रपट दबाए बैठा हो तब फिर शासन में सुधार की उम्मीद कैसे की जा सकती है? इससे भी बड़ा सवाल यह है कि जिस प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा तार-तार हो उसकी सरकार प्रतिष्ठित कैसे हो सकती है?

***(लेखक दैनिक जागरण में एसोसिएट एडीटर हैं)**

'दैनिक जागरण' दिल्ली, दिनांक 8 मार्च 2011 से साभार

केन्द्रीय सरकार की साख पर सवाल?

डॉ. ज्ञान प्रकाश पिलानिया

आज, भ्रष्टाचार देश में आम हो गया है। केन्द्रीय सरकार पिछले कुछ दिनों से लगातार भ्रष्टाचार और घोटालों को लेकर घिरती चली आ रही है। भ्रष्टाचार के घोटालों के कारण केन्द्र की सरकार छवि गिरती देख, भ्रष्टाचार से निपटने के लिए कहीं कहीं हाथ-पैर भी मार रही है, तो कभी-कभी अपने बचाव में कई तरह के तर्क भी दे रही है। मगर, **भ्रष्टाचार और अखंड लूट का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। भ्रष्टाचार पूरी व्यवस्था का अभिन्न अंग बन गया है। एक लम्बे अरसे से देश भ्रष्टाचार का दंश झेल रहा है। दुनिया में हमारी छवि बिगडती जा रही है।** मगर, निराशाजनक यह भी है कि देश में जब भी भ्रष्टाचार के मामले चर्चित होते हैं, केन्द्र सरकार भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए बातें तो बड़ी-बड़ी करती नज़र आती है लेकिन कुछ किया जाना चाहिए वैसा करने से जी चुराती है। परिणामस्वरूप भ्रष्ट तत्त्वों का दुस्साहस और हौसला बढ़ता ही जा रहा है। भ्रष्टाचार समाप्त होने के बजाय कई गुना बढ़ गया है। पहले सैंकड़ों और हज़ारों के भ्रष्टाचार होते थे अब तो अरबों और खरबों में भ्रष्टाचार हो रहा है। **जितने घोटाले इस सरकार के राज्य में एक साथ हुए हैं अभी तक किसी सरकार के राज्य में नहीं हुए। इस सरकार ने जनता के पैसे की जैसे लूट मचाई है, उससे भ्रष्टाचार के सभी रिकॉर्ड टूट गए हैं।**

देश में भ्रष्टाचार तेजी से बढ़ता गया मगर सरकार गहरी नींद में सोती रही। उच्चतम न्यायालय ने बार-बार फटकार लगाते हुए सरकार को जगाने की कोशिश की, सोने नहीं दिया। **उच्चतम न्यायालय ने कहा, 'राष्ट्रमंडल खेल पर देश में बहुत भ्रष्टाचार है और हम अपनी आँखें मूंदकर नहीं बैठ सकते। कुछ तो करना ही पड़ेगा।'** परिणामत: आयोजन समिति के अध्यक्ष सुरेश कलमाड़ी को इस्तीफा देना पड़ा। सुप्रीम कोर्ट ने पूछा, 'राजा अब तक मंत्री पद पर क्यों बने हुए हैं? दबाव में आयी सरकार ने ए.राजा से, जिसने 2जी स्पैक्ट्रम आवंटन में सरकारी खजाने को 1.76 लाख करोड़ रुपये का चूना लगाया, इस्तीफा लिया। उसी प्रकार शहीदों के परिजनों के लिए बनी इमारत में परिजनों को तो नहीं, पर नौकरशाहों और राजनीतिज्ञों को फ्लैट आवंटन की किरकिरी के बाद पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण से इस्तीफा लिया। सुप्रीम कोर्ट द्वारा सीवीसी पद पर नियुक्त अवैध घोषित करने पर, थॉमस को जाना पड़ा और प्रधानमंत्री की पुन: किरकिरी हुई। **कालाधन माफिया हसन अली के मामले में ढिलाई पर तो सुप्रीम कोर्ट ने डाँट पिलाई, ''व्हाट दी हैल इज़् गोईंग ऑन इन दिस कंट्री।'' देश में, आखिर यह लूट का सिलसिला, कब तक चलेगा।** एक के बाद एक कई खुलासों और अदालती सक्रियता ने केन्द्रीय सरकार की छवि को तार-तार कर दिया। दि. 17 मार्च 2011 को अंग्रेज़ी के अखबार 'द हिन्दू' में विकीलीक्स के एक खुलासे के कारण पिछली यू.पी.ए. सरकार के विश्वासमत के दौरान हुए **'वोद के बदले नोट' घोटालों की गूंज तीन साल बाद संसद के दोनों सदनों में फिर सुनाई दी।** विपक्ष ने एकजुट होकर 2008 में हुई सांसदों की खरीद-फरोख्त को लेकर सरकार पर हमला बोलते हुए, प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के इस्तीफे की मांग की। भ्रष्टाचार और घोटालों के नंगे नाच से भारत की जनता पहले से ही सदमें में है, अब जूलियन असांज की **विकीलीक्स ने डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार की बची-खुची इज्जत को भी खूंटी पर टांग दिया है। विकिलीक्स ने कहा है कि 22 जुलाई 2008 को भारत-अमेरिका के बीच परमाणु समझौते के मुद्दे पर, हुए विश्वास मत में सरकार बचाने के लिए सांसदों को रिश्वत दी गई थी।** इस सिलसिले में कांग्रेस नेता सतीश शर्मा के कथित सहयोगी नचिकेता कपूर का नाम लिया गया है। विकिलीक्स ने बताया है कि सतीश शर्मा का सहयोगी घर में अमेरिकी राजनयिक को तिजोरी में रखे 60 करोड़ रुपये दिखाता है और कहता है कि ये परमाणु संधि के पक्ष में वोट डालने के लिए सांसदों को देने हैं। आरोप है कि रालोद के सांसदों को इसके लिए 10-10 करोड़ रुपये दिए गए। अमेरिकी दूतावास द्वारा 17 जुलाई 2008 को यह गुप्त संदेश स्टेट डिपार्टमेंट, अमेरिका भेजा गया। पहली बार समूचे विपक्ष ने सीधे मनमोहन सिंह से इस्तीफा मांगा। आडवाणी-सुषमा समेत सभी विपक्षी पार्टियों के नेताओं ने दो-टूक कहा-अब यूपीए सरकार को शासन में बने रहने का कोई हक नहीं है। विकिलीक्स के खुलासे से जनता के संदेह को और गहरा कर दिया कि वाकई में विश्वासमत हासिल करने के लिए उनकी सरकार ने सांसदों की खरीद-फरोख्त की थी?

ध्यातव्य है कि रिश्वत की बुनियाद पर सत्ता की इमारत बुलंद करने के आरोपों से कांग्रेसी सरकारों का चोली दामन का साथ रहा है। सन् 1993 में नरसिंह राव की सरकार बचाने के लिए नोटों के बंडल के इस्तेमाल के आरोप लगे। झामुमो रिश्वतखोरी कांड के नाम से इतिहास में दर्ज यह केस कांग्रेस को किस तरह से असहज करता रहा, यह किसी से छिपा नहीं है। नोट से सांसदों का वोट खरीद कर सरकार को बचाने की कोशिश का कांग्रेस का इतिहास दोहराता नजर आ रहा है।

जुलाई 2008 में परमाणु करार के बाद उपजे संकट से सरकार को उबारने के लिए घूस का पुराना नुस्खा अजमाने की कांग्रेस की कोशिश को लेकर विकिलीक्स के ताज़े खुलासे ने उसी इतिहास के समक्ष आइना फिरा दिया है। इसी मुद्दे पर बहुमत जुटाने की कोशिशों के बीच लोकसभा में नोटों के बंडल उछाले जाने का गवाह पूरा देश बना था। कुछ भाजपा सांसदों ने सपा नेता अमर सिंह पर नोट के बदले वोट खरीदने का आरोप मढ़ते हुए सदन की टेबल पर नोटों के बंडल ला पटके थे। यहाँ तक कि किशोरचंद्र देव समिति को इस मामले की जांच सौंपनी पड़ी थी। 'वोट के बदले नोट' कांड की जाँच के लिए गठित लोकसभा की समिति ने साफ लिखा था कि इस मामले में घूस दिया गया। इस संदर्भ में संजीव सक्सैना का नाम भी दर्ज था। समिति ने सिफारिश की थी मामले की उपयुक्त एजेन्सी से जांच करवाई जाए। विपक्ष का आरोप है कि क्लीन चिट की बात कहकर प्रधानमंत्री ने संसद् को गुमराह किया है जबकि तीन साल भी जांच का आदेश न देकर प्रधानमंत्री कर्तव्य की

केन्द्रीय सरकार की साख पर सवाल? ...

अवहेलना के दोषी हैं।

अब तक यह माना जा रहा था कि सारे घोटाले कीचड़ की तरह हैं और मनमोहन सिंह उन पर कमल की तरह खिले हुए हैं। वे बिल्कुल बेदाग हैं। वे मजबूर हैं। वे क्या करें? वे गठबंधन-धर्म निभा रहे हैं। ए. राजा, इसरो और थॉमस के मामलों में प्रधानमंत्री ने कहा है कि वे इतने बड़े दोषी नहीं हैं, जितना कि कहा जा रहा है। क्या इतना कह देना काफी है। सीडब्ल्यूजी, 2जी, आदर्श और थॉमस के बाद अब विकीलीक्स की फाँस गले में पड़ गई। इस रहस्योद्घाटन से प्रधानमंत्री की साफ-सुथरी छवि तहस-नहस हुई है।

महाभारत के एक प्रसंग के अनुसार, युद्ध का आंखों देखा हाल सुनते हुए धृतराष्ट्र ने संजय से पूछा कि मेरे बारे में इतिहास क्या कहेगा? उत्तर में संजय ने कहा कि महाराज, यह प्रश्न न ही पूछें तो अच्छा है, क्योंकि आप सत्य नहीं सुन सकते और असत्य मैं नहीं कह सकता। आज, हमारे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह इसी प्रसंग को दुहरा रहे हैं। **वे अपनी काबिलियत और ईमानदारी पर यकीन करने के लिए व्यर्थ की दुहाई दे रहे हैं। खुद की इस ईमानदारी का कोई अर्थ नहीं है अगर आपके आस-पास के लोग वैसे नहीं हों, जैसे होने चाहिए।**

एक बार कन्फ्यूशियस के किसी शिष्य ने पूछा - 'अच्छी सरकार किसे कहते हैं?' महान दार्शनिक का उत्तर था - 'जिसके पास पर्याप्त धन हो, अस्त्र-शस्त्र हों तथा जिस पर जनता का विश्वास हो।' शिष्य ने पुनः पूछा - 'मान लीजिए, तीनों बातें न मिल सकें?' गुरु ने कहा - 'इनमें से अस्त्र-शस्त्रों को गौण माना जा सकता है।' शिष्य की जिज्ञासा शान्त न हुई उसने फिर प्रश्न किया - 'यदि इन तीनों चीज़ों में से केवल एक ही रखना हो तो कौन सी पसन्द करेंगे?' दार्शनिक का गंभीर मुद्रा में उत्तर था - **'जनता का विश्वास। यदि यह न हो तो उस सरकार को रहने का, शासन करने का कोई अधिकार नहीं। आज केन्द्र में सरकार की यही नियति हो गई है। आज जनता पूछ रही है जिस व्यक्ति पर भ्रष्टाचार का मुकदमा चल रहा है, वह देश के भ्रष्टाचारियों पर निगरानी रखेगा, यह तय करने वाले नेताओं को अपने पदों पर बने रहने का कितना नैतिक अधिकार रह गया है? लोग पूछ रहे हैं कि इतने स्वच्छ प्रधानमंत्री की सरकार इतनी भ्रष्ट कैसे हो सकती है? वे पूछते हैं कि, इतनी भ्रष्ट सरकार का प्रधानमंत्री स्वच्छ कैसे हो सकता है?** जिसकी छत्रछाया में भ्रष्टाचार फल-फूल रहा हो। उसे आप क्या करेंगे? आडवाणी ने कहा कि 2जी स्पैक्ट्रम मामले में तो प्रधानमंत्री ने गठनबंधन पर ठीकरा फोड़ दिया। मगर बोफोर्स मामले को दफन करने और दागी व्यक्ति को सीवीसी बनाने के मामले में वह अपनी गलती को सुधार सकते थे। **अब तक लोग यह कहते थे कि सरकार भले ईमानदार न हो मगर प्रधानमंत्री ईमानदार व्यक्ति हैं।**

लेकिन, आज सभी कह रहे हैं कि पीएम का कार्यालय भी ईमानदार नहीं रहा। यह आज़ाद देश की सबसे भ्रष्ट सरकार है। आज केन्द्र में सबसे ज्यादा विश्वसनीयता का संकट खुद प्रधानमंत्री को लेकर हैं।

डॉ. ज्ञान प्रकाश पिलानिया
सांसद् (राज्यसभा)
डी-148 ए/2, दुर्गा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.)
मोबाइल-9868181166

माओवादी खतरे के पीछे लश्कर का दिमाग

-रविभूषण सिन्हा

गुजरे साल 28 जून को नेपाल के मलंगवा में बैठक, अगस्त-सितम्बर में नेपाल में ही बुटवल के निकट प्रशिक्षण कैंप और हाल में भारतीय राजदूत राकेश सूद द्वारा नेपाल सरकार को लिखा पत्र साबित करता है कि अत्याधुनिक हथियारों से लैस दक्षता से बम विस्फोट कर रहे **माओवादियों की खतरनाक हरकतों के पीछे लश्कर-ए-तैयबा का दिमाग है।** पाकिस्तान का यह आतंकवादी संगठन भारत और नेपाल दोनों के माओवादियों से गठजोड़ कर चुका है। सरकार के लिए चुनौती बने नक्सली आने वाले दिनों में और ज़्यादा खतरनाक साबित हो सकते हैं। नेपाल स्थित भारतीय दूतावास के उच्चपदस्थ सूत्रों के मुताबिक बुटवल के नज़दीक झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ व बिहार के दो सौ नक्सल कार्यकर्ताओं को **लश्कर के लतीफ खान ने** विस्फोटक हैंडल करने का प्रशिक्षण दिया। यह कार्य नेपाली माओवादियों के सक्रिय सहयोग से हुआ। **जाली नोट के लिए** कुख्यात **नेपालगंज के रशीद खान ने** कैंप के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसके पहले जून में नेपाल के सरलाही जिला मुख्यालय मलंगवा में भारतीय और नेपाली माओवादियों के बीच वैचारिक व हथियारों के प्रशिक्षण के लिए बाकायदा समझौता हुआ था। मौके पर पीएलए (पीपुल्स लिब्रेशन आर्मी) के लोग भी थे। इसमें भारतीय माओवादियों का पांच सदस्यीय दल शामिल हुआ। **दल का नेतृत्व कामरेड पंकज ने किया था।**

हाल ही में भारतीय राजदूत राकेश सूद ने नेपाल सरकार को पत्र लिखकर ऐसी खतरनाक गतिविधियों पर नज़र रखने और उन्हें नियंत्रित करने का अनुरोध किया है। इसके बाद नेपाली माओवादियों ने इसे आधारहीन और भारतीय प्रोपगंडा करार देना शुरू कर दिया है। नई दिल्ली में पिछले दिनों गिरफ्तार **लश्कर आतंकी उमर मदनी ने** यह बताने के बाद कि उसके आकाओं ने माओवादियों से संपर्क करने का आदेश दिया था, माओवादियों में बेचैनी है। **मदनी नेपाल में लश्कर के लिए 'मनी मैनेजर' की भूमिका निभाता था।'**

'दैनिक जागरण' दिल्ली, दिनांक 4 जनवरी 2011 से साभार

यही फर्क है हम में और उनमें

हमने उन्हें मोहाली में क्रिकेट मैच देखने के लिए बुलाया है। बड़ी संख्या में पाकिस्तानी हुक्मरां, अपने नागरिकों के साथ आए हैं। विश्व कप क्रिकेट के 'सेमी' में हम उनका 'फाइनल' स्वागत करते हैं। लेकिन, लेकिन **हम यह भूल नहीं पा रहे हैं कि पाकिस्तान से हिन्दुओं का पलायन आज भी जारी है।** धर्म पर आधारित द्विराष्ट्रवाद की सोच से पैदा हुए पाकिस्तान के भीतर, भारत के साथ धार्मिक-शत्रुवाद भी शायद नहीं मिटा है। मिट गया होता, तो वहाँ के एक **85 वर्षीय धार्मिक नेता लखीचंद गर्जी का अपहरण न हुआ होता और इस घटना के बाद हिन्दुओं ने वहाँ प्रदर्शन न किए होते।** हालाँकि बलूचिस्तान के मुख्यमंत्री नवाब असलम रायसैनी की दलील थी कि इस अपहरण का कोई मज़हबी कारण नहीं लगता। उनका मानना था कि अपहरण फिरौती के लिए किया गया होगा और उन्हें जल्द छुड़ा भी लिया जाएगा। किन्तु बलूचिस्तान के कई शहरों में प्रदर्शन हुए थे और प्रदर्शनकारियों का अरोप था कि वहाँ अल्पसंख्यकों की जिन्दगी और संपत्ति की हिफाज़त में सरकार नाकाम है।

पाकिस्तान के एक प्रांत में घटित यह कोई पहली घटना नहीं थी। इसके बहुत साल पहले कराची से सिंधियों को खदेड़ने की मुहिम छेड़ी गई थी। सिखों के गुरुद्वारों की सुरक्षा को लेकर भी हंगामा हुआ था। पता नहीं जब दोनों देशों के बीच संबंधों को सुधारने की कोशिश में बातचीत होती है, तो इस तरह की घटनाओं पर भी चर्चा होती है या नहीं? **मछुआरों और कैदियों के आदान-प्रदान होते हैं, किन्तु अल्पसंख्यक हिन्दुओं की सुरक्षा की गारंटी माँगी जाती है या नहीं, पता नहीं?**

खैर क्रिकेट से बाहर निकल कर खबरों की रोशनी में देखें तो पता चलेगा कि **भारत से मुसलमान भाग कर पाकिस्तान नहीं जाते, क्योंकि उनके साथ, भारत में 'वैसा' सलूक नहीं किया जाता। किन्तु पाकिस्तान में हिन्दुओं पर 'ऐसे' अत्याचार होते हैं कि वे भाग कर हिन्दुस्तान आ जाएँ।** खबरों के मुताबिक पाकिस्तान में हिन्दुओं की आबादी अभी 2 प्रतिशत है। किन्तु वहाँ के बहुसंख्यक उनके साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते। पुश्तैनी घर छोड़ने और मंदिरों को तोड़े जाने के फर्मान वहाँ जारी होते रहते हैं। पेशावर जैसे कई शहरों में ऐसा कई बार हो चुका है। हिन्दू लड़कियों को अगवा करके उनके साथ ज़बरदस्ती शादी करने और धर्म बदलने की भी घटनाएँ हो चुकी हैं। **ऐसे मज़हबी अत्याचारों की वजह से विभाजन के बाद सन् 1948 में रह गए 18 प्रतिशत हिन्दू, अब वहाँ घट कर 2 प्रतिशत रह गए हैं।** कट्टरपंथी तालिबानी कहर अब हिन्दुओं पर भी टूटने लगा है। यह और दुःखद है कि पाकिस्तानी सरकारी तंत्र भी अब तालिबानियों के आगे घुटने टेक चुका है। एक घटना तो बड़ी पीड़ान्तक है। दुष्कर्म सिद्ध हो चुकने के बावजूद, वहाँ की एक अदालत ने एक हिन्दू लड़की के बलात्कारियों को दंड देने से यह दलील देकर इन्कार कर दिया कि लड़की ने अपनी मर्ज़ी से इस्लाम कुबूल करके उनमें से एक के साथ निकाह कर लिया है।

इतिहास साक्षी है कि मज़हबी उत्पीड़न से परेशान होकर हज़ारों हिन्दू परिवार भारत लौटे हैं। **एक आकलन के अनुसार पिछले 6 वर्षों में करीब पाँच हज़ार हिन्दू परिवार तालिबानियों के खौफ के मारे भारत लौट चुके हैं।** पीछे उनका घर-बार, कारोबार सब छूट गया है।

सरकारी आँकड़ों की भी अलग कहानी है। 4 साल पहले 2006 में भारत-पाकिस्तान के बीच 'थार-एक्सप्रेस' सेवा शुरू हुई थी। सप्ताह में एक बार कराची से चलकर भारत में बाड़मेर के मुनाबाओ बार्डर से दाखिल होकर यह ट्रेन जोधपुर तक जाती है। आँकड़ों के मुताबिक पहले साल 392 हिन्दू इस ट्रेन से भारत आए थे। सन् 2007 में यह संख्या बढ़कर 880 हो गई थी। उसके बाद यानी 2009 में 1,240 पाकिस्तानी हिन्दू आए। जबकि इस **पिछले 8 महीने में एक हज़ार हिन्दू भारत आ चुके हैं। डर के मारे, ये वापस नहीं गए। उन्हें भारत की नागरिकता चाहिए, ताकि यहाँ चैन से रह सकें।**

भारत और पाकिस्तान में, यानी हम में और उनमें, यही फर्क है कि हम अपने यहाँ अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान करते हैं, **जबकि वे वहाँ अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर ज़ुल्म ढाते हैं, उनकी बेटियों का अपहरण करके जबरन उन्हें मुसलमान बनाते हैं।** और वहाँ की सरकारें कुछ नहीं कर पातीं। क्यों? क्या इसलिए कि इस्लाम में किसी हिन्दू लड़की को मुसलमान बनाना 'हज-ए-अकबरी' के समान पुण्य का काम माना जाता है? पाकिस्तान में, मुसलमान नौजवानों को यही समझाया जाता है।

ऐसे में क्या यह सही लगता है कि जिस देश की सरकार और उसका खुफिया तंत्र पड़ोसी देश के साथ दुश्मनी निभाने के लिए ऐसे सिरफिरों और 'हिन्दू द्रोहियों' की मदद करती हो, उसके साथ रिश्ते-सामान्य करने के लिए बातचीत का 'ढोंग' रचाया जाए? क्रिकेट देखने को बुलया जाए और साथ बैठ कर उसका मज़ा लिया जाए। इससे पहले 87 में जनरल ज़िया उल हक मैच देखने जयपुर आए थे और जनरल मुशर्रफ 2005 में दिल्ली। लेकिन इन 'खेलों' से क्या दुश्मनी का खेल खत्म हुआ? और अपने देश में, मुस्लिमों की स्थिति का जायज़ा लेने वाले पूर्व न्यायाधीश डॉ. राजेन्द्र सच्चर ने कहा है कि 'दुनिया के 34 प्रतिशत मुस्लिम सिर्फ भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में बसते हैं। भारत की साढ़े सात करोड़ मुस्लिम महिलाओं में से साढ़े पाँच करोड़ निरक्षर हैं। मुस्लिमों की आरक्षण की माँग कोई भीख नहीं, यह उनका संवैधानिक अधिकार है। **'काश, पाकिस्तान में भी हिन्दुओं का पक्ष लेने वाला कोई डॉ. सच्चर होता। वहाँ भी कोई नया मोहाली होता। क्रिकेट होता।**

'डेली हिन्दी मिलाप' हैदराबाद, दिनांक 30 मार्च 2011 से साभार

डर के डेरे

डॉ. जयश्री जैन, क्लिनिकल साइकोलोजिस्ट

शब्दों के पैने वार किसी भी पनपते-फलते व्यक्तित्व को खत्म कर देने की कुव्वत रखते हैं। शाब्दिक हिंसा को हम अब भी ज़्यादा अहमियत नहीं देते। हमारा तर्क होता है कि कहने से क्या होता है? बुरा कहने से तो पेड़ भी मुरझा जाता है, सोचने-समझने वाले इंसान की क्या बात की जाए।

हाल ही के एक शोध से पता चला है कि भारत में 80 फीसदी से भी ज़्यादा महिलाएं शादी के बाद किसी न किसी रूप में शाब्दिक हिंसा की शिकार होती हैं।

कैसे चलते हैं शब्दों के बाण?

पुरुष जन्म के रिश्तों को पवित्र मानते हैं लेकिन स्त्री की शादी के बाद उसके जन्म के रिश्तों पर अंगुलि उठा देना बड़ी बात नहीं मानी जाती। साला-साली तो अपशब्द का रूप ले चुके हैं। कुछ लोग इसे मज़ाक का नाम दे देते हैं, लेकिन दरअसल यह हिंसा है। किसी भी इंसान की क्षमताओं पर बार-बार प्रश्न-चिह्न लगाना हिंसा है। 'तुम से यह काम नहीं हो सकता।' 'तुम केवल नुकसान कर सकती हो' 'बच्चों को पालना तुम्हारे बस का काम नहीं लगता।' 'कभी कुछ वक्त पर किया है?' 'तुम्हारा कोई भविष्य नहीं' - जैसे जुमले अक्सर महिलाएं घर में सुनती रहती हैं।

क्या होता है असर?

शब्दों के तीरों से मन आहत होता है, जिसका असर शरीर पर पड़ना लाज़मी है। विज्ञान के लहजे़ से समझें, तो दिमाग का एक हिस्सा सेरिब्रम, जो हमारी विचारशीलता के लिए जिम्मेदार है, अगर लगातार तनाव में रहे, तो उसकी क्षमताओं पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ऐसे में सामान्य व्यवहार तो दूर, इंसान रिलैक्स महसूस भी नहीं कर पाता। कुछ लक्षण तो सामान्यत: दिखते हैं :-

1. असहज रहने लगना। पति या जिस व्यक्ति के शब्द बाण आहत करते हैं, उसके सामने आते ही असहज हो जाना, डरने लगना कि कहीं कोई गलती न हो जाए।

2. निर्णय न कर पाना। इस बात से आक्रांत रहना कि फैसला गलत हो गया, तो क्या सुनने को मिल सकता है। यही लक्षण समस्या बढ़ जाने पर आत्मग्लानि का रूप ले लेता है। महिलाएं हर बात के लिए खुद को दोषी मानने लगती हैं।

3. खुद को असफल मान लेना। खुद की क्षमताओं पर अविश्वास करने लगना।

जब समस्या बढ़ जाए तो शाब्दिक हिंसा का स्तर बहुत बढ़ जाए, तो लक्षणों में कुछ पक्ष और जुड़ जाते हैं-

1. चिड़चिड़ापन, इसके फलस्वरूप अकारण सिरदर्द की शिकायत रहने लगती है। नींद न आना भी एक लक्षण के रूप में उभरता है।

2. आत्मदंडात्मक सोच (खुद को सज़ा देने की इच्छा)।

3. आत्मघृणा।

4. कब्ज़। चूंकि दिमाग हर समय सोचता रहता है, तनाव में रहता है, लिहाज़ा रक्त का प्रवाह भी उसी ओर अधिक रहता है। इसी के चलते पाचन क्रिया प्रभावित होती है।

उपाय खोजना ज़रूरी है

शाब्दिक हिंसा के साथ तालमेल बैठा लेना या पलायनवादी सोच के ज़रिए मन को कहीं और लगा लेना उपाय नहीं है। जो इंसान शब्दों के तीर चला रहा है, उसे सम्भालना होगा। यह समस्या बनी रही, तो भावी पीढ़ियों को भी इसका सामना करना होगा। बच्चे इससे प्रभावित होंगे और बाद में उनके बच्चे भी। यह समझना ज़रूरी है कि कोई भी व्यक्ति किसी और से कड़वे, चुभने वाले, आहत करने वाले शब्द क्यों बोलता है।

इसके तीन कारण हैं - पहला, वह व्यक्ति स्वयं बचपन में ऐसी हिंसा का शिकार हुआ हो। दूसरा, उसे किसी तरह की कमतरी का अहसास हो। और तीसरा कि वह दूसरों पर आधिपत्य जमाने वाली सोच रखता हो।

कैसे होगा निदान?

वह व्यक्ति चाहे पति हो, पिता हो, पत्नी हो या कोई और, आपको उसे बताना होगा कि ऐसा व्यवहार स्वीकार्य नहीं है। कहने का ढंग सौम्य, सहज लेकिन दृढ़ता भरा होना चाहिए। आरोप लगाने की बजाए, बातचीत का ज़रिया अपनाएं। उसे बताएं कि बुरा बोलने के नतीजे रिश्तों के लिए ठीक नहीं है। फिर उसकी मदद करने की बात करें। सहमति मिलने पर 15-!5 दिन पर उसके व्यवहार को रिकॉर्ड करके उसे बताएं। अगर वह सचमुच अपने रवैये में तब्दीली लाना चाहेगा, तो आपको ज्यादा कुछ नहीं करना पड़ेगा। अगर आपस में चर्चा से बात न बनती हो, तो काउंसलर की मदद ली जा सकती है।

शाब्दिक हिंसा का निदान ज़रूरी है। सुरक्षित और सम्माननीय महसूस करना हर इंसान का हक है।

'दैनिक भास्कर' (मधुरिमा), 27 अप्रैल 2011 से साभार

मोदी की राजनीतिक घेरेबंदी

-अरविंद जयतिलक

गुजरात दंगों का बवंडर अनायास एक बार फिर उठ खड़ा हुआ है। गुजरात के आइपीएस अधिकारी संजीव भट्ट ने उच्चतम न्यायालय में हलफनामा दाखिल कर गुजरात दंगों में पुलिस की अकर्मण्यता और एसआइटी जांच को लेकर एक निरर्थक सवाल को आगे बढ़ाया है। संजीव भट्ट ने दावा किया है कि गोधरा ट्रेन हादसे के ठीक बाद शाम को नरेन्द्र मोदी की बैठक में वह खुफिया अधिकारी की हैसियत से शामिल हुए थे जिसमें मोदी ने पुलिस को निष्क्रिय रहने के संकेत दिए थे। संजीव भट्ट के इस हलफनामे में कितनी सच्चाई है आज नहीं तो कल इस पर से पर्दा उठ ही जाएगा, लेकिन दंगों के दौरान राज्य के तत्कालीन पुलिस महानिदेशक के.चक्रवर्ती ने साफ कर दिया है कि उस वक्त वह बैठक में उपस्थित ही नहीं थे। के.चक्रवर्ती के खुलासे में दम इसलिए नज़र आता है कि वह संजीव भट्ट से जुड़े तथ्यों को दंगों की जांच कर रहे विशेष जांच दल के समक्ष पहले ही रख चुके हैं।

एक बड़ी त्रासदी यह है कि संजीव भट्ट के हलफनामे की सच्चाई को जाने बगैर देश भर में नए सिरे से वितंडा खड़ा किया जा रहा है और नरेन्द्र मोदी की सरकार पर चाबुक चलाया जा रहा है। भट्ट यह भी कह रहे हैं कि हलफनामें के पीछे उनका कोई विशिष्ट उद्देश्य नहीं है और वह बस अपने अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं। **सवाल है कि दंगों के दौरान राज्य और जनता के प्रति उनकी जवाबदेही कहां थी? घटना के नौ वर्ष गुज़र जाने के बाद आज अगर उनकी कर्तव्यनिष्ठा हिलोरें मार रही है तो देश ज़रूर जानना चाहेगा कि आखिर इसके पीछे कौन-सी संजीवनी काम कर रही है? संजीव भट्ट की कर्तव्यपरायणता का भाव अचानक पनपना कई तरह के सवाल खड़े करता है?** दंगों को रोकने में गुजरात सरकार की लापरवाही पर आखिर उन्होंने पूरी जानकारी राज्यपाल और केन्द्र सरकार को क्यों नहीं दी? संभव था कि जो खुलासा वह आज कर रहे हैं अगर उस वक्त किए होते तो दंगों में जान गंवाने वाले सैंकड़ों निर्दोष लोगों की जानें बच सकती थीं। **इस आधार पर क्या वह भी सजा के हकदार नहीं हैं?**

संजीव भट्ट की इस दलील का भी कोई मतलब नहीं है कि 2002 से 2009 के बीच दंगों की जांच करने वाली एसआइटी ने उन्हें नहीं बुलाया और न ही नानावटी आयोग ने उनकी ज़रूरत समझी। क्या एक जिम्मेदार पुलिस अधिकारी होने के नाते वह खुद एसआइटी और नानावटी आयोग के समक्ष नहीं जा सकते थे। यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो इसका अर्थ है किउनका हलफनामा सच के निकट नहीं है। हैरान करने वाली बात तो यह है कि संजीव भट्ट उच्चतम न्यायालय की देखरेख में गठित एसआइटी द्वारा किए जा रहे दंगों की जांच पर भी सवाल उठा रहे है? उनका मानना है कि एसआइटी मामले की जांच ठीक से नहीं कर रही है और उनके द्वारा दिए गए बयान को वह लीक कर रही है। उन्होंने अपने हलफनामें में उन्हीं आरोपों को दोहराया है जिसे एक ज़माने से राजनीतिज्ञों द्वारा उछाला जा रहा है।

संजीव भट्ट के बुनियादहीन आरोपों में सियासत की गंध लग रही है और उनका आचरण राजनीतिक है। अब जब 27 अप्रैल को गुजरात दंगों के मामले में उच्चतम न्यायालय में सुनवाई होनी है और इसके ठीक पहले संजीव भट्ट का हलफनामा उच्चतम न्यायालय में दाखिल किया गया है तो विपक्षी दलों का नरेन्द्र मोदी पर वार करते हुए उनसे इस्तीफा मांगना कई सवाल खड़े करता है? **जब गुजरात दंगों की जाँच उच्चतम न्यायालय की देखरेख में ठीक ढंग से चल रही है और राज्य सरकार भी पूरी तन्मयता से सहयोग कर रही है, ऐसे में हर रोज नए-नए प्रपंच के सहारे वितंडा खड़ा करना क्या न्यायिक प्रक्रिया में बाधा पहुँचाना नहीं हुआ? जनता द्वारा निर्वाचित सरकार को जानबूझकर खलनायक के तौर पर प्रस्तुत करना क्या गुजरात की सम्मानित जनता का अपमान नहीं है।**

गुजरात सरकार की मंशा और नीयत पर सवाल उठाने वालों से पूछा जा सकता है कि क्या गुजरात के अलावा किसी अन्य राज्य में हुए दंगों की इतनी निष्पक्ष जाँच अब तक हुई है? बिहार में कांग्रेस सरकार के दौरान ही भागलपुर में दंगा हुआ, हज़ारों की संख्या में लोग मारे गए, लेकिन कांग्रेस सरकार जब तक सत्ता में रही एक भी दंगाई को सजा नहीं मिली। अब जब नीतीश सरकार सत्ता आई है तो भागलपुर दंगे की जाँच चल रही है और गुनाहगार जेल जा रहे हैं। सन् 1984 के सिक्ख दंगों के आरोपी आज भी साक्ष्यों की उपलब्धता के बावजूद कानून की पकड़ से बाहर हैं। आखिर सिक्ख दंगों के लिए जिम्मेदार लोगों पर संप्रग सरकार क्यों नहीं कानून का डंडा चला पा रही है।

'दैनिक जागरण' दिल्ली, दिनांक 27 अप्रैल 2011 से साभार

सांस्कृतिक गौरव संस्थान द्वारा पटना में आयोजित गोष्ठी की रपट

प्रो. देवेन्द्र प्रसाद सिंह

सांस्कृतिक गौरव संस्थान की बिहार शाखा के तत्त्वावधान में 24 अप्रैल 2011 को पटना के बिहार इंडस्ट्रीज़ एसोसिएशन के सभा कक्ष में लगभग 500 लोगों की उपस्थिति में 'रामराज्य कल और आज' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए **हार्वर्ड विश्वविद्यालय के लोकप्रिय प्रोफेसर, विख्यात अर्थशास्त्री और पूर्व केन्द्रीय वाणिज्य, विधि और न्याय मंत्री डॉ. सुब्रमणियन् स्वामी** ने अपने सारगर्भित व्याख्यान में विभिन्न उद्धरणों एवं आँकड़ों को पेश करते हुए रामराज्य के सामाजिक-आर्थिक एवं प्रशासनिक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए इसे आज के लिए भी प्रासंगिक प्रमाणित किया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की न्यायप्रियता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आततायी तथा दुराचारी रावण का वध तथा समस्त नारी समाज की मुक्ति रामराज्य के इसी पक्ष को उजागर करता है। उसके बाद डॉ. स्वामी ने रामराज्य का उदाहरण देते हुए बताया कि उनके 'रामराज्य' की भावना यही है कि समाज का सबसे कमज़ोर व्यक्ति समाज के निर्माण में सहभागी हो और समाज उसके हितों की अनदेखी न करे। रामचन्द्र जी की और उनके राज्य की अनेक विशेषताओं में से यह प्रमुख थी कि भूमि, वन, जल और अन्न के उत्पादन, वितरण और न्याय व्यवस्था में गाँववासियों का पूरा अधिकार था। उन्होंने ज़ोर देकर इस तथ्य की स्थापना का प्रयास किया कि आज रामराज्य इसलिए भी प्रासंगिक है क्योंकि वर्तमान शासन व्यवस्था या तो भ्रष्टाचार के चंगुल में फँसी है या स्वार्थपरक राजनीति के दलदल में धँसी है। ऐसी स्थिति में हमें समतामूलक दृष्टि तथा न्यायपरक आधारशिला पर स्थापित रामराज्य ही त्राण दिलवा सकता है।

डॉ. स्वामी ने यह आग्रह किया कि सांस्कृतिक गौरव संस्थान द्वारा कर्तव्यों के पालन का जो अभियान छेड़ा गया है, उसमें समाज के सब लोग योगदान करें। इसके लिए यह अपेक्षा है कि देश में संस्कृत की पढ़ाई पर ज़ोर दिया और हिन्दी को अधिक से अधिक संस्कृतनिष्ठ बनाया जाए। समाज और देश में उत्पात मचा रहे **जिहादी आतंकवादियां से अत्यंत कठोरता से निपटा जाए।** उन्होंने इस प्रसंग में तमिलनाडु की मुस्लिम बहुल बस्तियों में वहाँ के हिन्दुओं के प्रति हुए घिनौने व्यवहार का उदाहरण दिया, जिसके लिए उन्हें उच्च न्यायालय में संघर्ष करना पड़ा। 2जी स्पेक्ट्रम में डॉ. स्वामी ने केन्द्र सरकार की देश के प्रति घोर लापरवाही बताया और इसे समाजद्रोह की संज्ञा दी। श्रीरामसेतु के तोड़ने के ज़बर्दस्त अभियान में भी उन्होंने किस तरह उच्चतम न्यायालय में संघर्ष किया इसका लेखा-जोखा सभा में उपस्थित विशाल जनसमूह को दिया।

आरंभ में **'श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण भव भय दारुणम्.....' स्तुति गायन के पश्चात् संस्थान की बिहार शाखा के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र प्रसाद सिंह ने अनेक राज्य स्तर के कार्यक्रमों का विवरण दिया** और डॉ. स्वामी सहित न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्र प्रसाद, पूर्व राज्यपाल श्री कैलाशपति मिश्र, संस्थान के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. महेश चन्द्र का भावभीना स्वागत किया।

उल्लेखनीय बात यह थी कि डॉ. स्वामी को पटना हवाई अड्डे से ॐ अंकित भगवा झंडे लगे सांस्कृतिक गौरव संस्थान की पताकायुक्त दर्जनों मोटरसाइकिलों के काफिले की अगुवाई में कार्यक्रम स्थल तक लाया गया। उत्साही तथा क्रांतिकारी नौजवानों की ऐसी टोली ने हवाई अड्डे के बाहर निकलते ही डॉ. स्वामी का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए **'वन्देमातरम्' तथा 'भारत माता की जय' के गगनभेदी नारों से हवाई अड्डा परिसर को गुंजा दिया।** इन नारों का क्रम हवाई अड्डे से प्रारंभ होकर सभा स्थल तक के लगभग चार किलोमीटर के मार्ग तक चलता रहा और डॉ. स्वामी के मंच तक पहुँच जाने तक सतत जारी रहा। इस पूरे **अभियान का नेतृत्व श्री करुण कुमार ने अपने साथियों सहित किया,** जिनमें पर्यावरण शोध एवं ग्रामीण विकास संस्थान के सचिव श्री मृत्युंजय, प्रशान्त कुमार सिंह, देव प्रकाश, जय प्रकाश, सौरभ कुमार सिंह, मोहित, विकास, अजय कुमार सिंह, अमर आदि प्रमुख थे।

यह भी अति उल्लेखनीय रहा कि पटना के सैंकड़ों गणमान्य व वरिष्ठ नागरिकों, समाज के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले प्रमुख संस्थानों के नेतृत्व वर्ग, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचारक श्री अनिल ठाकुर तथा क्षेत्र प्रचारक मा. स्वान्त जी तथा विश्व हिन्दू परिषद के क्षेत्र संगठन मंत्री मा. रासबिहारी जी आदि की गरिमामयी उपस्थिति तथा सैंकड़ों उत्साही नवयुवकों की टोलियों एवं बड़ी संख्या में उपस्थित प्रेस-मीडिया कर्मियों की महत्वपूर्ण उपस्थिति में जब दर्जनों कैमरों के फ्लैश एक साथ चमक रहे थे तभी संस्थान के बिहार शाखा के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र प्रसाद सिंह ने बार-बार डॉ. स्वामी को आधुनिक भारतीय राजनीति के चाणक्य के संबोधन से संबोधित किया, जिसे उपस्थित जन-समुदाय ने बार-बार करतल ध्वनि से अनुमोदित किया। अन्य सभी वक्ताओं ने भी अपने संबोधनों में डॉ. स्वामी को आधुनिक भारतीय राजनीति का चाणक्य बताया।

दिल्ली से आए संस्थान के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. महेश

पटना में आयोजित गोष्ठी की रपट ...

चन्द्र ने बताया कि संस्थान देश में एकमात्र ऐसा संगठन है जो संविधान में उल्लिखित भारत के नागरिकों के कर्तव्यों के प्रचार और प्रसार में लगा है तथा 'हमारे मूल कर्तव्य' जैसी अनेक पुस्तकों और अद्वितीय पत्रिका 'गौरव घोष' के माध्यम से भारतमाता से मांगने वालों को देने वालों की श्रेणी में लाने का अभियान चला रखा है। उन्होंने यह भी बताया कि श्रीरामचन्द्र जी कर्तव्य के पालन में विश्व में अग्रणी रहे हैं, इसलिए रामराज्य की स्थापना का अभियान छेड़ा गया है, जो देश के आज के वातावरण में पूरी तरह प्रासंगिक है।

पूर्व राज्यपाल कैलाशपति मिश्र जी ने इस गोष्ठी में आकर अपने जीवन के अनुभवों से जनसमुदाय को लाभान्वित किया और कर्तव्यों के पालन की प्रेरणा दी। साथ-साथ राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण जीवन बिताने का अनुरोध किया। उन्होंने डॉ. स्वामी के पराक्रमों का भी उल्लेख किया।

न्यायमूर्ति श्री राजेन्द्र प्रसाद ने अध्यक्षीय भाषण में संस्थान के उद्देश्यों की भूरि-भूरि सराहना करते हुए डॉ. स्वामी के देश बचाओ अभियान की ज़ोरदार शब्दों में प्रशंसा की और उन्हें एक अद्वितीय योद्धा की संज्ञा दी। उन्होंने न्याय के क्षेत्र में डॉ. स्वामी के कार्यों की चर्चा की कि किस तरह उन्होंने अकेले समाज के मानबिन्दुओं को बचाया है।

संस्थान की ओर से **मगध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार को पर्यावरण के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए संस्कृति-रत्न सम्मान प्रदान किया गया,** जिसे उनके प्रतिनिधि, विश्वविद्यालय के संयुक्त परीक्षा नियंत्रक डॉ. भरत भूषण ने प्राप्त किया। साथ ही **हिन्दी के मूर्धन्य कवि श्री मृत्युंजय मिश्र 'करुणेश' को साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए 'संस्कृति गौरव' सम्मान से सम्मानित किया गया।** सम्मान अर्पण डॉ. स्वामी तथा डॉ. महेश चन्द्र के कर-कमलों से हुआ।

मगध विश्वविद्यालय के संयुक्त परीक्षा नियंत्रक डॉ. भरत भूषण के धन्यवाद अर्पण के बाद इस विराट गोष्ठी का राष्ट्रगान के साथ समापन हुआ।

पटना से प्रकाशित होने वाले तमाम समाचार पत्रों ने इस कार्यक्रम को प्रमुख स्थान देते हुए प्रकाशित किया, जिनमें दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, प्रभात खबर, आज तथा राष्ट्रीय सहारा आदि जैसे हिन्दी दैनिक तथा हिन्दुस्तान टाइम्स, द टेलीग्राफ एवं द टाइम्स ऑफ इंडिया इत्यादि जैसे अंग्रेज़ी दैनिक विशेष उल्लेखनीय रहे। इनमें कार्यक्रमय के रंगीन चित्रों को भी प्रकाशित किया गया। इस कार्यक्रम को लगभग सारे ही टेलीविज़न चैनलनों ने प्रमुखता के साथ प्रसारित किया।

इस प्रकार सांस्कृतिक गौरव संस्थान की बिहार शाखा ने इस भव्य संगोष्ठी का सफल आयोजन किया, जिसे न केवल उपस्थित मूर्धन्य व अतिविशिष्ट व्यक्तियों तथा युवकों तथा छात्रों ने सराहा अपितु मीडिया के द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार के फलस्वरूप बिहार के लाखों लोगों ने इस कार्यक्रम को जाना। इस तरह बिहार में अति भव्य एवं उत्कृष्ट तरीके से सांस्कृतिक गौरव संस्थान के भावी कार्यक्रमों का आगाज़ हुआ।

फार्म संख्या - IV (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान	:	दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	:	द्विमासिक
3. मुद्रक का नाम	:	देवेन्द्र मित्तल
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
4. प्रकाशक का नाम	:	देवेन्द्र मित्तल
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
5. पता	:	3308, सेक्टर-डी-3, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070
6. संपादक का नाम	:	प्रो. सतीश चन्द्र
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
पता	:	166, वसंत एन्क्लेव, राव तुलाराम मार्ग, नई दिल्ली -110 057
7. उन व्यक्तियों/संस्था का नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	सांस्कृतिक गौरव संस्थान संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110 022

मैं, सविनय एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह. देवेन्द्र मित्तल

कलानौर के यवन नवाब का काला कानून - कौला पूजन

*पंडित बी.एन.मुदगिल**

सुखद संयोग अथवा देशवासियों के सौभाग्य से भारतीयों द्वारा वर्ष 1857 में प्रथम बार प्रारम्भ किया गया स्वतंत्रता संग्राम बुरी तरह असफल हो गया अन्यथा इस संघर्ष में आंशिक सफलता मिलते ही मुसलमानों ने दिल्ली के लाल किले की राजगद्दी पर आखिरी मुगल बादशाह बहादुरशाह ज़फर को तुरंत आसीन कर दिया था जिससे हिन्दुस्थान की दूसरी गुलामी का लज्जाजनक अध्याय आरंभ हो गया होता।

इससे पहले सात समुद्र पार विदेश-इंग्लैण्ड से धूर्त व्यापारियों के कृत्रिम वेश में आए फिरंगियों ने लगभग शताब्दी पूर्व हमारे भारत को यंत्रणापूर्ण पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ रखा था। यदि उस समय अंग्रेज़ दोबारा शासन पर काबिज़ नहीं हो जाते तो बहुत सम्भव है कि आज भी हम स्वतंत्रता समीर में सांस लेने को तरस जाते क्योंकि **विदेशी क्रूर आक्रमणकारी रूप में भारत में आए मुसलमान हमें कभी हमारी अपमानपूर्ण गुलामी की जंजीरों से मुक्त करने के लिए तैयार नहीं होते।**

जब मेरा जन्म तत्कालीन पंजाब प्रान्त के 'एक रोहतकी हज़ार कौतुकी' की किंवदंती के लिए कुख्यात रोहतक जिले के बहुत उद्दण्ड ग्राम मकडौली कलां ग्राम में हुआ था तब अनेक विकट परिस्थितियों के वशीभूत साल 1957 में **मेरा परिवार गांव गद्दी-खेड़ी** में आकर स्थायी रूप से बस गया।

यहाँ आकर स्थानीय बड़े-बूढ़ों से मुझे जो जानकारी सुनने को मिली वह दिल को दहला देने वाली थी। बहुत समय पहले शायद उस समय दिल्ली में धर्मान्ध औरंगज़ेब का ज़माना था। जिसके बारे में कहा जाता है कि वह अपने दस्तरखान पर बैठने से पहले सवा मन जनेऊ तुड़वा डालता था। इसका अर्थ यह हुआ कि इतनी भारी संख्या में जनेऊ पहनने वाले हिन्दुओं को वह बड़ी निर्दयतापूर्वक धर्म परिवर्तन करके तलवार की नोक पर मुसलमान बनने के लिए बाध्य कर देता था। लेकिन **जो हिन्दू उसके आदेश पर मुसलमान बनने पर तैयार नहीं होते थे, उन्हें वह तुरंत तलवार से वहीं कत्ल करवा देता था।** इसका ज्वलंत प्रमाण अभी भी गुड़गांव जिले के अधिकांश वे मेव हैं जिनके पूर्वज मौत से भयभीत होकर अपने धर्म परिवर्तन द्वारा हिन्दुओं से मुसलमान बनने पर बाध्य कर दिए गए थे। उन लोगों के नाम बेशक मुसलमान सूचक हैं, मगर उनके गोत्र आज भी हिन्दूवादी होने के परिचायक हैं। इसका आभास कुछ समय के लिए मुझे उस क्षेत्र में सिल्वर लाइन होल्डिंग्ज़ कंपनी नई दिल्ली के मालबोरो हाइट्स सराय प्रोजेक्ट पर पर्याप्त समयावधि के लिए लैण्ड रिकार्ड्स एण्ड फील्ड आफिसर के रूप में कार्यरत रहते हुए व्यक्तिगत रूप से हुआ।

पाकिस्तान के तत्कालीन सदर अय्यूब खां का जन्म भी रोहतक के दक्षिण में स्थित कलानौर कस्बे में हुआ था। जहाँ उनके पूर्वज नवाब हुआ करते थे। उस जमाने में अपने पक्षपातपूर्ण व्यवहार और दुर्भावना से भरे हिन्दुओं के प्रति लज्जाजनक एवं असहनीय आचरण का परिचय देते हुए उन्होंने अपनी पूरी रियासत में यह प्रथा प्रचलित करके एक काला कानून पारित कर दिया था कि **किसी भी हिन्दू घराने की नववधू उस समय तक अपनी ससुराल में सुहागरात नहीं मनाएगी जब तक वह कलानौर में यवन नवाब की हवेली पर जाकर उसका कौला पूजन नहीं कर लेती।** यह निन्दनीय कौला पूजन केवल हिन्दू नवविवाहितों के लिए अनिवार्य था। मुसलमान औरतों पर इस प्रकार का कोई प्रतिबंध नहीं था।

यवन नवाब के इस निरकुंश शासनकाल में एक और घोर अन्धेरगर्दी फैली हुई थी। **मुस्लिम बहुल गांव हिन्दुओं की आबादी पर डंके की चोट पर चढ़ आते थे। जिसे दहाड़ चढ़ आना कहा जाता था।** तत्कालीन गद्दी-खेड़ी गांव चूंकि कलानौर के नवाब की रियासत का हिस्सा था और यहाँ अलग-अलग गाँव से हिन्दू घराने आकर मुजारे की हैसियत से आबाद हो गए थे जिससे यहाँ रहने वाले हिन्दू अनेक गाँव की भांति एक गोत्रीय नहीं हैं। इनके भिन्न-भिन्न अनेकानेक गोत्र हैं। **उस समय में गद्दी खेड़ी का पड़ौसी बड़ा गाँव बहु अकबरपुर मुसलमानों का गढ़ था।** बाद में इसी गाँव से निकलकर एक और छोटा गाँव बहु जमालपुर भी बस गया। **बहु अकबरपुर के मुसलमान दहाड़ बनकर गद्दी-खेड़ी पर चढ़ आया करते थे और यहाँ की खूबसूरत तथा जवान बहु-बेटियों को जबरन उठा ले जाते और बलपूर्वक उनकी इच्छा के विरुद्ध धर्म परिवर्तन द्वारा उन्हें मुसलमान बना कर अपने घरों में कैद कर लेते थे।** इस प्रकार प्रत्येक मुसलमान की बड़ी आसानी से कोई खर्च किए बिना कई-कई पत्नियां हो जाती थीं। जिनसे वे धड़ाधड़ मुसलमानों की आबादी बढ़ाने का काम किया करते थे। इस दुष्कृत्य के लिए यवन शासकों का उन्हें पूरा समर्थन प्राप्त था क्योंकि उनके विचार से वे इस्लाम को फैलाने का पुण्य कार्य कर रहे थे।

दहाड़ चढ़कर अपने वाले मुसलमान मात्र औरतों को ही अपना शिकार नहीं बनाते बल्कि हिन्दुओं का पशुधन और अन्य माल भी दोनों हाथों से लूट कर अपना घर भर लेते थे। इससे स्वभाविक रूप में स्थानीय हिन्दू घबरा गए। उन्होंने सोच लिया कि इस प्रकार अपनी आबरु और दौलत लुटाते रहकर वे कब तक अपना जीवन यापन कर सकेंगे इसलिए उन्होंने हिन्दुओं के किसी बड़े गाँव से अपनी सुरक्षा के लिए सहायता मांगने का विचार किया।

उन दिनों महम के निकट बलहम्बा हिन्दुओं का बहुत बड़ा गाँव था। इसलिए गद्दी खेड़ी के लोग अपनी पंचायत बनाकर वहाँ पहुँचे और उन्होंने बलहम्बा निवासियों को चौपाल में एकत्रित करके अपनी इस समस्या से अवगत कराया तथा अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सहयोग देने की याचना की। आखिर दोनों पक्षों ने पारस्परिक खुले मन से विचार करके निश्चय किया कि बलहम्बा के कुछ सशक्त घराने गद्दी-खेड़ी जाकर स्थायी रूप से आबाद हो जाएंगे जिन्हें जिन्दगी बसर करने के लिए गद्दी-खेड़ी गाँव वाले कृषि भूमि और रहने के लिए घर प्रदान करेंगे।

कलानौर के यवन नवाब का काला कानून–कौला पूजन...

मरता क्या न करता। गद्दी–खेड़ी गाँव स्वयं नवाब के रहम व करम पर जिन्दा था। इस गाँव का नाम भी गद्दी–खेड़ी इसलिए पड़ गया था कि यहाँ नवाब की गद्दी लगती थी जिस पर बैठकर इन्साफ के नाम पर नवाब बे–इन्साफी करता था। आखिर **नवाब की ज्यादतियों से बचने और दहाड़ से सुरक्षित रहने के लिए अन्य कोई विकल्प न देखकर गांव वालों ने बलहम्बा की सारी शर्तें स्वीकार कर लीं** जिससे बलहम्बा के कुछ बलिष्ठ घराने यहाँ आकर आबाद हो गए और इस प्रकार यहाँ एक और नया गाँव ताजा माजरा के नाम से अस्तित्व में आ गया। जिन्होंने आरंभ में यहाँ के अस्थल में आकर अपना डेरा जमाया। रिवेन्यू रिकॉर्ड में यह बेचिराग मौजा दर्ज है।

बलहम्बा से ताजा माजरा आए एक प्रतिष्ठित व्यक्ति कुछ दिनों के बाद अपने परिजनों से मिलने के लिए घोड़ी पर सवार होकर जब बहु अकबरपुर गाँव के पास से गुजर रहा था तो उसने आश्चर्यचकित होकर देखा कि उस गाँव की चौपाल में बहुतेरे मुसलमान उत्साह में भरकर जमा हैं और हर्ष से ढोल बजाते हुए हथियारों से तैयार हो रहे हैं। उनका इरादा जानकर भी अन्जान बनकर उस बलहम्बावासी ने अपनी घोड़ी रोककर उन हुड़दंगियों से पूछा भाइयों ये कैसा उत्सव मना रहे हो? आखिर तुम लोगों का आयोजन क्या है? यह कैसी खुशी है। चौपाल में एकत्रित वे लोग बोले–भोले मानुष तुम्हें क्या मतलब? तुम अपना रास्ता पकड़ो। फिर कुछ सोचकर उनमें से एक मुसलमान बोला दरअसल हमें गद्दी–खेड़ी पर दहाड़ चढ़ा कर गए कई दिन हो गए। अब तक वहाँ कुछ खूबसूरत हिन्दू लड़कियां जवान हो गई होंगी और लोगों ने भी कुछ थोड़ा बहुत माल–असबाब जमा कर लिया होगा। हम ढोल बजाते हुए दहाड़ की शक्ल में वहाँ चढ़ाई करेंगे और जो कुछ हमारे हाथ लगेगा हम उसे जबरन लूटकर ले आएंगे। वहाँ किसकी हिम्मत है जो हमारा मुकाबला करेगा?

फिर ठीक है। वह व्यक्ति बोला–मगर इतना सोच लो अब गद्दी खेड़ी पहले की भांति अकेला और असहाय नहीं है। अब बलहम्बा उसके साथ ताजा माज़रा की शक्ल में मौजूद हैं। मुझे जरा बलहम्बा तक पहुँच जाने दो। जब तक तुम लोग गद्दी खेड़ी जाओगे पूरा बलहम्बा यहाँ चढ़ आएगा और वापसी पर तुम्हें न तो वहाँ कुछ हाथ लगेगा और न ही यहाँ अपने घरों में कुछ मिलेगा। अब सेर को सवा सेर मिल गया है। बलहम्बा यहाँ चढ़कर आएगा और तुम्हारा सारा गाँव साफ हो जाएगा। इतना कहते ही वह व्यक्ति जैसे आया था, वैसे ही अपनी घोड़ी पर सवार होकर सरपट भाग निकला।

अब बहु अकबरपुर के मुसलमानों को भय के मारे पसीना छूटने लगा। उनका सारा उत्साह ठण्डा पड़ गया। ढोल की थाप बन्द हो गई। बलहम्बा हिन्दुओं का बहुत बड़ा गाँव था। जिसका मुकाबला बहु अकबरपुर किसी स्थिति में भी नहीं कर सकता था। इसलिए चिन्तातुर होकर घबराहट में उन्होंने निर्णय लिया और उस घुड़सवार के पीछे अपने कुछ प्रभावशाली जवान तेज़ी से दौड़ाए और कहा कि खुशामद दरामद करके हर हालात में उस व्यक्ति को किसी प्रकार बलहम्बा जाने से रोको तथा सम्मानपूर्वक उसे यहाँ गाँव में वापस लाओ। अन्यथा अनर्थ हो जाएगा। बलहम्बा के सामने हम एक पल भी नहीं ठहर सकेंगे।

दहाड़ की तैयारियों में लगे उन खुराफाती मुसलमानों की किस्मत अच्छी थी जो कोई अनहोनी होने से बच गई। वे युवक उस व्यक्ति को आग्रहपूर्वक अपने गाँव की चौपाल में लौटा लाए। जहाँ यवनों ने कुरान की कसम खाते हुए विश्वास दिलाया कि उन्हें मालूम नहीं था कि ताजा माजरा की शक्ल में अब बलहम्बा गद्दी–खेड़ी की मदद पर आ गया है। आइन्दा वे कभी उस ओर जाने का इरादा हरगिज़ नहीं करेंगे। हमें अपनी करनी पर बड़ा पछतावा है। कृपया हमें माफ कर दें।

मगर गद्दी–खेड़ी के लोग अभी भी इतने नासमझ बने हुए हैं कि वे एक स्थानीय ब्राह्मण के घर में बनी किसी अज्ञात सैयद की कब्र पर प्रत्येक शुभावसर पर पूजा करने जाते हैं और अस्थल में बने पंचपीर की कब्र पर औरतें सजधज कर किसी विशेष अवसर पर जोत जगाने जाती हैं। हालांकि किसी गाँव वाले को आज तक यह नहीं पता कि किस अन्धविश्वास में पड़कर वे उन मुसलमानों की अराधना करते हैं जबकि किसी मुसलमान की इतनी मज़ाल नहीं है कि वे हिन्दुओं के आराध्य स्थल की इबादत करे। बेशक सदियों पहले मुसलमानों द्वारा उनके पूर्वजों को लूटा गया मान–सम्मान और माल–असबाब अब उनके स्मृति पटल पर किसी दु:स्वप्न की भांति विस्मृत हो चुका है **जिसका अन्त एक गौरवपूर्ण घटना से हुआ था।**

जानकर लोगों द्वारा बताया जाता था कि उन दिनों ग्राम मकडौली कलां की एक नव–यौवना विवाहित होकर गाँव गद्दी–खेड़ी में आई थी। अभी उसने अपनी ससुराल में अच्छी तरह पाँव भी नहीं रखा था और उसके आगमन की रस्में भी पूरी नहीं हा पाई थीं कि उस वीरांगना की सास ने उसे समझाते हुए कहा–बिटिया, अभी तुम्हारी ससुराल की यात्रा पूरी नहीं हुई है। **तुम्हें सोलह शृंगार करके सर्वप्रथम कलानौर के यवन नवाब की हवेली पर जाना होगा। जहाँ तुम्हें समर्पण के साथ नवाब की हवेली पर कौला पूजन की रस्म पूरी करनी है।**

अपनी सास का यह अप्रत्याशित आदेश सुन कर वह नववधु आश्चर्यचकित रह गई। गहरे विस्मय से भर कर वह स्वाभिमानी युवती बोली–माताजी यह आप क्या कह रही हैं? मैं आपका आशय बिल्कुल नहीं समझी। विवाहित होकर मैं आपके घर आई हूँ। मेरा उस यवन नवाब से क्या सरोकार है? मेरी लाज की रक्षा करने का दायित्व अब आपके घराने का है। **फिर आप ही मेरे सतीत्व की बलि चढ़ाने का काम कर रही हैं। यह हरगिज़ नहीं होने दूँगी।**

वास्तव में उस समय कलानौर के यवन नवाब ने केवल हिन्दुओं पर प्रथा के रूप में यह काला कानून बना रखा था कि उसकी रियासत में रहने वाली प्रत्येक नव यौवना जब विवाहित होकर नव वधु के रूप में अपनी ससुराल में पहली बार आएगी तो अपने पति के साथ सुहाग रात

मनाने से पहले लाज़मी तौर पर वह कलानौर जाकर यवन नवाब की हवेली का कौला पूजेगी। **इसका स्पष्ट शब्दों में अर्थ यह था कि उसकी सुहाग रात पर पहला अधिकार यवन नवाब का था जिसके लिए कहीं कोई अपील, वकील या दलील मान्य नहीं थी।**

अब यह पूरी तरह नवाब की पसन्द और इच्छा पर निर्भर था कि इस निन्दनीय कौला पूजन की रस्म वह कितने दिनों तक उस हिन्दू नव वधु से पूरी कराता था। यदि किसी अवसर पर ऐसी अभागी नववधुओं की संख्या अपेक्षाकृत अधिक हुई तो स्वाभाविक रूप से उनसे कौला पूजन कराने का दायित्व अकेले यवन नवाब के बस की बात नही थी तब **उसकी सहायता के लिए नवाब के कारिन्दे बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित रहते थे। मगर इतना निश्चित था कि किसी भी हिन्दू स्त्री को उस मुसलमान नवाब की ड्योढ़ी से अपवित्र हुए बिना लौटना सम्भव नहीं था। वह अपनी आबरु लूटा कर ही वहाँ से ससुराल लौट सकती थी।**

अपनी नई-नवेली बहु की हठधर्मितापूर्ण यह विचित्र बात सुनकर उसकी सास के पैर तले से धरती खिसकती नज़र आई। वह घबरा कर बोली-बेटी, ऐसा जुल्म मत करो। यदि नवाब को यह मालूम हो गया कि हमने उसकी परम्परा को तोड़ने का दुस्साहस किया है तो वह इतना जालिम है कि हमारी इस अवहेलना को कदापि सहन नहीं करेगा और हमें बर्बाद कर देगा।

यह सुनते ही उत्तेजित होकर वह वीरांगना अपनी सास से बोली-माताजी मैं भारतीय नारी हूँ जो अपना सतीत्व खोने से पहले मरना पसन्द करती है। यदि आपको अपने परिवार की जिन्दगी इतनी ही ज़्यादा प्रिय है और मरने से डरती है तो कृपा करके आप मुझे इसी वक्त उल्टे पाँव मायके भिजवाने का प्रबंध कर दीजिए। मगर इतना निश्चित है कि यवन नवाब का बिस्तर गर्म करने के लिए कौला-पूजन की आड़ में मैं कलानौर हरगिज़ नहीं जाऊँगी।

प्रचलित परम्पराओं के विरुद्ध अपनी पुत्रवधु का यह रौद्र रूप देखकर उसकी ससुराल का सारा परिवार स्तम्भित रह गया। उन्हें मालूम नहीं था कि यवन नवाब के गुप्तचर उसकी पूरी रियासत में निरन्तर घूमते रहते हैं जो जनता की सारी सूचनाएं और उनकी सभी गतिविधियां पल-पल में उस तक पहुँचाते रहते हैं। जैसे ही नवाब को पता चलेगा कि यहाँ विवाहित होकर नववधु आई और उसने नियमों का उल्लंघन करके कौला पूजन की प्रथा की अवहेलना की है तो आग बबूला होकर यमदूत की भाँति उसके सैनिक तुरंत यहाँ आ धमकेंगे और उनकी मृत्यु साक्षात क्षण भर में अपना रौद्र रूप धारण कर लेगी। अपने लड़के का विवाह तो दुबारा कहीं और कर लेंगे, मगर उसे साकार करने के लिए जीवित कहाँ बचेंगे। इसलिए पूरी निर्लज्जता से भयभीत होते हुए उन्होंने निर्णय लिया कि इसी क्षण अपनी उस दुस्साहसी पुत्रवधु को जो उनके परिवार का काल बन कर इस घर में आई है, तत्काल उसके मायके भेजा जाए। उनके परिवार की सुरक्षा का कायरतापूर्ण ही सही मगर जीवित बचे रहने का मात्र यही उपाय है।

थोड़ी देर पहले जिस घर में शहनाइयां बज कर वातावरण में खुशियां बिखेर रही थीं वहीं अब मौत जैसी भयानक खामोशी छा गई।

आखिर किंकर्तव्यविमूढ़ होकर घर के बड़े-बूढ़ों ने विचार किया कि इस नादान लड़की को अभी इसकी ससुराल लेकर चलते हैं ताकि इसका क्या कसूर है, पता लगाया जाए और उनसे क्षमा मांग कर मामला शान्त करके अपनी प्रतिष्ठा बचाई जाए। जब यह वाद-विवाद चल रहा था तो लड़की की माँ चुपचाप उसे घर के एकान्त में एक कोने तक ले गई और उससे पूछा कि - अरी कम्बख्त आखिर तूने ऐसा क्या किया है जो अपने खानदान की सारी इज्ज़त को अपने पाँव तले कुचल कर यहाँ चली आई है।

अब तक बुत बनी बैठी उसकी लाड़ली के सब्र का बांध आखिर टूट गया और वह अपनी माँ से लिपट कर फफक-फफक कर रोने लगी। उसने अपनी सास का यह फरमान भी कह सुनाया जिसे उसकी आत्मा ने स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था। अंत में बोली-माँ, अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करती? **तुमने अपनी बेटी का विवाह यवन नवाब से तो किया नहीं था। इसलिए मैं अपना धर्म बचाकर यहाँ चली आई हूँ। मैं किसी कुएँ-जोहड़ में डूबकर तो मर जाऊँगी मगर उस ससुराल के नर्क में हरगिज़ नहीं जाऊँगी, जो चौराहे पर अपनी इज्जत को अपने ही हाथों लौटाने का तमाशा बने देखना चाहता है।** इसलिए मैं स्वेच्छा से यहाँ चली आई हूँ। अब तुम्हीं बताओ क्या मैंने यह अपराध किया है?

यह सारी व्यथा-कथा सुनकर उस साहसी युवती की माँ का सीना गर्व से फूल उठा। उसने जोश में आकर अपनी पुत्री को छाती से चिपटा लिया और स्नेहपूर्वक उसका माथा चूमकर बोली-बेटी, तुमने बहुत अच्छा किया जो अपनी पवित्रता को बचा कर यहाँ चली आई। तुम्हें अपने परिवार से जो अच्छे संस्कार मिले थे तुमने उनको सार्थक कर दिया। फिर वह उन पुरुषों को जो अपनी पुत्री को वापस ससुराल ले जाने के लिए उतावले हो रहे थे, संबोधित करते हुए बोली कि किसी को कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। न ही हमारी पुत्री अब वापिस उस ससुराल में जाएगी। हम कोई अच्छा घराना देखकर इसकी पुनः शादी करेंगे। तब उसने अपनी पुत्री की सास द्वारा कहा गया वह शर्मनाक प्रस्ताव खुलकर उन्हें बताया जिसे सुनते ही वहाँ मौजूद सभी पुरुष अवाक् रह गए। वे क्रोधित होते हुए बोले -**यह प्रश्न केवल हमारी पुत्री का नहीं है बल्कि सारी हिन्दू जाति का है जिसे मलेच्छ ने बड़ी क्रूरतापूर्वक अपनी कामेच्छा का शिकार बनाया है।**

मकडौली कलां ग्राम में सार्वजनिक रूप से यदि कोई सामूहिक निर्णय लेना होता था बारह गाँव की पंचायत एकत्रित होकर कोई फैसला लेती थी। **इसलिए हुड्डा खाप की ओर से सारे गाँव के प्रधानों को एक निश्चित दिन पर वहाँ इकट्ठे होने के लिए संदेश भिजवाए गए।** सामाजिक रूप से जब बारहा एकत्रित हुआ तो गुप्त रूप से इस ज्वलंत समस्या पर परस्पर मंत्रणा की गई और उपस्थित सभी ग्राम प्रमुखों ने **लौटा नून डालकर तय किया** कि इस पंचायत का फैसला पूरी तरह

कलानौर के यवन नवाब का काला कानून-कौला पूजन...

गुप्त रखा जाएगा और एक दिन निर्धारित कर लिया गया जब इस प्रस्ताव को अंतिम रूप देने के लिए सभी गाँव के युवक अपने-अपने उपलब्ध देसी हथियार लेकर पौ फटने से पहले कलानौर पहुँच कर गुप्त रूप से यवन नवाब की हवेली को चारों ओर से घेर लेंगे ताकि उसे हिन्दुओं की मर्यादा भंग करने के लिए अच्छा सबक सिखाया जाए।

इस गुप्त षड्यंत्र की नवाब अथवा उसके किसी कारिन्दे तक को कोई भनक नहीं लगी और नवाब को तो सपने में भी यह कल्पना नहीं थी कि भावावेश में आकर स्थानीय जनता उसके विरुद्ध इस हद तक भड़क उठेगी कि उसकी मौत साक्षात रूप में उसकी आँखों के आगे नाचने लगेगी।

पूर्व निर्धारित दिन पर वजूह करके जब नवाब अपनी हवेली से बाहर निकला तो वह वहाँ का प्रलयंकारी दृश्य देखकर दंग रह गया। उसकी हवेली के सामने आवेश से भरा जनसमूह हथियारों से लैस होकर मरने-मारने को तैयार खड़ा था। हवेली का मुहासरा चारों ओर से बड़ी मज़बूती से किया गया था जहाँ परिन्दा भी पर नहीं मार सकता था। नवाब जिससे किसी को आँख मिलाने का भी साहस नहीं होता था, अपनी निश्चित मृत्यु देखकर दस्तबस्ता होकर गिड़गिड़ाने लगा और आइन्दा ऐसी नीच हरकत की पुनरावृत्ति न होने देने की कसम खाने लगा तथा उसे क्षमा मांगते हुए पंचायत प्रमुखों के पाँव पर गिरकर अपने प्राणों की भीख मांगने लगा। मगर उसकी किसी ने एक नहीं सुनी और भीड़ ने बड़ी बेरहमी से उसे उसकी हवेली पर ही मौत की गहरी नींद में सुला दिया जिससे कौला पूजन की यह लज्जाजनक प्रथा सदा के लिए समाप्त हो गई। फिर उसके किसी वंशज को यह निन्दनीय परम्परा दोबारा चालू करने का दुस्साहस नहीं हुआ।

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात उसी यवन नवाब का वारिस पाकिस्तान बनने पर जब वहाँ का सदर बना तो भारत सरकार के निमंत्रण पर अय्यूब खां अपने पैदायशी कस्बा कलानौर आया था। आदमी चाहे कितनी दूर भी चला जाए मगर वह अपनी जन्मभूमि को कभी नहीं भूलता। अपनी पुश्तैनी हवेली पर पहुँच कर सदर अय्यूब खां को जो प्रसन्नता हुई उसे वर्णन नहीं किया जा सका। तभी उसके बचपन की दाई मां ने वहाँ पहुँचकर जब उसे बेटा अय्यूब कहकर प्यार से उसके सिर पर हाथ रखा तो भावावेश में आकर सदर ने उसके पाँव छूकर आशीर्वाद लिया और सौ रुपये का नोट उसे भेंट किया।

*प्रधान संपादक और प्रबंध निदेशक
समाचार संघ, प्रेस सदन, गद्दी खेड़ी
रोहतक-124 001 (हरियाणा)
दूरभाष-01262-282174

पाठकों के पत्र

'गौरव घोष', वस्तुतः भारतीय संस्कृति का गौरव-ध्वज है।

डॉ. ज्ञान प्रकाश पिलानिया
सांसद् (राज्यसभा)
डी-148 ए/2, दुर्गा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.)

आपके द्वारा बड़ी कुशलतापूर्वक सम्पादित तथा सफलतापूर्वक संचालित और सुचारु रूप से प्रकाशित सराहनीय, संग्रहणीय और स्मरणीय 'गौरव घोष' पिछले कुछ समय से हमें निरन्तर प्राप्त होती रही है। जिसमें हिन्दुओं के प्रति विशेष रूप से विचारोत्तेजक आलेख बड़े प्रभावोत्पादक रहते हैं।

पंडित बी.एन.मुदगिल
प्रधान संपादक और प्रबंध निदेशक
समाचार संघ, प्रेस सदन, गद्दी खेड़ी
रोहतक-124 001 (हरियाणा)

वर्ष नव । हर्ष नव।

आया है नव संवत्सर
विश्व बने परिवार
मूल्यों की कंदील जले
मैं, तुम, वे सब ही मानव
जड़-चेतन, मानव-दानव
निर्मल मन हो स्वस्थ शरीर
हिंसा, द्वेष रहे निस्तेज
कलुष, क्लेश सन्ताप मिटें
'सत्यं, शिवं सुन्दरम्' का
मृषा अनृत का वंश मिटे
लिप्सा सिर्फ ज्ञान की हो
मेरा, तेरा, हम सबका

आत्मालोचन का अवसर
मगर पहले भवन बनें ये घर
घर-आंगन हों जगर-मगर
रहें परस्पर हिलमिल कर
रहें सचेतन आभ्यन्तर
सबके प्रीति पगें अन्तर
मन बन जाय प्रीति के घर
सुखी रहें 'चर और अचर'
स्वर हो चारों ओर मुखर
'ऋत' का फूले वंश अमर
और न कोई रहे मुखर
अपना हों 'यायावर'।

डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा 'यायावर'
86, तिलक नगर, बाईपास रोड,
फिरोज़ाबाद-283 203

Multiculturalism is doomed to fail; societies need a national identity

-David Cameron (British Prime Minister)

'We have got to get to the root of the problem, and we need to be absolutely clear on where the origins of terrorist attacks lie. That is the existence of an ideology, Islamist extremism.'

Today I want to focus my remarks on terrorism, but first let me address one point. Some have suggested that by holding a strategic defence and security review, Britain is somehow retreating from an activist role in the world. That is the opposite of the truth. Yes, we are dealing with our budget deficit, but we are also making sure our defences are strong. Britain will continue to meet the Nato's target for defence spending. We will still have the fourth largest military defence budget in the world. At the same time, we are putting that money to better use, focussing on conflict prevention and building a much more flexible Army. That is not retreat; it is hard headed.

Every decision we take has three aims in mind. First, to continue to support the Nato mission in Afghanistan. Second, to reinforce our actual military capability. As Chancellor Merkel's Government is showing right here in Germany, what matters is not bureaucracy, which frankly Europe needs a lot less of, but the political will to build military capability that we need as nations and allies, that we can deliver in the field. Third, we want to make sure that Britain is protected from the new and various threats that we face. That is why we are investing in a national cyber security programme that I know William Hague talked about yesterday, and we are sharpening our readiness to act on counter-proliferation.

But the biggest threat that we face comes from terrorist attacks, some of which are, sadly, carried out by our own citizens. It is important to stress that terrorism is not linked exclusively to any one religion or ethnic group. My country, the United Kingdom, still faces threats from dissident Republicans in Northern Ireland. Anarchist attacks have occurred recently in Greece and in Italy, and of course, yourselves in Germany were long scarred by terrorism from the Red Army Faction. Nevertheless, we should acknowledge that this threat comes in Europe overwhelmingly from young men who follow a completely perverse, warped interpretation of Islam, and who are prepared to blow themselves up and kill their fellow citizens. Last week at Davos I rang the alarm bell for the urgent need for Europe to recover its economic dynamism, and today, though the subject is complex, my message on security is equally stark. We will not defeat terrorism simply by the action we take outside our borders. Europe needs to wake up to what is happening in our own countries. Of course, that means strengthening, as Ms Angela has said, the security aspects of our response, on tracing plots, on stopping them, on counter-surveillance and intelligence gathering.

But this is just part of the answer. We have got to get to the root of the problem, and we need to be absolutely clear on where the origins of these terrorist attacks lie. That is the existence of an ideology, Islamist extremism. We should be equally clear what we mean by this term, and we must distinguish it from Islam. Islam is a religion observed peacefully and devoutly by over a billion people. Islamist extremism is a political ideology supported by a minority. At the furthest end are those who back terrorism to promote their ultimate goal: An entire Islamist realm, governed by an interpretation of Sharia'h. Move along the spectrum, and you find people who may reject violence, but who accept various parts of the extremist worldview, including real hostility towards Western democracy and liberal values. It is vital that we make this distinction between religion on the one hand, and political ideology on the other. Time and again, people equate the two. They think whether someone is an extremist is dependent on how much they observe their religion. So, they talk about moderate Muslims as if all devout Muslims must be extremist. This is profoundly wrong. Someone can be a devout Muslim and not be an extremist. We need to be clear: Islamist extremism and Islam are not the same thing.

This highlights, I think, a significant problem when discussing the terrorist threat that we face. There is so much muddled thinking about this whole issue. On the one hand, those on the hard right ignore this distinction between Islam and Islamist extremism, and just say that Islam and the West are irreconcilable — that there is a clash of civilizations. So, it follows: We should cut ourselves off from this religion, whether that is through forced repatriation, favoured by some fascists, or the banning of new mosques, as is suggested in some parts of Europe. These people fuel Islamophobia, and I completely reject their argument. If they want an example of how Western values and Islam can be entirely compatible, they should look at what's happened in the past few weeks on the streets of Tunisia and Cairo: Hundreds of thousands of people demanding the universal right to free elections and democracy.

The point is this: The ideology of extremism is the problem; Islam emphatically is not. Picking a fight with the latter will do nothing to help us to confront the former. On the other hand, there are those on the soft left who also ignore this distinction. They lump all Muslims together,

compiling a list of grievances, and argue that if only Governments addressed these grievances, the terrorism would stop. So, they point to the poverty that so many Muslims live in and say, ‘get rid of this injustice and the terrorism will end’. But this ignores the fact that many of those found guilty of terrorist offences in the UK and elsewhere have been graduates and often middle class. They point to grievances about Western foreign policy and say, ‘stop riding roughshod over Muslim countries and the terrorism will end’. But there are many people, Muslim and non-Muslim alike, who are angry about Western foreign policy, but who don’t resort to acts of terrorism. They also point to the profusion of unelected leaders across the Middle East and say, ‘stop propping these people up and you will stop creating the conditions for extremism to flourish’. But this raises the question: If it’s the lack of democracy that is the problem, why are there so many extremists in free and open societies?

Now, I’m not saying that these issues of poverty and grievance about foreign policy are not important. Yes, of course we must tackle them. Of course we must tackle poverty. Yes, we must resolve the sources of tension, not least in Palestine, and yes, we should be on the side of openness and political reform in the Middle East. On Egypt, our position should be clear. We want to see the transition to a more broadly-based Government, with the proper building blocks of a free and democratic society. I simply don’t accept that there is somehow a dead-end choice between a security state on the one hand, and an Islamist one on the other. But let us not fool ourselves. These are just contributory factors. Even if we sorted out all of the problems that I have mentioned, there would still be this terrorism. I believe the root lies in the existence of this extremist ideology. I would argue an important reason so many young Muslims are drawn to it comes down to a question of identity.

What I am about to say is drawn from the British experience, but I believe there are general lessons for us all. In the UK, some young men find it hard to identify with the traditional Islam practiced at home by their parents, whose customs can seem staid when transplanted to modern Western countries. But these young men also find it hard to identify with Britain too, because we have allowed the weakening of our collective identity. Under the doctrine of state multiculturalism, we have encouraged different cultures to live separate lives, apart from each other and apart from the mainstream. We’ve failed to provide a vision of society to which they feel they want to belong. We’ve even tolerated these segregated communities behaving in ways that run completely counter to our values.

So, when a White person holds objectionable views, racist views for instance, we rightly condemn them. But when equally unacceptable views or practices come from someone who isn’t white, we’ve been too cautious frankly — frankly, even fearful — to stand up to them. The failure, for instance, of some to confront the horrors of forced marriage, the practice where some young girls are bullied and sometimes taken abroad to marry someone when they don’t want to, is a case in point. This hands-off tolerance has only served to reinforce the sense that not enough is shared. And this all leaves some young Muslims feeling rootless. And the search for something to belong to and something to believe in can lead them to this extremist ideology. Now for sure, they don’t turn into terrorists overnight, but what we see — and what we see in so many European countries — is a process of radicalisation.

Internet chatrooms are virtual meeting places where attitudes are shared, strengthened and validated. In some mosques, preachers of hate can sow misinformation about the plight of Muslims elsewhere. In our communities, groups and organisations led by young, dynamic leaders promote separatism by encouraging Muslims to define themselves solely in terms of their religion. All these interactions can engender a sense of community, a substitute for what the wider society has failed to supply. Now, you might say, as long as they’re not hurting anyone, what is the problem with all this?

Well, I’ll tell you why. As evidence emerges about the backgrounds of those convicted of terrorist offences, it is clear that many of them were initially influenced by what some have called ‘non-violent extremists’, and they then took those radical beliefs to the next level by embracing violence. And I say this is an indictment of our approach to these issues in the past. And if we are to defeat this threat, I believe it is time to turn the page on the failed policies of the past. So first, instead of ignoring this extremist ideology, we — as Governments and as societies — have got to confront it, in all its forms. And second, instead of encouraging people to live apart, we need a clear sense of shared national identity that is open to everyone.

Let me briefly take each in turn. First, confronting and undermining this ideology. Whether they are violent in their means or not, we must make it impossible for the extremists to succeed. Now, for Governments, there are some obvious ways we can do this. We must ban preachers of hate from coming to our countries. We must also proscribe

organisations that incite terrorism against people at home and abroad. Governments must also be shrewder in dealing with those that, while not violent, are in some cases part of the problem. We need to think much harder about who it's in the public interest to work with. Some organisations that seek to present themselves as a gateway to the Muslim community are showered with public money despite doing little to combat extremism. As others have observed, this is like turning to a Right-wing fascist party to fight a violent white supremacist movement. So we should properly judge these organisations: Do they believe in universal human rights — including for women and people of other faiths? Do they believe in equality of all before the law? Do they believe in democracy and the right of people to elect their own Government? Do they encourage integration or separation? These are the sorts of questions we need to ask. Fail these tests and the presumption should be not to engage with organisations — so, no public money, no sharing of platforms with Ministers at home.

At the same time, we must stop these groups from reaching people in publicly-funded institutions like universities or even, in the British case, prisons. Now, some say, this is not compatible with free speech and intellectual inquiry. Well, I say, would you take the same view if these were Right-wing extremists recruiting on our campuses? Would you advocate inaction if Christian fundamentalists who believed that Muslims are the enemy were leading prayer groups in our prisons? And to those who say these non-violent extremists are actually helping to keep young, vulnerable men away from violence, I say nonsense.

Would you allow the far right groups a share of public funds if they promise to help you lure young white men away from fascist terrorism? Of course not. But, at root, challenging this ideology means exposing its ideas for what they are, and that is completely unjustifiable. We need to argue that terrorism is wrong in all circumstances. We need to argue that prophecies of a global war of religion pitting Muslims against the rest of the world are nonsense.

Now, Governments cannot do this alone. The extremism, we face, is a distortion of Islam, so these arguments, in part, must be made by those within Islam. So let us give voice to those followers of Islam in our own countries — the vast, often unheard majority — who despise the extremists and their worldview. Let us engage groups that share our aspirations.

Now, second, we must build stronger societies and stronger identities at home. Frankly, we need a lot less of the passive tolerance of recent years and a much more active, muscular liberalism. A passively tolerant society says to its citizens, as long as you obey the law we will just leave you alone. It stands neutral between different values. But I believe a genuinely liberal country does much more; it believes in certain values and actively promotes them. Freedom of speech, freedom of worship, democracy, the rule of law, equal rights regardless of race, sex or sexuality. It says to its citizens, this is what defines us as a society: To belong here is to believe in these things. Now, each of us in our own countries, I believe, must be unambiguous and hard-nosed about this defence of our liberty.

There are practical things that we can do as well. That includes making sure **that immigrants speak the language of their new home and ensuring that people are educated in the elements of a common culture and curriculum.** Back home, we're introducing National Citizen Service: A two-month programme for 16-year-olds from different backgrounds to live and work together. I also believe we should encourage meaningful and active participation in society, by shifting the balance of power away from the state and towards the people. That way, common purpose can be formed as people come together and work together in their neighbourhoods. It will also help build stronger pride in local identity, so people feel free to say, 'Yes, I am a Muslim, I am a Hindu, I am Christian, but I am also a Londonder or a Berliner too'. It's that identity, that feeling of belonging in our countries, that I believe is the key to achieving true cohesion.

So, let me end with this. This terrorism is completely indiscriminate and has been thrust upon us. It cannot be ignored or contained; we have to confront it with confidence — confront the ideology that drives it by defeating the ideas that warp so many young minds at their root, and confront the issues of identity that sustain it by standing for a much broader and generous vision of citizenship in our countries. Now, none of this will be easy. We will need stamina, patience and endurance, and it won't happen at all if we act alone. This ideology crosses not just our continent but all continents, and we are all in this together. **At stake are not just lives, it is our way of life. That is why this is a challenge we cannot avoid; it is one we must rise to and overcome.**

—This is the text of the speech delivered by Britain's Prime Minister David Cameron at the Munish Security Conference, setting out his view on radicalisation and Islamic extremism.

courtsy: The Pioneer

Secular India needs uniform civil code

Prafull Goradia

The Supreme Court's recent reminder to the Union Government about inaction on moving towards a common civil code for all communities has reopened a debate that began soon after independent India declared itself to be a secular republic. Article 44 of the Constitution says the state shall move towards adopting a uniform civil code. The state, sadly, has lacked the courage to do so

What Jawaharlal Nehru told Parliament on the need for a uniform civil code way back in 1956 is still Government policy: "I should like a civil code which applies to everybody but 'wisdom hinders'. If anybody else brings forward a Civil Code Bill, it will have my extreme sympathy." This is apropos of the Supreme Court's reminder to the Government on February 8 this year.

Nehru's comment reflected more a lack of courage than the call of wisdom. In all the 47 years since Nehru's death no one else has had the courage either. Goa, Daman and Diu continue to follow common family laws as listed in the two volumes on the subject authored by MS Usgaocar. The common civil code was enacted in 1867 by the Portuguese regime. It followed the Code Napoleon, as in Portugal. In 1979, a widely attended conference was inaugurated by Chief Justice YB Chandrachud. It was unanimously resolved that the same family law should continue to uniformly apply to all communities of the Union Territory of Goa, Daman and Diu. In his foreword to volume II, Justice GF Couto of the Bombay High Court proudly stated that the Union Territory had the privilege of already having a uniform civil code recommended by Article 44 of the Constitution. The UCC was conducive as well as decisive for national integration the judge went on to write.

If the Muslims of Goa, Daman and Diu find a uniform civil code acceptable, why not the community in the entire country? Is this not an indication that our politicians are unaware of the needs and aspirations of the citizens and are driven by their desire to appease maulanas? Another concrete example of the disconnect between Muslims and the Supreme Court was a recent judgement on Haj subsidy. The Ministry for Minority Affairs stated in September 2010 that the subsidy was un-Islamic. The All-India Mushawarat also believes that it should be gradually abolished. But the court stated that the subsidy was necessary to preserve the 'secular state' that Jawaharlal Nehru founded.

In his book, Impact of Secularism on Life and Law, 1973, Chief Justice MU Beg wrote that questions on personal law, such as marriage and succession, are not matters of religion. It would be against reason to urge that a rule of succession which is just for a Hindu or a Sikh family could be unjust in another family because it professes a different religion. Does this not imply that the preservation of sharia'h only for personal law and opposition to a uniform civil code are for ulterior reasons? In practice very few Muslims have more than one wife. Polygamy, however, hangs as a Damocles sword on the wife. Backed by triple talaaq, the freedom to almost instantly marry another woman must keep the wife under constant fear if she were to displease her husband. Justice MC Chagla regarded polygamy as an insult to womanhood and a discrimination between Hindu and Muslim women. Iran, Egypt, Morocco, Jordan, Syria, Tunisia and even Pakistan have abolished polygamy. In her work Resurgence of Indian Woman, Aruna Asaf Ali wrote that political parties have come to treat the minorities as vote-banks to be wooed through their priestly class. This class, she continued, has vested interest in keeping its flock backward. Triple talaaq, according to her, was disapproved by the Prophet.

Yet, Professor Tahir Mahmood, a former chairman of the National Minorities Commission, rejects the call of Article 44 of the Constitution for a uniform civil code for several reasons of his own. As quoted by MP Raju in his book Uniform Civil Code — A mirage, one reason was that it would be an imposition on unwilling Muslims of a wholly un-Islamic legal culture. Another reason was that the uniform civil code was being demanded by those prejudiced against Muslims. Yet another reason was that the mythology of a majority cannot be accepted as national history. Prof Mahmood has conveniently overlooked the fact that the law in India is mostly British given and not based on what he calls 'Hindu mythology'.

Even if we were to accept his contention, then why does he happily accept the IPC and CrPC? Why does he not want the hands of a Muslim thief cut off? Usury is haraam according to the Quran, but neither the Kabuli money lenders nor the Turkadas of south Gujarat are expelled from Islam. Moreover, Prof Mahmood appears not to consider women to be Muslim. Surely, many, if not most, of them resent the triple talaaq or the possibility of being one of several wives? Or else, why should Shabana Azmi prefer a uniform civil code as the only way to free Muslim women from the clutches of these injustices? This view was expressed over a century ago by eminent scholar of Islam. Prof Khuda Bakhsh, in whose name the famous library of Patna was established, wrote that there can be no two opinions as to the undesirability of polygamy. He was no less clear on the pernicious problem of Islamic divorce. He joined hands with poet Mohammed Iqbal in demanding a radical change in the treatment of women in this respect. He declared that in eastern Bengal divorce was the order of the day and wives were put away as we cast off our old clothes. No judicial inquiry, no positive proof, not a tittle of evidence of any sort was needed. Iqbal went on to assert that the only way in which a woman could get rid of a scapegrace of a husband was by becoming an apostate. (Quoted from Indian Islam by Murray T Titus)

courtsy : The Pioneer

God is back, but won't enter politics

-Utpal Kumar

Religion is making a comeback across the world after years of subjugation at the hands of 'secular' forces. Utpal Kumar analyses the trend and finds out why there is little role for Indian God in politics

It's rush hour of the gods in India. The Almighty has never been in so much demand as He is now. Statistically, the year 2010 saw a record number devotees — 87.5 lakh to be precise — visiting the Vaishno Devi shrine in Jammu & Kashmir. This is next only to Tirupati which, on an average, has 60,000-75,000 pilgrims visiting the temple complex everyday. Interestingly, most of the devotees are young, educated professionals ready to face terror threats — or even a Sabarimala-kind of stampede — for faith. This trend has also got echoed in a recent Centre for the Study of Developing Societies survey that not only notes the rising levels of religiosity in the country, but also finds the "urban educated Indians to be more religious than their rural counterparts".

This wasn't always the case. Not very long ago, it was fashionable to prophesise the end of religion. So much so that the very "spectacle of what is called religion" used to fill Jawaharlal Nehru with horror. And great American sociologist C Wright Mills wouldn't mind arguing in The Sociological Imagination (1959) that "in due course, the sacred shall disappear altogether, except, possibly, in the private realm". Such was the extent of disbelief that even the much-venerable Time magazine had to do a cover story in 1966: "Is God dead?" As a kid, in the late 1980s, even I could feel the 'secular' assault — real or imagined — as I would hear the RSS slogan, "Garv se kaho hum Hindu hain (Be proud of being Hindu)." This was the sign of defensiveness. Now one hardly hears such slogans. Do we? This sense of 'secular' triumphalism remained till the 1990s when Francis Fukuyama, in End of History and the Last Man, predicted the success of secularisation, and the Economist published God's obituary in its millennium issue.

The realisation, however, had by then set in that all was not well on the 'secular' front. Writing in his 1999 book, The Desecularisation of the World, Peter Berger pointed out that the world today "is as furiously religious as it ever was". Not stopping there, he conceded that his assessment in the 1967 book, The Sacred Canopy — that the decline of religion was inevitable in modern industrial societies — was erroneous. "Instead, the world is becoming more religious as it is becoming more modern," he said.

The conventional belief was that modernisation, with material prosperity, would result in the decline of religion. To our astonishment, it didn't happen that way. Modernity arrived, but the idea of divinity only got strengthened. And the very elements that were supposed to obliterate religion — technology, education, democracy and markets — combined together to make it stronger.

Young Educated And Religious

Let's first try to figure out why modern, educated professionals in India and elsewhere are turning religious. The answer can be found in the book, Sacred and Secular, by Pippa Norris and Ronald Inglehart. The book says that the level of belief in modern, post-industrial societies bears a strong correlation with the level of "existential insecurity".

Existential insecurity! For most educated, middle class individuals, it might mean 'professional uncertainty'. At first glance, P Surya Prakash, a Delhi-based private bank employee, won't look religious. But spend five minutes with him, and it will be obvious that he has never missed a trip to Vaishno Devi in the past six years. "A trip like this makes me feel better. I need divine help to survive this cutthroat competition," says he.

Then there is Sandeep Jiwan, an IT professional working in Bangalore, who is preparing to visit Vaishno Devi for the fourth consecutive year — he has also visited Tirupati twice. "I was out of job in mid-2008, primarily due to the economic downturn. For almost six months I had no work. That year I visited Vaishno Devi with my friends. And soon I got this job. Since then, the visit has become a part of my annual itinerary," Jiwan says.

Pavan K Varma, the author of Becoming Indian, believes this growing religiosity is a reaction to hasty modernisation. For him, religion is a refuge for the alienated urbanites, uprooted from the old communities they left behind in villages. Varma assumes that the 'traumatic' transition to modern life must be driving the new middle classes to seek out the consolation of God in the company of fellow believers.

This, to an extent, explains the growing religiosity of Prakash, who otherwise is hardly a religious person. He attends parties, occasionally drinks and prefers to have modern gadgets. And, of course, he wishes to get married in a Church-style wedding. For him there is no contradiction between his 'Western' lifestyle and religious orientation.

Meera Nanda tries to decode this paradox in her recent book, The God Market, where she quotes a scientist from the Indian Institute of Science as saying: "Many of us are double people. As scientists we are rational. But as we leave the laboratory and go home, we behave differently." This is the phenomenon of 'compartmentalisation' made famous in the Indian context by Milton Singer his 1972 book, When a Great

Tradition Modernises. Singer said that the country's unique "cultural metabolism" allowed Indians to keep religion and science in two separate boxes, each with its own norms and objectives. No wonder, Prakash could be both modern (Western) as well as religious at the same time!

Indian God is a recluse

Nirad C Chaudhuri was often driven to exasperation by the complexity of Hinduism. "The more one studies the details of the religion the more bewildering does it seem," he famously said. "It is not simply that one cannot form a clear-cut intellectual idea of the whole complex, it is not possible even to come away with a coherent emotional reaction."

It is this sense of Hindu ambiguity that explains most recent times riddles. After all, we immensely love our sadhus, but the moment they talk of politics — or even appeal for getting back black money from foreign safe havens — we turn ambivalent. Oh, it's not the domain of a holy man, we righteously tell ourselves. We want to clean up politics, but if a 'godman' makes any such effort, we believe he should focus on things spiritual.

This Hindu ambiguity also partly explains why, despite people in general moving towards the Right, the BJP performed so badly in the last Lok Sabha elections. The party lost both its vote-share — from 22.2 per cent in 2004 to 18.8 per cent in 2009 — as well as Lok Sabha seats — from 138 in 2004 to 116 five years later. The best indicator of the party losing its base among its traditional middle class constituency is its repeated failures to win the Delhi Assembly elections.

Political Hinduism, which primarily emerged as a reaction to Nehruvian secularism, saw itself coming out in a big way in the late 1980s when the country witnessed a series of cataclysmic crises — from the emergence of terrorism in Punjab and Kashmir to the Congress's pseudo-secular pretensions in the Shah Bano case. What also helped political Hinduism take shape was Rajiv Gandhi's decision to initiate the first wave of economic reforms, which along with the telecast of Ramanand Sagar's Ramayan, helped create, what Ashis Nandy calls, the transition of "traditional, localised Hinduism" to a religion more centralised and national in outlook. Lord Rama became the hero of the protesting middle class, which wanted to disown everything Nehruvian.

Everything went well till the late 1990s when the BJP's electoral headway was suddenly halted. Within a decade of the Ram Mandir movement, Hindus returned to what is mockingly called an "Indian norm". Hindu anger against 'Nehruvianism' had spent itself by then. Why did it happen? There can be two factors involved in this. One, Hindus, after lodging their strong protest through the Ram Mandir movement, lost their sense of grievance. They stopped seeing themselves at odds with the power structure, with which they could easily associate themselves and share similar optimism in the post-liberalisation era. This seems the reason why there is rise in middle class religiosity and yet general indifference towards what's called political Hinduism. This also explains why the BJP needs to reclaim its Rightwing position without overtly pursuing the 'Hindutva' cause.

The second reason was economic in nature. The forces of economic liberalisation, set in motion in the early 1990s, opened the floodgates of opportunities for the people, who rushed in from rural areas to the cities to take advantage of the new possibilities in the emerging economic order. To begin with they joined the movement in favour of political Hinduism, but soon their anger subsided, and they began looking for some kind of spiritual support that a village/local deity once fulfilled. This is where the 'God Market' stepped in, bringing to the fore "rush hour of the gods" — a term first used by H Neill MacFarland in 1967, in a book bearing the same title, to describe the proliferation of new expressions of religiosity among millions of Japanese left battered by World War II.

Thus emerged a number of new-age gurus who hardly pursued a matter of inherited faith. Instead, they provided a unique spiritual experience depending on the need of a particular individual. The proliferation of these 'godmen', obviously the result of globalisation, ensured that India becomes Hindu, but not in any way chauvinistic.

Why Allah is politically active

The same God who preferred to play recluse in India, didn't mind indulging in politics elsewhere. Let's take the example of Iran which, under the Shah, was more Western than the West; it is now in the grip of Islamist fundamentalists. The reason: The Shah moved too fast and too ahead without any real political reforms. Such was his zeal for Westernisation that he made his soldiers go through the streets tearing off women's veils with their bayonets and ripping them to pieces. Just before the 1979 Islamic Revolution, a West German foreign-office expert had told the Time magazine: "For too long, the Shah paid insufficient attention to political pressure groups from Right and Left, dismissed them as rabble-rousers, and was convinced that his lifting Iran economically at a rapid pace would satisfy most of his people. He also thought that he could keep things under control by the traditional method of ruling with a firm, indeed oppressive, hand. It clearly has not worked."

The moral of the story is that economic miracles often vanish in thin air in the absence of genuine political reforms.

This also explains the current Chinese uneasiness in the wake of last month's Egyptian 'revolution'.

Lebanese-born American university professor Fouad Ajami attempts to explain the reason behind the Arabian God being so politically-motivated. In his seminal work, The Arab Predicament, he writes: "The fundamentalist call has resonance because it invited men to participate... (in) contrast to a political culture that reduces citizens to spectators and asks them to leave things to their rulers."

The Arab world is like a political desert with no real political parties, no credible Opposition and, of course, no free press. As a result, the mosque became the place to discuss and deliberate politics. As the only place that cannot be banned in Muslim societies, it is where all the reactionary and revolutionary elements gathered, thus providing 'God' a greater role in politics.

The same thing seems to be happening in Kamal Atatürk's Turkey, which is now in the hands of an avowedly Islamist party. The President's wife, like most other women in the city, wears a headscarf, once regarded as a symbol of backwardness in that country.

So, it can safely be said that the Arabian God is politically active because people have no freedom there to participate in politics. This is the reason why the Arab Palace has been restless for the past few months, since the Jasmine Revolution in Tunisia. This is the reason why Kings, Presidents and Amirs of West Asia get so scared of the Arab street. And this is the reason why Indian politicians remain so indifferent to what's happening in their not-so immediate western neighbourhood. They know the Indian God won't join politics.

courtsy: The Pioneer, Delhi

A history of crimes against India

A review by M V Kamath

Stephen Knapp : Crimes Against India: And the Need to Protect its Ancient Vedic Tradition: I. Universe, Inc., New York; Pp 358 (PB), $24.95

TO read the history of India is to shed tears. Down the centuries outsiders have invaded the country and the people have paid dearly for it. The reason why, for instance, many Muslim rulers could conquer India was simply because Hindu rulers at home would not unite to fight a common enemy. As Knapp puts it in plain terms, "there was a continuous struggle and warfare between the various Rajput states and these rivalries it was which made it impossible for the Rajput rulers to join hands to oust the Ghazaniavids from the Punjab". When they could not – or would not – fight, they sought peace by giving their daughters in marriage to the invader. And so they survived.

Our history books are also, even today, hesitant to tell the truth about the conquerors. Knapp records that the Bahmani Sultans of Central India made a rule to kill 100,000 Hindus every year. In 1399, Timur killed 100,000 Hindus in a single day, plus more at times. Knapp quotes KS Lal, the historian, as saying that between 1000 AD and 1525 AD, The Hindu population decreased by as many as 80 million.

Says Knapp: "This probably is the biggest holocaust in the history of the whole world, right there in India". And he rightly asks: "Yet, not many people have either forgotten this threat to the Indian Hindu population or have never heard or learned about it? This negation of Indian history is itself a crime against its population, when the people should know and learn lessons from the past".

It is not just Muslim invaders who tried to destroy Hinduism – call it Vedic religion, if necessary – in India. The Portuguese rulers in Goa were no less cruel and barbaric. The inquisition they practised once every two years was even worse than any Muslim imposition of Islam on Hindus. One of the Jesuits was to write: "When I have finished baptising the people, I order them to destroy the huts in which they keep their idols; and I have them break the statues of their idols into tiny pieces, since they are now Christians. I could never come to an end describing to you the great consolation which fills my soul when I see idols being destroyed by the hands of those who had been idolators".

For all that and all that, Hinduism has survived and it is even getting accepted abroad, though Hinduism does not believe in conversion. A well known US media personality is quoted as saying: "Now we are all Hindus". In Russia, Knapp claims, one per cent of the population aver that they are Hindus. But, it would seem, the worst enemies of Hinduism are Hindus themselves. They are giving up their own Vedic heritage and culture which Knapp describes as "the last bastion of deep spiritual truth". As he puts it: "The Vedic culture and philosophy offers deep insight into spiritual knowledge that can be found nowhere else" and "it provides for levels of thought and knowledge of the soul and the Supreme, and the spiritual reality that are hardly matched elsewhere".

The book is divided into four parts. Part One recalls the

war against India's ancient traditions. Knapp insists that "we have to remember that a true religion paves the war for everyone to become spiritually aware and to establish his or her own relationship with the Supreme and the Vedic system is an ideal means for supplying that". Indeed, he says, "the spiritual principles in the Vedic system are universal, meaning they can be applied in any time or place in the universe". Part Two describes the battle waged by Indians to protect their culture and what the Ghaznis, the Ghoris, the Slave Sultans, the Khaljis, the Sayyids and the Lodis did to plunder temples and destroy places of worship and otherwise seek to eliminate Hindu culture and civilisation.

Knapp details the sacking of Chidambaram and Sri Rangam, the plunder of Puri's Jagannath Temple, Sikandar Lodi's treatment of Mathura, the destruction of Dwarka, the Govindaji Temple in Vrindavan, the Keshava Temple in Mathura, to name a few. What the Portuguese did in Goa is not forgotten, nor what Christian missionaries elsewhere did. One whole chapter is given to the impact of British rule in India.

Part Three deals with the flase image sought to be imposed on Indians by the vicious propagation of the Aryan Invasion theory and the damage it has wrought. Casteism is seen as a scourge of Hinduism or a perversion of a legitimate Vedic System that needs to be fought or at least seen in its proper perspective. Knapp also discusses such issues as the dowry system, bonded labour, malnutrition of poor children and saving the girl child. He spares none. As for the concept of 'Aryan' and 'Dravidian', Knapp insists that it was used by the British to establish a lower class of Indians who were oppressed by a higher class, and to enable the rulers to "divide the Indian people into quarreling factions". According to him, the idea of 'Aryan' and 'Dravistian' people as separate races is not only 'insidious', but "completely flase".

Part Four is more focused on Sanatana dharma and how to educate the GenNext on our Vedic heritage and establish an 'Open-door' policy of sharing our culture and traditions with others. Knapp is extremely upset over the manner in which state governments have taken over temples, literally robbing them of their income and using the revenues for purposes other than providing succour to Hindus. An agry knapp says: "The threat to the survival of Hindu civilisation is real … Hindus should not sit quiet, but must be active". He rubbishes the "elite of India" who damn any Hindu who stands up for his religion as having a "Hindutva mind-set" and one wishing to "saffronise the nation".

A chapter on Kashmir should be must reading. This is where Knapp says "as many as 60,000 people were killed, 750,000 rendeced homeless and 600 villages renamed with Islamic names". Adds Knapp: "Inspite of the protests by the Kashmiri Pundits, the world looked the other way and remained silent. India's government did next to nothing. Even Human Rights activists remained silent, it was another holocaust in India against Hindus with no help from anyone". There is one unspoken message in this work, to our secularists. It is: "Read it". But who wants to listen to Truth?

(IUniverse, 1663 Liberty Drive, Bloomington, IN 47403, www.iuniverse.com)

Diary of Events

March 1 Iran has protested against the already controversial logo of the 2012 Olympic Games, saying the emblem is racist and spells the word "Zion", the ILNA news agency reported. *The Times of India, New Delhi, p. 29.*

March 2 The CPM demanded a probe into the alleged "terror links" of E Ahamed, the Union Minister of state for External Affairs and president of the Indian Union Muslim League, an ally of the Congress. "Ahamed arranged passport for blast accused to flee". *The Indian Express, New Delhi, p. 9.*

_________ Nine years after the Godhra train burning, special court today sentenced 11 people to death and gave 20 life, terming it "a rarest of rare case", confirming also the conspiracy theory. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

March 3 Pakistan's Minority Affairs Minister Shahbaz Bhatti, a Christian who had sought changes in the controversial blasphemy law, was assassinated. On January 4, Punjab Governor Salmaan Taseer had also been gunned down by a police guard angered by his opposition to the blasphemy law. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

_________ ISRO scientists have discovered a giant underground chamber on the moon, which they claimed could be used as a lunar base by astronauts for interplanetary missions. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

March 4 "I come from a poor family. I started my career as a class IV employee and the only asset I possess is integrity." That was Sarosh Homi Kapadia describing himself last year at a felicitation ceremony for another judge. *The Times of India, New Delhi, p. 15.*

_________ As expected, film star and BJP candidate Hema Malini got elected to the Rajya Sabha from Karnataka in the byelections held on March 3. *The Pioneer, New Delhi, p. 8.*

_________ The US accused Iran of trying to "influence a series of uprisings in the West Asia through its proxies" like *Hezbollah* and *Hamas*, as it said that Tehran is involved with the opposition movements in Bahrain and Yemen. *The*

Diary of Events (contd.)

Pioneer, New Delhi, p. 11.

March 5 China announced a stunning 12.7% hike in its declared defence budget sending shivers down the collective spines of its neighbours including India, as well as around the globe. *The Times of India, New Delhi, p. 21.*

_________ The primary driver behind China's 12.7% hike in its declared defence budget and rapid modernisation of its armed forces is to deter US from interfering in its neighbourhood, especially vis-a-vis Taiwan. *The Times of India, New Delhi, p. 21.*

March 6 When the Supreme Court demanded, "What the hell is going on in the country?" suspecting some "hidden" interest was working overtime to shield Hasan Ali Khan, it had more than one reason for expressing its anguish over the Government's non-seriousness to prosecute money launderers and tax evaders holding black money accounts. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

March 8 The 1971 Indo-Pak war saw mass exodus by the Sodhas, a Rajput clan, from Sindh in Pakistan to Kutch in Gujarat. The trickle of migrants has not dried up since. One of them is Ram Singh Sodha, a one-time minister and PML(Q) MLA from Sindh. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

_________ Germany's new interior minister, appointed just last week, has already managed to upset politicians, church leaders and representatives of the Muslim community by saying that Islam is not a part of the German way of life. *The Times of India, New Delhi, p. 22.*

March 9 New Delhi: 2G scam accused Shahid Balwa, whose dubious Pakistani and underworld connections are being probed, also allegedly had some Chinese links that raised security concerns within Indian agencies. *The Times of India, New Delhi, p. 13.*

March 13 Bar council of India has recommended that all advocates in the country will soon have to accept fees only by cheque. And if the payment is to be made in cash, proper receipts must be furnished to the client and a register of the same will be required to be maintained by advocates. *The Indian Express, New Delhi, p. 9.*

_________ The earthquake-cum-tsunami packed such fury that it has moved Japan's main island, Honshu, by about 8 feet, it has also caused the Earth's axis to wobble by about 4 inches - something that experts say will lead to the shortening of the day by 1.6 microseconds, or just over a millionth of a second. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

March 14 The last time the *Jamiat Ulema-i-Hind* (JUH) hit the headlines was in November 2009 when it reiterated an old *fatwa* against singing *Vande Matram*. And now the supposedly nationalist organization- last week, at its managing committee's meeting in Delhi, cautioned Muslims against "vices" such as television, cinema and condoms. *The Times of India, New Delhi, p. 13.*

March 18 Panthers Party leader Harsh Dev Singh, raising the matter during zero hour, said that the nomenclature of Governor be changed as '*Sadr-e-Riyasat*' and that of Chief Minister as 'Wazir-e-Azam' "is a plot to project to the outside world that Jammu and Kashmir is a separate sovereign country." *The Hindu, Gurgao, p. 5.*

_________ Taking healthcare to the masses will be India's biggest challenge in the next two decades, and the ancient medicinal system of *ayurveda* is the only reliable way of doing so, Sam Pitroda, adviser to the PM, said. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 15.*

March 19 The security establishment has several specific details to link Shahid Balwa, his father Usman Ebrahim Balwa, Vinod Goenka, his father Krishna Murari and brother Pramod Goenka to the Dawood gang and Chhota Shakeel, Shahid Balwa and Vinod Goenka are currently in jail in connection with the 2G scam. *The Times of India, New Delhi, p. 10.*

March 20 The United States has indicated it will not oppose China's building of two nuclear reactors in Pakistan, and will give Beijing a pass on its non-proliferation commitments by allowing the deal to go ahead in spite of concerns that it will violate international guidelines governing nuclear trade. *The Hindu, Gurgaon, p. 9.*

March 22 Janata Party president Subramanian Swamy threatened to drag the name of Union Home Minister P Chidambaram and Congress president Sonia Gandhi's son-in-law Robert Vadra in the 2G spectrum scandal. *The Pioneer, New Delhi, p. 8.*

_________ A 5.5-foot cobra has been advised "complete bed rest" after a vet conducted a two hour, life-saving surgery on it here. A bulldozer had gone over it puncturing its abdomen. The intestines had popped out. *The Times of India, New Delhi, p. 15.*

_________ Search giant Google accused the Chinese government of blocking its Gmail service in the country, after month-long online disruption that coincided with an internet campaign calling for protests like those in the Arab nations. *The Times of India, New Delhi, p. 22.*

_________ WikiLeaks accused Prime Minister Manmohan Singh of deliberately misleading the public by claiming that the leaked US diplomatic cables allegedly pointing to payoffs to the MPs during a 2008 parliamentary trust vote were not authentic. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

March 23 After taking on former Telecom Minister A Raja, Janata Party president Subramanian Swamy has now targeted his old rival Home Minister P Chidambaram, and on similar lines. He sought Prime Minister Manmohan Singh's sanction to prosecute Chidambaram under Prevention of Corruption of Act. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

_________ Chinese scientists claim to have created a herd of

more than 200 cows that is capable of producing milk similar to that of humans. *The Times of India, New Delhi, p. 21.*

March 24 Syrian forces killed at least six people in an attack on a mosque in the southern city of Deraa, site of unprecedented protests challenging President Bashar al-Assad's *Baathist* rule, residents said. *The Times of India, New Delhi, p. 23.*

March 25 China has stepped up efforts to protect its nuclear technology export to Pakistan amid fears that the international Atomic Energy Agency may review it following the crisis in Japan. *The Times of India, New Delhi, p. 23.*

March 26 Stating that epic like *Ramayana* and *Mahabharata* develop the Spiritual Quotient (SQ) of an individual, senior BJP leader LK Advani said SQ is the best parameter to determine ability and aptitude of one. "Contrary to the principle of West that a person's capability and intelligence can be judged through his Intelligence Quotient (IQ) of Emotional quotient (EQ). *The Pioneer, New Delhi, p. 2.*

_________ Though Jaitley did not name Congress chief Sonia Gandhi or her parliamentarian son Rahul, the onslaught was directed against them. The family's differences with the PM are increasing each passing day. Jaitley added, "Members of a dynasty achieve the right to govern as they are born in the dynasty. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

_________ A flotilla of Indian Naval ships and two of its reconnaissance aircraft are presently exercising in the South China Sea, close to the vital sea lanes or shipping at the straits of Mallacca. *The Tribune, New Delhi, p. 11.*

_________ The Indian cricket team should win the World Cup, but Pepsi, the aerated soft drink which several top Indian cricketers endorse, should be 'destroyed' from the world, yoga *guru* Baba Ramdev said. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

March 27 Chinese People's Liberation Army chief General Chen Bingde has concluded his three-day Nepal visit seen as part of Beijing's efforts to strengthen its strategic presence in India's neighbourhood. *The Times of India, New Delhi, p. 21.*

March 28 A US scholar has claimed that the Bible may have been forged as several New Testament books were actually written by people who lied about their identity, pretending to be the apostles Peter, Paul or James. *The Times of India, New Delhi, p. 15.*

_________ British industrial designer Sir James Dyson has alleged that Chinese students at the country's universities are stealing scientific and technological secrets and passing them on to their country. *The Times of India, New Delhi, p. 16.*

March 29 In another stinging remark, the Supreme Court today slammed the government for not making any effort to probe sources of black money or the threat to national security even after "sleeping" over the issue since 2008. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

March 30 A senior leader of the Congress in Kerala alleged that rackets involving certain State leaders were operating from party president Sonia Gandhi's office even as leaders disappointed due to denial of seats for the April 13 Assembly election were preparing to form a separate group. *The Pioneer, New Delhi.*

March 31 Alleged Hindu extremists, Swami Aseemanand, has told the Ajmer Chief Judicial Magistrate that his confession to the CBI was under coercion from investigation agencies. And so was his letter allegedly suggesting he wanted to turn approvers. *The Indian Express, New Delhi, p. 2.*

April 1 In a state where the DMK gained political strength by whipping up emotional and violent anti-Hindu agitations in the late sixties and early seventies, Hindi-speaking people from different parts of the country have started finding acceptance in every walk of life, including politics. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 11.*

_________ The Punjab BJP claimed that it was the saffron party in its earlier avatar as the Jan Sangh that had rehabilitated the martyr's family politically post-Independence. Shaheed Bhagat Singh's family had chosen to align itself with the Jan Sangh and had even remained associated with it for a number of years. *The Tribune, New Delhi, p. 5.*

April 3 Tibetan leader the Dalai Lama announced his retirement from the political head of the Tibetan government expressed hope with the new would-be-representative to spread the message of peace and harmony around the world. *The Tribune, New Delhi, p. 4.*

April 4 An Election Commission team is expected to visit Cairo soon to assist the Egyptian authorities in making preparations for the elections in the Arab nation. *The Tribune, New Delhi, p. 11.*

April 5 Amidst celebrations over the Indian victory in the Cricket World Cup, senior BJP leader L K Advani said at the core of the current euphoria was the idea of India. The Stadium itself, it was a sight to be seen to be believed. Thousands of flags were being waved, songs like *Vande Mataram, Sare Jahan Se Achha* were being chanted. Emotions and feelings were virtually exploding, he added. *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

April 6 A senior Army commander has publicly expressed apprehensions about People's Liberation Army troops of China actually being stationed along the volatile 778-km-long LoC between India and Pakistan. *The Times of India, New Delhi, p. 13.*

_________ Noted social activist Anna Hazare began his fast-unto-death till the government agrees to form a joint committee comprising 50 per cent officials and remaining citizens and intellectuals to draft the anti-corruption Bill. *The Tribune,*

New Delhi, p. 1.

_________ EC flying squads in T N recover Rs 5 crore in gunny bags from the roof of a passenger bus. Politicians using bicycles and two-wheelers for transporting cash. Ambulances, police jeeps being used to carry money. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

April 7 Physicists at the Fermi National Accelerator Laboratory are planning to announce they have found a suspicious bump in their data that could be evidence of a new elementary particle or even, some say, a new force of nature. Bump in data suggests US atom smasher has made a spectacular discovery, physicists hold their breath. *The Times of India, New Delhi, p. 21.*

_________ *Jamaat-e-Ulema-e-Hind*, an organisation of Muslim clerics merged with the BJP accusing the Congress of hoodwinking the minority community all these years. Members of this Delhi-based group joined BJP in the presence of party chief Nitin Gadkari, who welcomes the minority leaders to his party-fold. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

April 8 Author Chetan Bhagat praised Gujarat Chief Minister Narendra Modi and asked him to play bigger role in national politics. Modi responded in a lighter vein that he did not know what would happen to Bhagat and ASSOCHAM president Dileep Modi, now that they had praised him. *The Indian Express, New Delhi, p. 6.*

April 9 A three-member team, including its most media-friendly face Ram Madhav, went to the site of the fast-unto-death. A letter from general secretary Bhaiyyaji Joshi was delivered to Anna, pledging the organisation's wholehearted support. *The Indian Express, New Delhi, p. 6.*

_________ Diplomatic relations between Pakistan and Iran are under a cloud after the Iranian government protested recruitment of Pakistani military officials into the Bahraini police forces. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 17.*

April 11 Hitting back at AICC general secretary Rahul Gandhi for commenting on his advancing age, Kerala CM V S Achuthanandan called the Gandhi scion "Amul baby". *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

April 12 Even as he thanked activist Anna Hazare for having praised his rural development activities in the state, Gujarat chief minister Narendra Modi claimed it was the RSS that had first educated him about Hazare's work in villages. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 10.*

_________ Janata Dal (S) leader and former Chief Minister H D Kumaraswamy raised a controversy by saying Mahatma Gandhi would have resorted to corruption had he been into politics today. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

_________ JD(S) leader HD Kumaraswamy's remarks that Mahatma Gandhi would have turned corrupt in the present-day politics, drew sharp reaction from leaders, including Anna Hazare, who wondered how the country could eliminate corruption if leaders talked like this. "If leaders are talking like this, how are you going to root out corruption?". *The Indian Express, New Delhi, p. 3.*

April 13 According to Foundation for National Security Research director Satish Kumar who edited the national security review, defence capability economic strength, effective population, technological capability and energy security. The US is at the top of the list on the basis of criteria followed by China, Japan and Russia. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

April 14 France's ban on the Muslim full face veil has triggered calls on militant online forums for armed retaliation against the country, a US-based terrorism monitoring service said. *The Times of India, New Delhi, p. 18.*

April 15 Gujarat Chief Minister Narendra Modi used the occasion of BR Ambedkar's birth anniversary to target Prime Minister Manmohan Singh for not casting his vote in the recent Assembly election in Assam. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

April 16 More than 300 people have been killed - including more than 120 on Friday and Saturday - since the uprising against Assad's regime began five weeks ago, according to right's groups. *The Times of India, New Delhi, p. 16.*

_________ Iran is building a concrete fence all along its 700-km long border with Pakistan to stop cross-border movements of terrorists, according to the country's defence minister. *The Times of India, New Delhi, p. 20.*

April 17 Vande Mataram echoed throughout the five days of Anna Hazare's fast at Jantar Mantar and elsewhere, wherever his supporters had assembled in different parts of the country. Is it witnessing a new kind of nationalism? Or is it that the past controversies surrounding Vande Mataram no longer bother the 21st century civil society? *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

April 18 Janata Party president Subramanian Swamy has sought sanction from Prime Minister Manmohan Singh to prosecute Congress president and National Advisory Council (NAC) chairperson Sonia Gandhi under the Prevention of corruption Act. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

April 19 President Mahmoud Ahmadinejad accused Tehran's arch-foe the United States of wanting to create tension between Iran and Arabs, adding that the attempt would fail. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

April 20 The prime witness in the Best Bakery case was "manipulated" and "coerced" to give false evidence before the trial court in Mumbai. This starting disclosure has emerged from an affidavit sent to the Chief Justice of Bombay High Court on June 17. Sheikh Yasmeen has implicated social activist Teesta Setalvad for her "fabricated deposition." *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

Diary of Events (contd.)

April 21 All attempts by the corporate honchos to avoid custody proved futile as they were sent to custody by the special court in connection with the infamous 2G scam. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

April 22 'Educational and research institutions are administered by people from IAS or similar administrative backgrounds, many without any real interest in education.' "Administrative autonomy dedicated budget for R&D, recruitment and promotion of faculty are some of the other issues that require attention." *The Pioneer, New Delhi, p. 2.*

_________ "Is every government agency sleeping," the Supreme Court asked in exasperation after the Centre said it primarily treated money stashed abroad as tax evasion and promised to probe the money trail and impact on national security after the offenders faced prosecution. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

_________ Senior RSS leader Indresh Kumar and former RSS ideologue Govindacharaya expressed support to the Tibetan struggle. Both leaders, who were the guests of the Tibetan government-in-exile, however, were not allowed to meet the Dalai Lama. *The Tribune, New Delhi, p. 9.*

_________ India's paradise on earth, Jammu & Kashmir, Isn't all that heavenly a place for a girl child. While in 2001, the number of girls per 1,000 boys (aged between 0-6) stood at 941, the latest Census found that it has plummeted to 859. At present, there are 82 fewer girls in the state per 1,000 boys. *The Times of India, New Delhi, p. 13.*

April 24 UK PM David Cameron said his country could look into London-based former Pakistan president Musharraf's extradition if Islamabad pursues the case legally. *The Times of India, New Delhi, p. 24.*

_________ It is making rounds among the physics community that the world's largest atom smasher may have detected a long-sought subatomic particle called the Higgs boson, also known as the "God particle." *The Times of India, New Delhi, p. 15.*

_________ According to a report in a leading British newspaper, the PM had initiated secret talks with Pakistani army chief Ashfaq Kayani 10 months ago through an unofficial envoy. The view in London seems to be that the peace process is being driven by the process is being driven by the US, which has a stake in reducing tensions between India and Pakistan. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

April 25 Sri Sathya Sai Baba, worshipped by millions as god incarnate died on Sunday in Puttaparthi, Andhra Pradesh, leaving behind a vast spiritual empire with estimated assets of at least Rs. 40,000 crore and no chosen successor to occupy his mantle. He was 85. *The Mint, New Delhi, p. 1.*

_________ China has permitted public worship of part of a skull believed to be of Xuan Zang, an eminent Chinese monk who travelled to India through the silk route in 630 AD and brought Buddhism to the country. *The Times of India, New Delhi, p. 16.*

April 26 Taliban militants tunneled almost 480 inmates out of prison in Kandahar overnight, whisking them through a 1,000-foot-long underground passage dug over months. A government spokesman said it was a 'disaster'. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

_________ Khalid Sheikh Mohammed mastermind of the 9/11 attacks, told interrogators that al-Qaida had hidden a nuclear bomb in Europe which would unleash a "nuclear hellstorm" if Qaida chief Osama bin Laden was captured. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

April 27 Mahatma Gandhi himself had labeled a just, ideal state as Ram Rajya, saying this could be established through the politics of development. Gadkari speaking in Ayudhia laid down what Ram Rajya meant: no cow slaughter social justice for all and service to the poor. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 15.*

_________ WikiLeaks founder Julian Assange said there are Indian names in the Swiss bank data list that are going to be made public. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 11.*

April 28 Lobsang Sangay, a 42-year-old Harvard scholar, has been elected by Tibetans across the world as the new Prime Minister of Tibet's government-in-exile, as reported by *The Indian Express*, earlier. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

April 29 AIMPLB has threatened the Government with nationwide protest's from the Muslim community if its recommendations on the new Waqf Act and the Right to Education Act are not given due consideration. The new Waqf Act for example attempt to make available the benefits on Waqf properties which are meant exclusively for Muslims to non-Muslims as well. That Waqf properties were all forcibly taken away from local Hindus usually after their land was invaded or through royal decrees, as the former BJP MP Prafull Goradia has noted in several articles published in *The Pioneer* and elsewhere. *The Pioneer, New Delhi, p. 8.*

_________ One of most popular US Ambassadors in India Timothy J Roemer announced his decision to quit sources said he had conveyed this to South Block about three weeks ago - long before New Delhi communicated its decision to reject bids from US companies for the $10-billion fighter aircraft deal. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

Select Articles

A love affair turns sour : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, March 1, 2011, p. 6.

The US thought it could buy Pakistan's loyalty by writing out billion-dollar cheques. As the spat over Raymond Davis shows, the US thought wrong.

Select Articles (contd.)

Verdict a blow to bogus activism : Sandeep B, The Pioneer, New Delhi, March 1, 2011, p. 7.

For nine years *jholawallahs* have been running a malicious campaign of calumny to distort the truth about the carnage in Godhra and overstating the facts of the violence that followed. The special court's judgement has exposed the lot.

The list is long : Bibek Debroy, the Indian Express, New Delhi, March 1, 2011, p. 15.

Expenditure needs to be decentralised, Central sector and centrally sponsored schemes must be scrapped, artificial distinctions between Plan/Non-Plan and Revenue/Capital must go. Why do we have these large number of schemes, with token amounts of expenditure?

Chinese threat looms large : Ashok K Mehta, The Pioneer, New Delhi, March 2, 2011, p. 6.

AK Antony should issue an operational directive for the defence forces to prepare and equip for a two-and-a-half front war.

CIA's Rambo runs amok : G Parthasarathy, The Pioneer, New Delhi, March 3, 2011, p. 8.

With tensions mounting between Pakistan and the US over the Raymond Davis affair, the flaws in American's AfPak policy have become more glaring than before.

Equations after the elections : Ashok Malik, The Pioneer, New Delhi, March 5, 2011, p. 6.

If Mamta Banerjee and J Jayalalithaa were to win handsome victories in the coming Assembly polls, we could witness an early general election.

Unjust, inequitable, morally wrong : S Gurumurthy, The Pioneer, New Delhi, March 5, 2011, p. 7.

Pranab Mukherjee revealed again the disproportionate sympathy nursed by the so-called *aam admi ka sarkar* for the rich. Tax giveaways may win accolades from India Inc and its media cheerleaders, but steals from the poor and middle class their future.

Caesar's Wife, Teflon-Coated : Arun Jaitley, The Times of India, New Delhi, March 5, 2011, p. 18.

Quashing the appointment of an incumbent CVC, the Supreme Court has merely stated the obvious. The decision to appoint a CVC must enhance institutional integrity, not render it suspect. The Supreme Court judgment on the CVC both shames and exposed the government.

Steeped in history : Dev Brat Vashisth, The Tribune, Spectrum, New Delhi, March 6, 2011, p. 3.

Ancient coins of the Indo-Greek era and broken pieces of earthenware belonging to the Maurya empire have been found in Naurangabad, near Bhiwani, in Haryana, writes Dev Brat Vashisth.

Revolution of rising expectations : Mayuri Mukherjee, The Pioneer, New Delhi, March 7, 2011, p. 7.

Arabs are rising against autocratic regimes not only because many of them are poor and unemployed but also because their rulers have failed to respond to a new society with a new economic order.

The glaring dark irony of Pakistan : Nadeem F Paracha, The Pioneer, New Delhi, March 8, 2011, p. 7.

Pakistan's growing urban middle class is still playing out a redundant fantasy: A flight of fancy that sees Pakistan as some monolithic and single-dimensional construction where everyone can be pigeonholed within a single concept of faith and language.

The wheel of time goes around eternally : Vijayendra Mohanty, The Pioneer, New Delhi, March 9, 201, p. 7.

There's no need to blindly ape the West. We must not forget that if we disown our history, our identity shall be lost in darkness, says Vijayendra Mohanty.

Deathly silence prevails in Pakistan : Gwynne Dyer, The Pioneer, New Delhi, March 9, 2011, p. 7.

While the people of Arab states are overthrowing dictators, Pakistan is sinking deeper into intolerant Islamic extremism. Emboldened by the meek response of the people to the assassinations of Salman Taseer and Shahbaz Bhatti, Islamist vigilantes will now become more brutal.

New Egypt and Muslim Brotherhood : Shadi Hamid, The Pioneer, New Delhi, March 10, 2011, p. 9.

Unlike the Muslim Brotherhood which enjoys considerable

grassroots support throughout Egypt, the secular opposition lacks strong parties and any organised presence outside of Cairo and Alexandria. In other words, if elections were held tomorrow, they wouldn't stand a chance. And, even if elections are held in six months, they might still have trouble competing.

The north pole is moving : Guy Adams, The Tribune, New Delhi, March 11, 2011, p. 14.

Movement of the magnetic north is causing problems for aviation, navigation and wildlife, says Guy Adams. Geologists believe that magnetic North Pole (which is different from the true North Pole, the axis on which the Earth spins) moves around due to changes in the planet's molten core, which contains liquid iron.

Trapped in hatred : Balbir Punj, The Pioneer, New Delhi, March 14, 2011, p. 6.

Pakistan is caught in a vortex of *jihadi* violence for which it has only itself to blame. A country founded on the ideology of hate couldn't have fared any better.

No Jamia ghetto, please : Samina Mishra, The Indian Express, New Delhi, March 15, 2011, p. 12.

There is a complex web of reasons that creates the sorry state of education among Muslims today. Ordinary Muslims face shocking levels of discrimination in our country. But the answer is not to create a walled-in ghetto.

Dalai Lama and destiny of Tibetans : B Raman, The Pioneer, New Delhi, March 15, 2011, p. 7.

To ensure that Tibetans do not lose their sense of nationhood, the Dalai Lama should select his successor before it's too late. This is all the more important to prevent Beijing from imposing its choice on Tibetans.

The fate of freedom : Pratap Bhanu Mehta, The Indian Express, New Delhi, March 17, 2011, p. 10.

At one level, revolutions represent this exhilarating moment, when people claim their dignity and freedom. They seem to be able to take their destiny in their own hands. On the other hand, the conditions under which revolutions succeed are rare indeed.

Mass killing of dogs that guard Kashmir : Hiranmay Karlekar, The Pioneer, New Delhi, March 17, 2011, p. 9.

The slaughter of street dogs in the Kashmir Valley calls for a full inquiry. The hapless animals served as watchdogs for the Army against infiltrators crossing the LoC and alerted security forces whenever danger was afoot.

Japan disaster worry for global economy : Erika Kinetz, The Pioneer, New Delhi, March 17, 2011, p. 9.

The devastating earthquake, the resulting tsunami and the threat of contamination from a damaged nuclear power plant have spooked financial markets. Investors are fretting about the effects of the disaster. If the world's third largest economy were to go under, the impact would be felt far and wide, says Erika Kinetz.

Issues involved in Somali piracy, Avoidable media frenzy in India : G. Parthasarathy, The Tribune, New Delhi, March 17, 2011. p. 9.

Sadly, there appears to be very little appreciation and even less understanding in India about the international challenges that Somali piracy poses. These negotiations are invariably between ship owners and pirates, with governments playing a discreet role behind the scenes.

The path to democracy : Premen Addy, The Pioneer, New Delhi, March 18, 2011, p. 6.

The Dalai Lama combines a rare blend of goodness and greatness that confounds his Chinese adversaries. His decision to devolve power is a master stroke.

Trapped in its web of deceit : Ashok Malik, The Pioneer, New Delhi, March 19, 2011, p. 6.

There is a growing absence of logic and a delusional rejection of reality as the rest of the world sees it in what the Congress has to say in its defence.

Killing the golden goose : Vivek Kulkarni, The Times of India, New Delhi, March 22, 2011, p. 20.

Ending the software technology parks of India scheme will adversely impact Indian IT. With the incentives taken away, a large number of India's small IT companies will be forced to fold up. Consequently, India will face job losses running into millions.

Treat it as a tip-off : Ashok Malik, The Hindustan Times, New Delhi, March 23, 2011, p. 12.

Select Articles (contd.)

Lack of political will is preventing the government from probing those named in the WikiLeaks expose, writes Ashok Malik. Admittedly, not every criminal incident can leave behind enough evidence to ensure a conviction. However, the truth can still be reached and the guilty shamed.

My publicity agent : Arun Shourie, The Indian Express, New Delhi, March 24, 2011, p. 13.

That's what Kapil Sibal appears to be, rather than my inquisitor. The rigorous VSNL agreement speaks for itself. Sibal should institute an inquiry into the conduct of ministers whose negligence has cost the country so much. The ministers? P. Chidambaram and Pranab Mukherjee, the finance ministers of the UPA governments!

Calculus of intervention : Hiranmay Karlekar, The Pioneer, New Delhi, March 26, 2011, p. 8.

The US-led, UN-sanctioned military intervention in Libya is possible not just about oil. It could be a preemptive strike against Al Qaeda in the Maghreb.

Uprising turns into Ikhwan rising : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, March 28, 2011, p. 7.

While reporting on the 'revolution' in Egypt, journalists with little or no knowledge of the country's past and present had waxed eloquent on the secular and liberal credentials of the protesters at Tahrir Square. Subsequent events and the spectacular rise of the Muslim Brotherhood have shown how horribly wrong they were in presuming that Islamism had been put to rest in Egypt. The *Ikhwanis* are preparing to take charge of Cairo.

China's growing military might, A major challenge for India : Harsh V. Pant, The Tribune, New Delhi, March 29, 2011, p. 8.

At a time when the US is increasingly looking inwards, China's military rise has the potential to change the regional balance of power to India's disadvantage.

Lessons from Fukushima : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, March 29, 2011, p. 6.

India should reconsider the policy of setting up new nuclear power plants. We do not need a terrible tragedy similar to that which is causing grief in Japan.

A second look at no-first use : Mayuri Mukherjee, The Pioneer, New Delhi, March 29, 2011, p. 7.

Thirteen years after Atal Bihari Vajpayee committed India to a no-first use nuclear strike policy, his Minister for External Affairs Jaswant Singh believes the time has come to revisit and revise this strategy. Referring to India's increasingly multi-dimensional security concerns, especially Pakistan's growing nuclear arsenal and deteriorating political situation, he has cautioned the Government against sitting in yesterday's policy. He has a point.

Caution over misadventure : G Parthasarathy, The Pioneer, New Delhi, March 31, 2011, p. 8.

Rather than go along with the West and back its duplicitous decision to 'intervene' in Libya, India has decided to chart its own independent course in foreign affairs.

A task not finished in 150, or 140, years : Nayanjot Lahiri, The Indian Express, New Delhi, March 31, 2011, p. 13.

The Archaeological Survey of India has a rich history. But it has atrophied over time, and is now not even sure of the date it was founded.

Minorities & Islamic Countries : Harendra Singh, The Hindu Voice, March 2011, p. 42.

Case of a Christian lady awarded death penalty in Pakistan which came to limelight after assassination of a state Governor, did result in international protests but by and large nothing is known in most other cases. So now is the time for rest of the world to rise, rescue and protect innocent suffering Minorities in Islamic Countries.

Minakha Hindus succeed in countering Islamist fanatics : Hindu Samhati Media, The Heritage Explorer, Feb. & March 2011, p. 4.

Minakha Hindus succeed in countering ILL-Designs of Islamist Fanatics if Hindus struggle, they will emerge victorious. Details events leading Hindus to put up a vigorous defence.

A temple complex in Turkey discovered : Newsweek, The Hindu Voice, March 2010, p. 16.

German-born archeologists Schmidt has uncovered a vast and beautiful temple complex, a structure so ancient built

Select Articles (contd.)

11,500 years ago - a staggering 7,000 years before the Great Pyramid, and more than 6,000 years before Stonehenge first took shape. Religion now appears so early in civilized life - earlier than civilized life, if Schmidt is correct - that some think it may be less a product of culture than a cause of it.

Making of a secular hero out of a communal Tipu Sultan : Nithin Sridhar, The Hindu Voice, March 2010, p. 18.

"With the grace of Prophet Muhammed and Allah, almost all Hindus in Calicut are converted to Islam .... I consider this as Jehad to achieve that object." Inspite of enormous evidences ...... which clearly show that Tipu Sultan was no "secular" and "tolerant" still this myth is being portrayed in academic circles.

A Dutch court compares, Hitler's 'Mein Kampf' and the Quran : Leon De Winter, The Hindu Voice, March 2010, p. 31.

What started as a trial against Geert Wilders for alleged Islamophobia has nearly turned into its opposite: a historical case about the message of the Quran. The Amsterdam court trying the controversial Dutch politician is now preoccupied with the question of whether this book, sacred to more than a billion believers, can be compared to one of the most vile publications in the history of Western civilisation - Hitler's "Mein Kampf."

Gaddafi divides the world : Dilip Hiro, The Pioneer, New Delhi, April 2, 2011, p. 7.

In the aftermath of the US-led intervention in Libya, it seems a Seven Years' War situation has descended on the lead nations of the world as they are actively frittering away the gains from the previous 60 years of collaboration.

Atrophied state, appalling cricket : Ashok Malik, The Pioneer, New Delhi, April 2, 2011, p. 6.

The World Cup has demonstrated how far behind Pakistan has fallen when measured against its neighbours. It has become a dysfunctional state.

Ignorance is not bliss : Devi Cherian, The Pioneer, New Delhi, April 3, 2011, p. 11.

All festivals are celebrated with enthusiasm by the youngsters. However, they are ignorant about the history behind them. Some of our young professionals do not even know the difference between the *Mahabharat* and *Ramayan!* They are well-versed with the *Bible* but that is due to their interest in the western world.

Indian cricket in safest pair of hands : Ayaz Memon, The Times of India, New Delhi, April 4, 2011, p. 12.

"A French general," writes Brearley, "was once tactlessly asked after a famous victory if it hadn't really been won by his second-in-command. He thought for some time before answering. 'Maybe so. But one thing is certain: if the battle had been lost I would have lost it." Dhoni learned from every move, leading from the front, not shying away from accepting responsibility for mistakes made. Had India flopped, Dhoni would have been roasted. That he hasn't gives good reason to toast him.

Of defence and defensiveness : Ronen Sen, The Indian Express, New Delhi, April 4, 2011, p. 11.

How India struggled to retain Russia as a defence partner after the USSR fell, and what that means for ties with the US.

The horror couple : S. Prasannarajan, The India Today, New Delhi, April 4, 2011, p. 16.

Perhaps India is the only democracy where the prime minister can still remain a rare man of decency, dignity and integrity even as he continues to be the leader of arguably the most corrupt government ever to rule India.

Mean-spirited Shahid Afridi : Sunanda K Datta-Ray, The Pioneer, New Delhi, April 7, 2011, p. 8.

His comments may not directly affect India-Pakistan relations but the sour taste they leave cannot but prejudice Indian opinion.

China troops in PoK worry India : Ashok Tuteja, The Tribune, New Delhi, April 7, 2011, p. 18.

The presence of Chinese troops in Pakistan-occupied-Kashmir (PoK) has been causing anxiety to New Delhi, which has started strengthening infrastructure along the border. They have been developing infrastructure in border region in Tibet and Xinjiang regions.

Case of Islamophobia : Venkata Vemuri, The Pioneer, Foray, New Delhi, April 10, 2011, p. 2.

Baroness Sayeeda Warsi, the first Muslim Cabinet Minister in the UK, took a lot of brickbats when she said in a highly

charged speech a few months ago that Islamophobia had "passed the dinner-table test" to become socially acceptable in the country.

Outburst of outrage : Balbir Punj, The Pioneer, New Delhi, April 11, 2011, p. 8.

The support extended by a large number of people to Anna Hazare shows few are willing to accept rampant corruption any longer.

It's a civilian coup d'etat : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, April 12, 2011, p. 8.

The inclusion of 'civil society' representatives in the drafting committee of the Lok Pal Bill raises several discomfiting questions. Where are we headed as a nation?

Throwing BRICS at dollars : P. Vaidyanathan Iyer, The Indian Express, New Delhi, April 15, 2011, p. 11.

An undervalued yuan gives the world's second-largest economy a huge, unfair advantage in trade. It is difficult to imagine settlements in yuan given this background. India hasn't had such a deal with any other country except the USSR.

Burqa ban a right decision : William Langley, The Pioneer, Agenda, New Delhi, April 17, 2011, p. 6.

France's banning of *burqa* is quite popular among the people. William Langley wonders why almost anything politicians do that the voters approve of tends to be termed *populisme*.

A perfect conspiracy to defeat Pakistan! : Nadeem F Paracha, The Pioneer, New Delhi, April 18, 2011, p. 9.

Since Pakistanis believe that their cricket team cannot lose a match, especially to Team India, they are convinced that there must be something more to the Mohali defeat than meets the eye! Colourful conspiracy theories are still doing the rounds......

The rot runs far too deep : Joginder Singh, The Pioneer, New Delhi, April 18, 2011, p. 8.

While drafting a stringent Lok Pal Bill is a good idea, this alone cannot help us fight the cancer of corruption. A lot more needs to be done.

It's off the records : Sarath Pillai, The Hindusthan Times, New Delhi, April 18, 2011, p. 10.

India's archival policy has been on the shelf for years. Someone needs to dust things off now, writes Sarath Pillai. A strong archival policy is vital not only to safeguard the RTI of the people but also to preserve their documentary heritage for posterity.

Capturing the popular imagination : JS Rajput, The Pioneer, New Delhi, April 19, 2011, p. 9.

Anna Hazare has given voice to mounting popular anger against the alarming decline in ethics, morals and probity in public life. Till now, there was nobody to articulate middle class sentiments on corruption. He has done so.

PM's fatal attraction : Manvendra Singh, The Pioneer, New Delhi, April 20, 2011, p. 8.

Any other Prime Minister would have considered his job well done by minding India's interests. Not so Manmohan Singh who is obsessed with Pakistan. Normalisation of relations with Pakistan has obviously emerged as his fatal attraction.

Whose Hazare : Compiled by Manoj C. G., The Indian Express, New Delhi, April 21, 2011, p. 11.

The editorial claims that Hazare appealed to many Indians because of two reasons-by putting up the image of Bharat Mata on the venue of his fast and invoking the ideals of Chhatrapati Shivaji, Swami Vivekananda and Mahatma Gandhi, and his own record of unblemished public life and patriotic credentials.

An empire's shocking decline & fall : Matthew Norman, The Tribune, New Delhi, April 23, 2011, p. 13.

The real biggest issue that faces America today is that America, despite a recovering economy is broke, dispirited, bamboozled and petrified. It is terrified by the suddenly bleak middle-class future faced even by graduates, by the prospect of losing its supplies of cheap oil from rebellious client kingdoms in the Middle East, and by the staggering speed with which China threatens to supplant it.

A free state has the right to self-decence : Swapan Dasgupta, The Times of India, New Delhi, April 24, 2011, p. 16.

On the one hand are the middle class champions of muscular nationalism-the sort that sheds tears when Lata

Select Articles (contd.)

Mangeshkar sings '*ae mere watan ki logon*', gets goose pimples on hearing Vande Mataram and waves the flag enthusiastically at cricket matches. They are a throwback to the 1950s but their biggest support comes from the generation that discovered nationalism with the Kargil war, the 26/11 attacks and one-day cricket. They have a single-minded commitment to India's emergence as a global power and have little time for either separatists or Maoists. Unapologetically committed to achievement, their heroes tend to be the likes of Sachin Tendulkar, APJ Abdul Kalam, in some cases, even Narendra Modi. They are the pillars of a resurgent Middle India.

The End : V Shoba, The India Express, Eye, New Delhi, April 24-30, 2011, p. 16. & 17.

Have you forgotten how to write, now that you only type or SMS? L Venkatesh, an engineer, had to sit in a bank and practise his own signature for half an hour, as he hadn't "written a cheque in years".

Between today and tomorrow in Syria : Gwynne Dyer, The Pioneer, New Delhi, April 25, 2011, p. 9.

The ruling Baathists in Syria are determined to put down the anti-Government protests that continue to rock the country and threaten the incumbent regime. But suppression may not result in Syrians abandoning their demand.

Secular space rapidly shrinking in 'new' Egypt : Maggie Michael, The Pioneer, New Delhi, April 25, 2011, p. 9.

As Egypt's military rulers envision a democratic country, ultra-conservative Islamic groups have begun to play an active role in politics, writes Maggie Michael. Tens of thousand of Egyptians led by hard-line Islamists escalated their protest Friday over the appointment of a Coptic Christian Governor in southern Egypt, deepening mistrust between religious communities during the bumpy aftermath of Egypt's revolution.

No better than politicians : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, April 26, 2011, p. 8.

Representatives of 'civil society' in the Lok Pal Bill drafting committee increasingly appear to be no different from those whom they berate and ridicule.

Tamil Takeover : Compiled by Manoj C. G., The Indian Express, New Delhi, April 28, 2011, p. 11.

"Dravidian race" theory was first articulated by Bishop Robert Caldwell. Evangelist propaganda, *India is a Christian Nation*, builds upon the foundations of Caldwell and Pope to reinterpret Tamil spirituality as a part of Christianity. The book, it says, is "part of a global network working on a three-pronged strategy to dismember India, using religion, violence and social fissures - Islamic radicalism with Pakistan as the epicentre, Naxalism with Chinese support and the caste-communal conflicts fuelled by the West."

BRICS in the Great Wall : G Parathasarathy, The Pioneer, New Delhi, April 28, 2011, p. 8.

Despite talks of a multipolar world, China clearly wants a bipolar one that it will share with the US. India must cautiously engage with both powers.

Beware of China's new roads : Claude Arpi, The Pioneer, New Delhi, April 28, 2011, p. 9.

Apart from the increasing presence of PLA troops in PoK, India must take cognizance of the fact the China is fast spinning a web of roads and railway networks in the region that effectively traps India within its own borders and poses a serious security threat. India has ignored similar Chinese acts of aggression in the past and has paid heavily for it. New Delhi must not repeat its mistakes.

National security strategy is fundamental : Gurmeet Kanwal, The Tribune, New Delhi, April 29, 2011, p. 11.

India faces complex threats and challenges spanning the full spectrum of conflict from nuclear to sub-conventional. These include unresolved territorial disputes with neighbours, insurgency, left wing extremism and urban terrorism. Despite prolonged exposure in dealing with multifarious challenges, India's national security is poorly managed. The foremost requirement is formulating a comprehensive national security strategy.

A ship about to sink : Pritish Nandy, The Hindu Voice, April 2011, p. 21.

They are not just robbing you, me, and the exchequer. They are destroying institutions, subverting laws, vandalising our heritage and history, and trying to build a dazzling, amoral edifice of crime. Loss to the nation Rs. 2000000000000 Manmohan breaks Raja record.

Book Reviews

V. N. Sekhri : 'A Lament - Was Partition Inescapable'?, New Age Books, A-44, Naraina Industrial Area, Phase-I, New Delhi - 28 (2007), Rs. 350/-

All of us have heard stories of partition and have also read about it in history books. Here is a real life story of a man who had gone through all those circumstances.

The author has penned down in the book his memories of the lost culture, the pain and agony caused by partition, his movement from the other side of the shadow line i.e., Pakistan to India, his post-partition struggles and his tussle with life.

The book is an explicit picture of all those who had to leave their hearth and home and adjust to the multifarious demands of the new land and situations.

Though the book is the author's autobiographical account, it actually epitomizes all those who have suffered, struggled and survived the tyranny, chaos and pain of partition. The book depicts the angst of the people who were trapped unaware into the violence created by the Muslim League of India and which finally led to their migration from the land of their forefathers. It would be of special interest to the generations born and brought up on both sides of the border line, after the Great Divide.

Partition of India is a land mark in the history of the world as an event of "non-civilisation". It provides material which no scholar working on this subject can ignore. In fact there is a lot which should be taken note of by the practioners of politics today.

The author, Shri V. N. Sekhri, was born in a business family in 1922 at Sialkot, a flourishing and historical town in Pakistan. He had an eventful childhood which matured into an impassioned young life of earnest social activities. The family lost everything in 1947 but re-established themselves by sheer hard work and devotion.

David Frawley : Universal Hinduism, Voice of India, Rs. 200/-

In *Universal Hinduism*, American scholar and Hindu convert David Frawley sets out to clear up this confusion. He takes the reader through the basic data that set Hinduism apart from the other, and specific Hindu schools from one another and from Buddhism. He also discusses what it has in common with the world's eliminated and surviving Pagan religions, and sometimes with forms of Islam and Christianity too. In his typical kindly style, he gives every practice and every belief its due, but keeps his focus on the potential of Sanatana Dharma to heal modern society as well as to lead man to enlightenment.

On the contention between Hindu nationalism and Hindu universalism, Frawley charts a middle course. Of course, Hinduism is tied to India, yet at the same time it is ever more present on all continents and has even welcomed some unsolicited native converts there, besides sharing some values and practices with other religions.

Knowledge is preferable to faith. At inter-faith conferences. Hindu usually cut a sorry figure, ill-prepared as they are; but at "inter-knowledge" meetings, they would have more to offer. The Hindu-Buddhist network of teaching traditions aims for "liberation through knowledge" rather than "salvation through faith". Defensively, they should uphold religious diversity (on a par with the concern for biodiversity) against the levelling campaigns of missionary creeds and consumerism. But in a forward perspective, they should also communicate their own tradition of respect for all that is sacred and integrate it with the modern world.

It's an enlightening account of an ex-Christian on Hinduism and its ethos.

- Koenraad Elst, The Pioneer

Four books stand out this season - on western civilization, first-century India, China and Islam and an American defence of the Iraq invasion.

Good books, like rare minerals, have to be mined. Rich rewards follow. Four big-idea books stand out this season:

Let's start with economic historian **Niall Ferguson's "Civilization: The West and The Rest**", released globally just a couple of weeks ago. He is presently Laurence A Tisch professor of history at Harvard University.

"Civilization: The West and The Rest" is an ambitious book. Its central argument is that western civilization forged ahead of the rest of the world after 1500 AD because it deployed six "killer applications": science, medicine, consumerism, competition, property rights and the work ethic.

Ferguson understandably does not dwell on six other "killer" applications that marked the west's post-1500 AD encounter with the east: slavery; invasive European settlements in the New world; the colonization of Asia and Africa; genocide of Indigenous Aborigines; indentured labour and displacement of indigenous peoples in north America. Each advanced the prosperity of the west, though not in quite the way Ferguson's book sets out.

"If, in the year 1411, you had been able to circumnavigate the globe," Ferguson writes, "you would probably have been most impressed by the quality of life in Oriental civilizations. By contrast, Western Europe in 1411 would have struck you as a miserable backwater, recuperating from the ravages of the Black Death... and seemingly incessant war. And yet it happened.

With their intellectual debts to Oriental mathematics, astronomy and technology, produced a civilization capable not only of conquering the great Oriental empires and subjugating Africa, the Americas and Australasia, but also of converting peoples all over the world to the Western way of life."

Ferguson ends by conceding that western civilization is declining to its pre-1500-AD subordinate position today, vis-a-vis China and India.

Sanjeev Sanyal's well-researched book "The Indian Renaissance: India's Rise After a Thousand Years of Decline", serves as an excellent counter point to Ferguson's arguments. A former economist with Deutsche Bank, Sanyal puts the Asian, especially Indian, civilizational story in perspective. "Many kingdoms," he writes, "rose and fell during the centuries that followed the decline of the Mauryan empire

Book Reviews (contd.)

but India remained a major economic power. According to Angus Maddison's estimates. India accounted for 33 per cent of the world economy in AD 1. India's share was three times the share of Western. Europe and was much large than that of the Roman Empire as a whole (21.5 per cent). China's share was 26 per cent of world GDP and was significantly less than that of India. In other words, India was by far the world's economic superpower at that time."

Graham E Fuller's "A World Without Islam" is a brilliant analysis of how the geopolitics of Eurasia rather than crusading religions caused internecine warfare between the three Abrahamic faiths - Islam, Christianity and Judaism. A former CIA spook, Fuller traces the spread of Islam not only to West Asia, Europe and north Africa but also, interestingly China. "Few in the west," he writes, "are aware of the close connections between Islam and China, yet China ranks high among countries containing large Muslim populations: some twenty million Muslims are scattered across the country - more than in most Arab countries."

Former US defence secretary Donald Rumsfeld's reading of West Asia geopolitics in his 815-page justification of the Iraq war, "**Known and Unknown: A Memoir**", is more simplistic than Fuller's. America's most divisive defence secretary since Robert McNamara, Rumsfeld fought a running battle with secretary of state Colin Powell. "If you feel there's a war between the State and Defence departments," he told President George W Bush. "it takes two to fight, and DoD (Department of Defense) isn't fighting. What is happening is hurting you. If it gets to a point where the solution is for me to leave, I will do so in a second." He was finally forced to, in November 2006, as Iraq spiralled out of control.

- Minhaz Merchant
The Times of India

Lt Gen S K Sinha : Reminiscences and Reflections, Gyan, Rs. 650/-

Lt Gen Sinha has been regularly writing non-controversial features in the newspapers while in retirement. He has now collected his contribution in a book form. In this book, he his divided them into four parts. The first part contains his memories of the days in the Army. The second part deals with various aspects of national security like the secessionist movement in the country and the festering Kashmir problem. The third part is concerned with insurgency in the Northeast as well as the communist variety. The last part contains a miscellany of a variety of subjects ranging from the role and office of Governors to supremacy of civil power and some controversial subjects like the misuse of national swards, etc.

- Sanjoy Bagchi,
The Pioneer

M.J. Akbar : Tinderbox - The Past and Future of Pakistan, Harper Collins, A-53, Sector 57, Noida-201301, Rs. 499/-

Akbar himself calls the book "a history of an idea as it weaved and bobbed its way through dramatic events with rare resilience, sometimes, disappearing from sight, but always resurrected either by the will of proponents or the mistakes of opponents."

"Fears of Pakistan disintegration ... are highly exaggerated" and is emphatic that "driven by the compulsions of an ideological strand in its DNA, damaged by the inadequacies of those who could have kept the nation loyal to Jinnah's dream of a secular Muslim-majority nation, Pakistan is in danger of turning into a toxic 'jelly state', a quivering country that will neither collapse nor stabilise."

Akbar contends that General Zia's decision in 1976 to change the motto of Pakistan army to *Jihad fi Sabil Allah*, in the belief that Islam alone could confront Hindu India, was a conscious strategic move, not a populist one as often argued.

Overall, it's an outstanding work, which those pursuing Pakistan studies and students of Islamic politics will find very useful.

- Shaikh Mujibur Rehman
The Hindu, Gurgaon

Post Cards

Story of a Christian joint family

Guwahati, February 22, 2011 (Reuters) - The more, the merrier is certainly true for Ziona Chana, a 66-year-old man in India's remote northeast who has 39 wives, 94 children and 33 grandchildren — and wouldn't mind having more.

They all live in a four storied building with 100 rooms in a mountainous village in Mizoram state, sharing borders with Myanmar and Bangladesh, media reports said.

"I once married 10 women in one year," he was quoted as saying. His wives share a dormitory near Ziona's private bedroom and locals said he likes to have seven or eight of them by his side at all times.

The sons and their wives, and all their children, live in different rooms in the same building, but share a common kitchen.

The wives take turns cooking, while his daughters clean the house and do washing. The men do outdoor jobs like farming and taking care of livestock.

The family, all 167 of them, consumes around 91 kg (200 pounds) of rice and more than 59 kg (130 pounds) of potatoes a day. They are supported by their own resources and occasional donations from followers.

"Even today, I am ready to expand my family and willing to go to any extent to marry," Ziona said.

"I have so many people to care (for) and look after, and I consider myself a lucky man."

Ziona met his oldest wife, who is three years older than he is, when he was 17.

He heads a local Christian religious sect, called the "Chana," which allows polygamy. Formed in June 1942, the sect believes it will soon be ruling the world with Christ and has a membership of around 400 families.

Post Cards (contd.)

One More Swamy

A section of the RSS is lobbying hectically to bring Subramanian Swamy into the BJP, arguing that Swamy has been more effective than any of their own leaders in taking on the Government. Arun Jaitley and Sushma Swaraj are not amused. Said one of them "We already have enough *swamis* in the party. Why do we need another one?"

- The India Today

Kashmir Pakistan's Qabristan

The claim in the UN Forum by Pakistan Representative, 'Made' a speech laced with (Green) lies including "Kashmir was never a part of India" (he should have claimed, it was a part of Pakistans' Qabristan from 1600 AD onwards!!! What is the objection for a born liar to lie after a million lies!) Moghuls ruled our J&K; so did Rajas and Nawabs.

These stunts we are used to; and all the imaginary tales and white lies the whole world is aware of. Say's SL Thatu in a letter to Kashur Gazette.

- The Kashur Gazette

Looking for knights in black robes

Judges must eschew any suggestion that duties of the judiciary are owed to the electorate; they are owed to the law which is there for peace, order and good governance. Leading an exemplary life is the highest form of ethical conduct. This is the keystone of our modern codes of judicial conduct. We need a clean man in the black robe to uphold the independence and the integrity of the judiciary. Action is an extension of values.

- S.H. Kapadia, Chief Justice of India,
The Tribune

'Sai Baba did everything govt could not'

Former speaker Ramesh Kumar was sobbing as he said Sai Baba did everything the government could not. "I'm not in a state to explain what he meant to me," he said, on the death of Sai Baba.

- The Times of India

Parsees extend warm welcome to Modi

Narendra Modi was welcomed by the Parsi community to celebrate 1290 years of the consecration of Zoroastrian holi fire. Persian are the smallest minority community (70,000) in India Accompanied by their high priest Khurshid Dastoor Ji, the community wishing him Good luck desired that he should attend 1300 years of consecration of the holi life ten years hence, as the prime minister.

-Rathin Das, The Pioneer

Sanskritik Gaurav Sansthan Library
Acknowledgment

Periodicals Received

The Nationalist Vol.3 Issue 3 Ed. Tarun Vijay, Dr. Shyama Prasad Mukherjee Research Foundation, New Delhi.

Uday India (weekly) Chief editor Prakash Nanda, ed. Deepak Kumar Rath, Delhi-21, Price Rs. 25/-

Hindu Voice (monthly) ed. P Deivamuthu, May 2011, Mumbai-400062, Price Rs. 20/-

Kashur Gazette (weekly) Ed. (group) Sushil Vakil, Pub. Preet Vihar, New Delhi-92, Subscription Annual Rs. 150/-

Jan Sangh Today (monthly) Ed. Praful Guradia, Darya Ganj, New Delhi-110002, Annual Subscription Rs. 100/-

Bureaucracy Today (monthly) Ed. & Pub. Suhaib A Ilyasi, New Delhi-110001, Subscription Annual Rs. 540/-

The movements of India; May 2011, Ed. S.R. Darapuri and others, Off. Infantry Road, Bangalore, Karnataka, Subscription Annual Rs. 100/-

Bharat Speaks (Quarterly) Ed. J. P. Sharma, Pub, Shiv Shakti Nath Bakshi Patriots Forum's Publication, New Delhi-110075, Subscription Rs. 1000/-

Books received and acquired

Stephen Knap; Crimes against India; And the need to protect is Ancient Tradition, I. Universe Ins, New York pp. 358(PB) Dollar 24.95 www.iuniverse.com

Farida Sharan; The Old Man and His Soul, Akshaya Prakashan New Delhi-52, (2010) pp. 149, Price RS. 180/-

A.D. Bhattacharya; Srimad Bhagvata-The Message Divine Akshaya Prakashan New Delhi (2010) New Delhi-52, pp. 200, Price Rs. 250/-

Aruna Sitesh; The spirit of Ram Charitmanas Akshay Prakashan New Delhi, (2009), New Delhi-52, pp.281, Price Rs. 300/-

Dr. Abdul Haq : Combined Dictionary English-Urdu, Urdu-English, Star Publications, New Delhi-110002, pp. 1262, Price Rs. 545/-

RNI No. 72478/99

सांस्कृतिक गौरव संस्थान के प्रकाशन

	पुस्तक का नाम	मूल्य
	श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा द्वारा लिखित पुस्तकें	
1.	**विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति**	95.00
2.	**स्मृतियों में भारतीय जीवन पद्धति**	90.00
	श्री पुरुषोत्तम द्वारा लिखित पुस्तकें	
3.	**इस्लाम के सैनिक**	20.00
4.	**मुस्लिम राजनीतिक चिंतन और आकांक्षाएं**	30.00
5.	**तालिबान इस्लाम और शान्ति**	25.00
6.	**भारत में पाकिस्तान की आइ.एस.आई. की घातक गतिविधियां**	15.00
	लेखक.: कर्नल श्याम कुमार,अनुवाद:डॉ. युद्धवीर सिंह	
7.	**हमारे मूल कर्तव्य**	80.00
	लेखक : डॉ. विजयनारायण मणि त्रिपाठी	
8.	**भारत में सेक्युलर राजनीति**	60.00
9.	**हिन्दुत्व के स्वर : सत्य के दर्पण में**	75.00
	लेखक : डॉ. कैलाश चन्द्र	
10.	**राम वन गमन स्थल : *डॉ. राम अवतार शर्मा***	25.00
11.	**हिन्दुस्थान में मदरसे : *श्री देवेन्द्र कुमार मित्तल***	120.00
12.	**गीतापदार्थकोष**	175.00
	ले. महात्मा गाँधी जी एवं डॉ. योगेन्द्र पाल आनन्द	
13.	**The Nefarious Activities of Pak's I.S.I.**	15.00
	लेखक : कर्नल श्याम कुमार	
	श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल द्वारा रचित पुस्तकें	
14.	**Minorities and Social Justice: Problems&Policy Options**	20.00
15.	**The Glory that is Hindutva**	10.00
16.	Striving for progress of self destruction	10.00
17.	And You shall be set free (हिन्दी-अंग्रेजी)	20.00

अन्य प्रकाशन

1.	The Call Eternal (The Thrill in Living) -B.P.Singhal	395.00
2.	छद्म सेक्यूलरवादियों और इस्लाम का असली चेहरा *: श्री कृष्णस्वामी*	15.00
3.	हिन्दू नाम-तथ्य और सत्य *: स्वामी विज्ञानानंद*	20.00
4.	क्या हिन्दू मिट जाएगा *: श्री सच्चिदानंद चतुर्वेदी*	90.00
5.	राष्ट्रवाद और भारतीय इतिहास का विकृतिकरण *: डॉ. नवरतन एस. राजाराम*	15.00
6.	ईसाइयत का भारत को निगलने का कुचक्र *: डॉ. नवरतन एस. राजाराम*	10.00
7.	आधुनिक युग में इस्लाम : भ्रम और सच *: डैविड फ्राउले (वामदेव शास्त्री)*	10.00
8.	हिन्दुत्व और राष्ट्रोत्थान *: डैविड फ्राउले (वामदेव शास्त्री)*	10.00
9.	सफेद चोला काला दिल *: श्री मोहन जोशी*	40.00
10.	Secularism Betrayed Secularism distorted Hypocrisy of Secularism *: Sh. Anandshankar Pandya*	70.00
11.	Muhammad and the rise of Islam *: Sh.D.S.Margoliouth*	60.00
12.	Select Hindu name : *Sh. Hari Babu Kansal*	90.00
13.	Imperialist Character of Islam : *Sh. P.R.Kundu*	20.00
14.	Vandematrum Album : *Mrs. Padma Sundaram*	75.00
15.	Don't say we didn't warn you great thinkers on Islam *: Rana Pratap Roy*	60.00
16.	Muslim Politics in Secular India : Hamid Dalwai	60.00
17.	The real patriots of Hindustan *- Dr. Madhuri Madhok & Dr. R.N.Gupta*	30.00

श्री अनवर शेख द्वारा रचित पुस्तकें :-

इस्लाम : कामवासना और हिंसा (हिन्दी अनुवाद)	100.00
इस्लाम-अरब साम्राज्यवाद	60.00
जिहाद के प्रलोभन : सैक्स और लूट	10.00
यहूदी, इसाइयत और इस्लाम	80.00
Why Muslims Destroy Hindu Temples	10.00
Islam, Sex & Violence	85.00
Islam	15.00
Islam The Arab Imperialism	90.00
Quran	25.00
Islam & Terrorism	195.00

श्री जयदीप सेन द्वारा रचित पुस्तकें :-

भारत में जिहाद	15.00
Jihad in India	25.00

श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा द्वारा रचित पुस्तकें :-

भारतीय इतिहास का विकृतिकरण	60.00

श्री कृष्णवल्लभ पालिवाल द्वारा रचित पुस्तकें :-

जिहाद और गैर मुसलमान	10.00
हिन्दू जागरण -क्यों और कैसे ?	60.00
आओ राष्ट्र रक्षा में जुट जाएं	2.00
भारतीय महापुरुषों की दृष्टि में इस्लाम	25.00
जिहादियों को जन्नत-केवल कियामत बाद	20.00
मैक्समूलर द्वारा वेदों का विकृतिकरण : क्या, क्यों और कैसे	40.00
जिहाद - क्या और क्यों	30.00
Challenges before the Hindus	20.00
Two faces of Jihad	20.00
The meaning of Jihad	10.00
Max Muller- A Secular Christian Missionary & Distorter of Vedas	20.00
Jannat - A miracle for Muslims	5.00
Jehad in the way of Allah	30.00
Jehad and Jannat in Hadiths	30.00
Eminent Indians on Islam	40.00
India heading towards an Islamic state	5.00
Islamisation of India by the sufies	15.00

श्री पुरुषोत्तम द्वारा रचित पुस्तकें :-

भारतीय मुलसमानों के हिन्दू पूर्वज मुसलमान कैसे बने	25.00
सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण	10.00
भारत के इस्लामीकरण के चार चरण	100.00

बुक-पोस्ट

सेवा में,

____

____

____

____

____

प्रेषक : सांस्कृतिक गौरव संस्थान

संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्,

नई दिल्ली-110 022